भृगु पत्रिका

Sample Horoscope

भृगु पत्रिका एक बृहत गणना एवं फलादेश का ज्योतिष मॉडल है। इसमें ज्योतिषीय गणनाएं, फलादेश व उपाय जैसे रत्न, रुद्राक्ष, मंत्र एवं दान आदि सहित 250 पेज से अधिक की रिपोर्ट तैयार होती है। साथ ही इसमें अंक ज्योतिष, लाल किताब फलादेश, एस्ट्रोग्राफ एवं योग भी दिये गए हैं। इसमें पाराशर, जैमिनी एवं कृष्णमूर्ति पद्धति की गणनाओं के साथ 5 प्रकार की दशा जैसे विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी, कालचक्र, चर दशाएं एवं विंमशोत्तरी दशा का सूक्ष्म विवरण भी दिया गया है। इसमें पितृदोष, साढ़ेसाती एवं काल सर्प दोष का उपाय सहित विवरण है।

इसमें गोचर सहित 20 साल का फलादेश व 2 साल का मासिक फलादेश तथा महादशा एवं अन्तर्दशा का फल भी दिया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें जीवनके महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे स्वास्थ्य, वित्त, व्यवसाय, शिक्षा एवं परिवार आदि के फलादेश भी उपलब्ध हैं।

SrNo: 101-111-105-1030 / 283 Date: 18/04/2017

Sample Horoscope

02 Mar 1986

07:50 AM

Delhi

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। लियो स्टार द्वारा बनाए जाने वाले जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

फ्यूचर पॉइंट कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए फ्यूचर पॉइंट उत्तरदायी नहीं है।

Sample Horoscope

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**02/03/1986**
दिन	रविवार
जन्म समय	**07:50:00 घंटे**
इष्ट	02:40:02 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:28:52 घंटे
वेलान्तर	-00:12:16 घंटे
साम्पातिक काल	18:07:13 घंटे
सूर्योदय	06:45:59 घंटे
सूर्यास्त	18:21:09 घंटे
दिनमान	11:35:11 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	17:32:34 कुम्भ
लग्न के अंश	08:54:43 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मीन - गुरु
राशि-स्वामी	**तुला - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**विशाखा - 3**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	व्याघात
करण	वणिज
गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ते-तेजवन्त
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम :
पिता का नाम :
माता का नाम :
जाति :
गोत्र :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	फाल्गुन	11
पंजाबी	संवत : 2042	फाल्गुन	19
बंगाली	सन् : 1392	फाल्गुन	18
तमिल	संवत : 2042	मासी	18
केरल	कोल्लम : 1161	कुंभम	18
नेपाली	संवत : 2042	फाल्गुन	19
चैत्रादि	संवत : 2042	फाल्गुन	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2042	माघ	कृष्ण 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि	: 6
तिथि समाप्ति काल	: 08:55:19
जन्म तिथि	: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: विशाखा
नक्षत्र समाप्ति काल	: 15:15:51 घंटे
जन्म योग	: विशाखा
सूर्योदय कालीन योग	: व्याघात
योग समाप्ति काल	: 18:39:38 घंटे
जन्म योग	: व्याघात
सूर्योदय कालीन करण	: वणिज
करण समाप्ति काल	: 08:55:19 घंटे
जन्म करण	: वणिज
भयात	: 37:50:05
भभोग	: 56:24:42
भोग्य दशा काल	: गुरु 5 वर्ष 3 मा 5 दि

घात चक्र

मास	: माघ
तिथि	: 4-9-14
दिन	: गुरुवार
नक्षत्र	: शतभिषा
योग	: शुक्ल
करण	: तैतिल
प्रहर	: 4
वर्ग	: गरुड़
लग्न	: कन्या
सूर्य	: कन्या
चन्द्र	: धनु
मंगल	: तुला
बुध	: कर्क
गुरु	: वृश्चिक
शुक्र	: धनु
शनि	: सिंह
राहु	: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

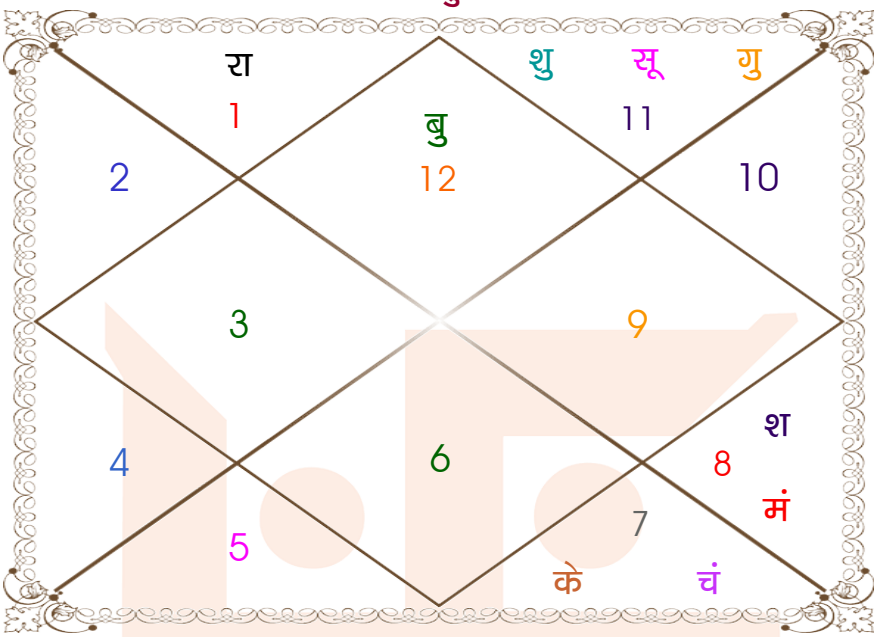

चन्द्र कुंडली

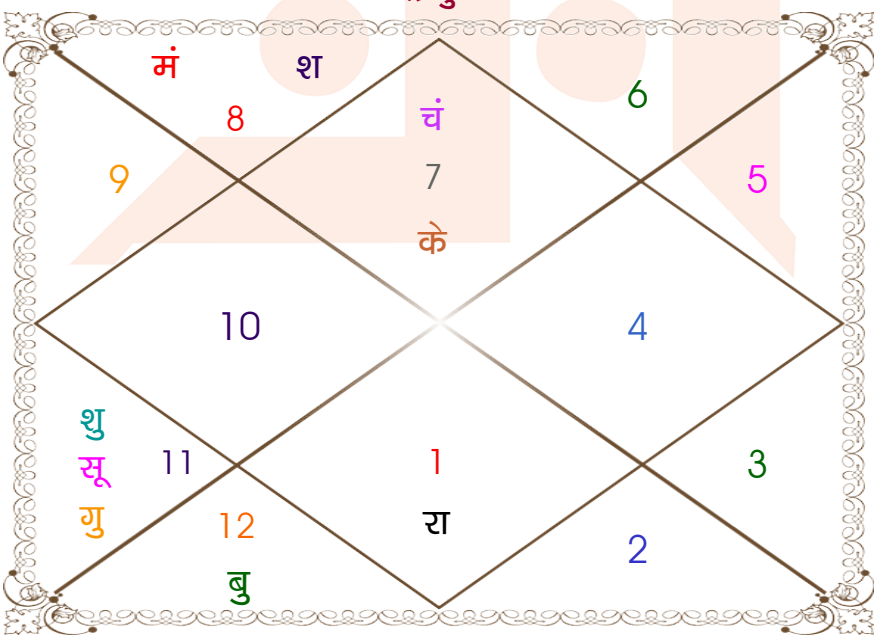

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

लग्न कुंडली

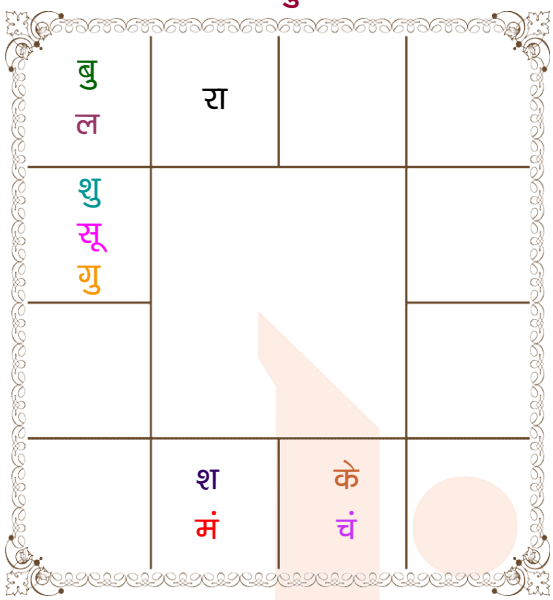

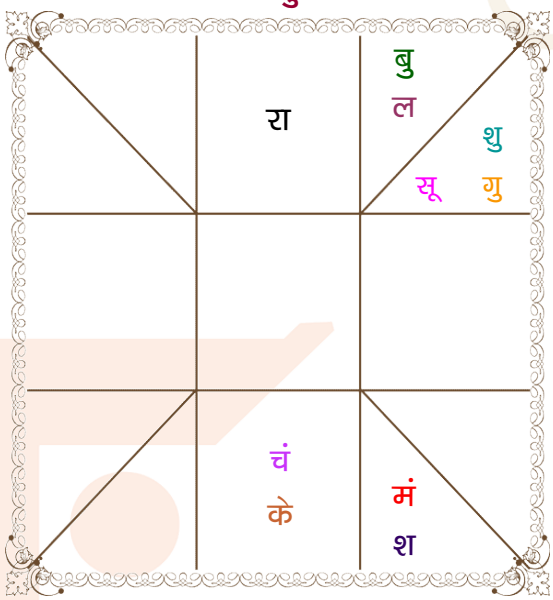

विंशोत्तरी
गुरु 5वर्ष 3मा 5दि
गुरु

02/03/1986
07/06/2095

गुरु	07/06/1991
शनि	07/06/2010
बुध	07/06/2027
केतु	07/06/2034
शुक्र	07/06/2054
सूर्य	06/06/2060
चन्द्र	07/06/2070
मंगल	07/06/2077
राहु	07/06/2095

योगिनी
धान्या 0वर्ष 11मा 25दि
मंगला

25/02/2017
25/02/2018

मंगला	07/03/2017
पिंगला	27/03/2017
धान्या	27/04/2017
भ्रामरी	06/06/2017
भद्रिका	27/07/2017
उल्का	26/09/2017
सिद्धा	06/12/2017
संकटा	25/02/2018

एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोनः- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

गणना

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	08:54:43	515:16:13	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	---
सूर्य			कुंभ	17:32:34	01:00:12	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	सूर्य	शत्रु राशि
चंद्र			तुला	28:56:43	14:10:40	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	सम राशि
मंगल			वृश्चि	22:23:13	00:33:35	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	स्वराशि
बुध			मीन	05:28:27	00:47:56	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	नीच राशि
गुरु		अ	कुंभ	08:35:54	00:14:20	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	सम राशि
शुक्र			कुंभ	27:33:03	01:14:52	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
शनि			वृश्चि	15:47:25	00:01:45	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मेष	07:27:15	00:01:15	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	राहु	शत्रु राशि
केतु			तुला	07:27:15	00:01:15	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	सम राशि
हर्ष			वृश्चि	28:25:38	00:01:20	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
नेप			धनु	11:46:57	00:01:11	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
प्लूटो	व		तुला	13:34:09	00:00:44	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	---
दशम भाव			धनु	07:59:31	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:41

लग्न-चलित

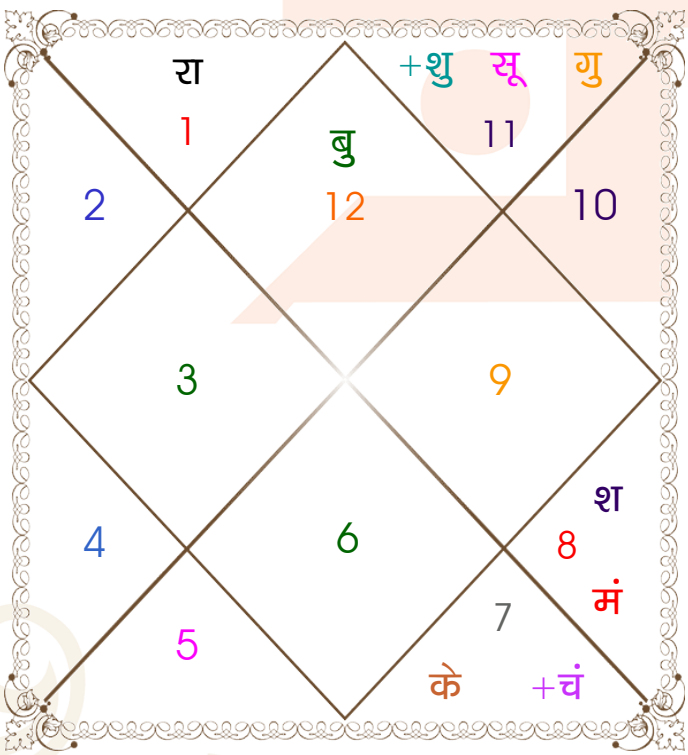

चन्द्र कुंडली

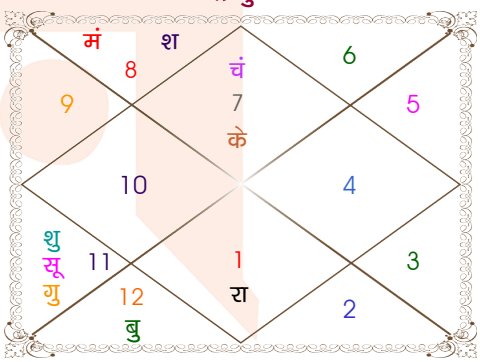

नवमांश कुंडली

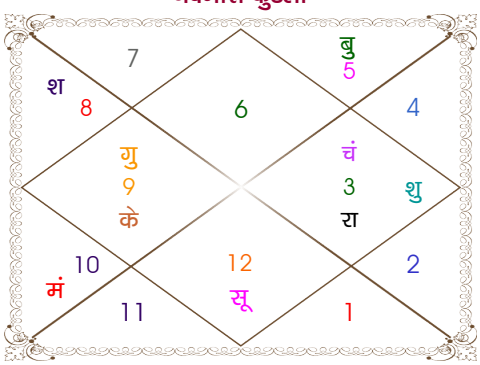

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	23:45:31	मीन	08:54:43
2	मीन	23:45:31	मेष	08:36:19
3	मेष	23:27:07	वृष	08:17:55
4	वृष	23:08:43	मिथुन	07:59:31
5	मिथुन	23:08:43	कर्क	08:17:55
6	कर्क	23:27:07	सिंह	08:36:19
7	सिंह	23:45:31	कन्या	08:54:43
8	कन्या	23:45:31	तुला	08:36:19
9	तुला	23:27:07	वृश्चिक	08:17:55
10	वृश्चिक	23:08:43	धनु	07:59:31
11	धनु	23:08:43	मकर	08:17:55
12	मकर	23:27:07	कुम्भ	08:36:19

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	08:54:43
2	मेष	16:02:55
3	वृष	14:05:20
4	मिथुन	07:59:31
5	कर्क	02:07:21
6	सिंह	00:52:41
7	कन्या	08:54:43
8	तुला	16:02:55
9	वृश्चिक	14:05:20
10	धनु	07:59:31
11	मकर	02:07:21
12	कुम्भ	00:52:41

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली

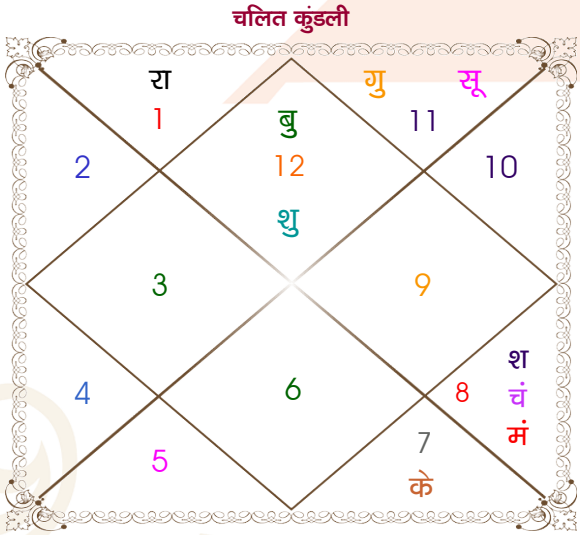

भाव कुंडली

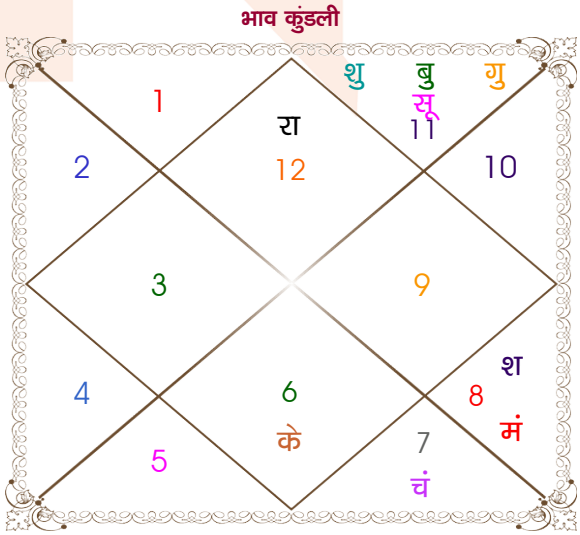

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	युवा	खल	आगमन	7.09	19 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	मृत	निपीदित	आगमन	0.10	47 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	कुमार	स्वस्थ	निद्रा	4.77	15 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	मृत	भीत	नृत्यलिप्सा	0.32	49 %
गुरु	ज्ञाति	धन	कुमार	विकल	आगमन	0.00	21 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	मृत	मुदित	निद्रा	8.92	67 %
शनि	पुत्र	आयु	युवा	खल	शयन	1.71	39 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	आगमन	0.00	7 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	निपीदित	नेत्रपाणि	0.00	7 %
कुल						22.91	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली

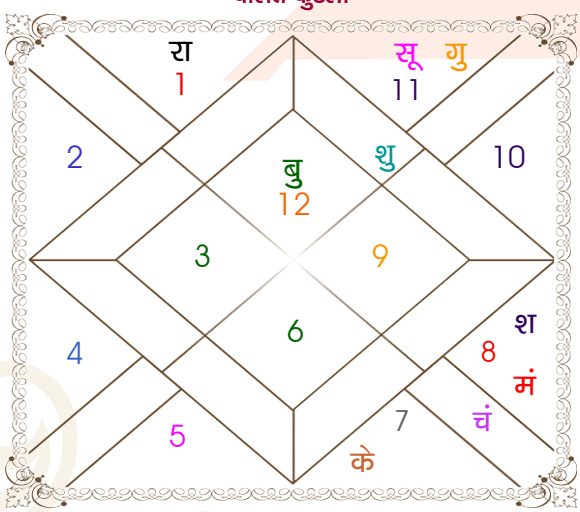

लग्न-चलित

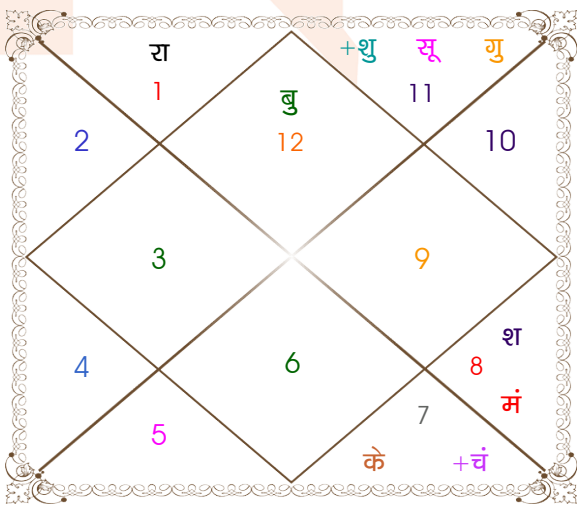

सुदर्शन चक्र

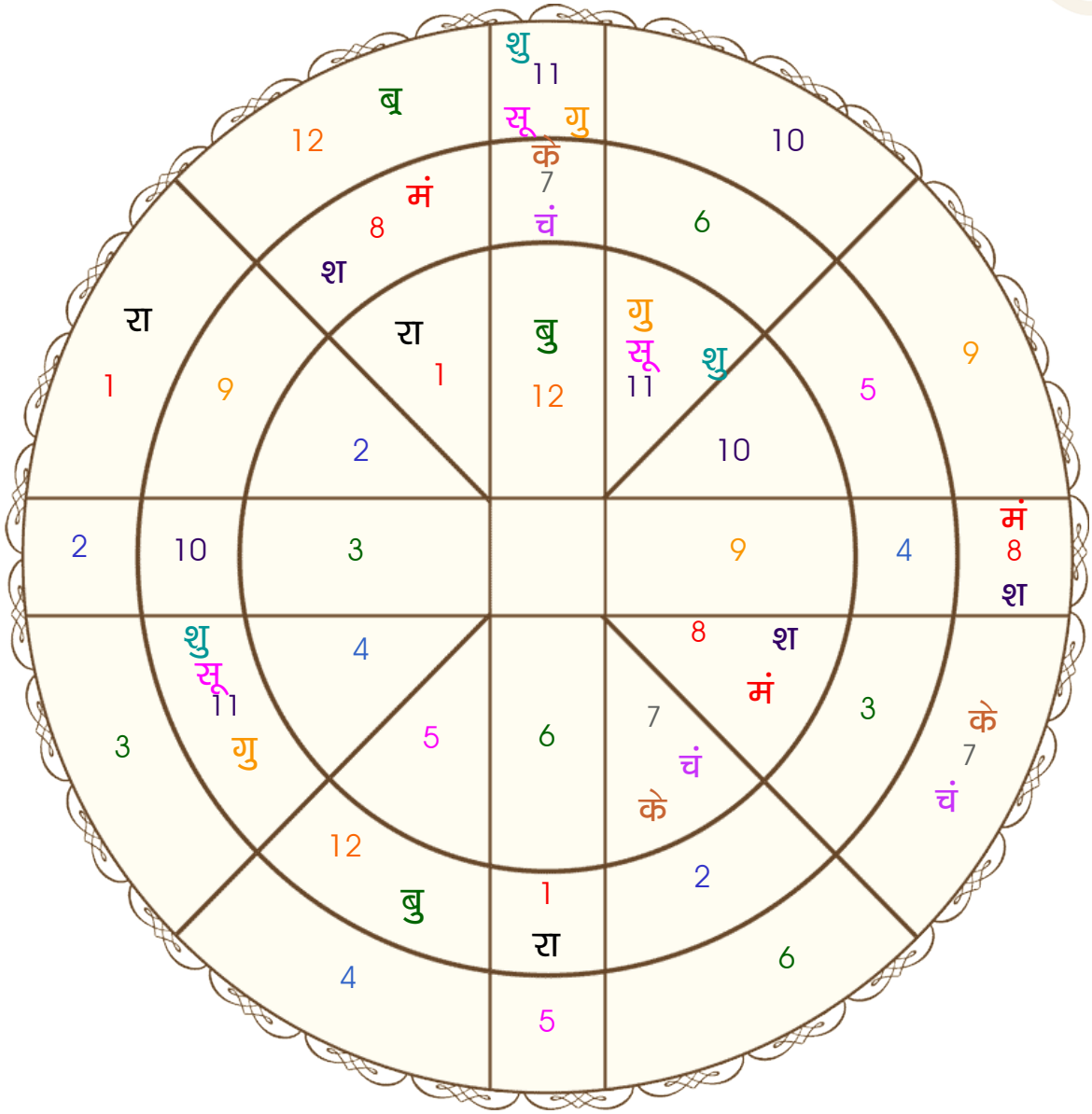

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

इन पृष्ठों में ज्योतिष की कृष्णमूर्ति पद्धति से संबंधित आपके सभी आवश्यक विवरण दिए गए हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति भारतीय ज्योतिष एवं पाश्चात्य ज्योतिष का मिश्रण है जिसमें ज्योतिष के सभी महत्वपूर्ण शाखाओं से महत्वपूर्ण सिद्धांत लिए गए हैं। वर्तमान समय में यह ज्योतिष की सर्वाधिक सटीक एवं विशुद्ध पद्धति मानी जाती है जिसे सीखना तथा लागू करना बेहद आसान है। हिंदू शास्त्रीय ज्योतिष के विपरीत कृष्णमूर्ति पद्धति क्रमबद्ध एवं अच्छी तरह से परिभाषित है। कृष्णमूर्ति पद्धति के लाभ हुइ समें इस पद्धति से संबंधित आंकड़े यथा कस्पल चार्ट, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप स्वामी, उप उप स्वामी सभी ग्रहों के दिए गए हैं साथ ही निरयण भाव, भावों के कारक, कारक ग्रह आदि भी सम्मिलित किए गए हैं। इतना ही नहीं, इसमें दृष्टि युति, भाव मध्य आदि भी शुद्ध गणना के साथ दिए गए हैं।

भोग्य दशा काल : गुरु 5 वर्ष 1 मास 22 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	17:38:37	शनि	राहु	सूर्य	राहु
चंद्र		तुला	29:02:46	शुक्र	गुरु	सूर्य	गुरु
मंगल		वृश्चि	22:29:16	मंगल	बुध	चंद्र	राहु
बुध		मीन	05:34:30	गुरु	शनि	बुध	बुध
गुरु		कुंभ	08:41:57	शनि	राहु	गुरु	गुरु
शुक्र		कुंभ	27:39:06	शनि	गुरु	शुक्र	राहु
शनि		वृश्चि	15:53:28	मंगल	शनि	गुरु	शुक्र
राहु		मेष	07:33:18	मंगल	केतु	राहु	मंगल
केतु		तुला	07:33:18	शुक्र	राहु	राहु	बुध
हर्ष		वृश्चि	28:31:41	मंगल	बुध	शनि	केतु
नेप		धनु	11:53:00	गुरु	केतु	बुध	शुक्र
प्लूटो	व	तुला	13:40:11	शुक्र	राहु	बुध	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मीन	09:00:46	गुरु	शनि	शुक्र	राहु
2	मेष	16:08:58	मंगल	शुक्र	सूर्य	शुक्र
3	वृष	14:11:23	शुक्र	चंद्र	गुरु	शनि
4	मिथु	08:05:34	बुध	राहु	राहु	शुक्र
5	कर्क	02:13:23	चंद्र	गुरु	राहु	बुध
6	सिंह	00:58:44	सूर्य	केतु	शुक्र	शुक्र
7	कन्या	09:00:46	बुध	सूर्य	शुक्र	गुरु
8	तुला	16:08:58	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु
9	वृश्चि	14:11:23	मंगल	शनि	राहु	शुक्र
10	धनु	08:05:34	गुरु	केतु	गुरु	बुध
11	मक	02:13:23	शनि	सूर्य	गुरु	शुक्र
12	कुंभ	00:58:44	शनि	मंगल	बुध	मंगल

के.पी. अयनांश : 23:33:38

फॉरच्युना : वृश्चिक 20:24:55

लग्न कुंडली

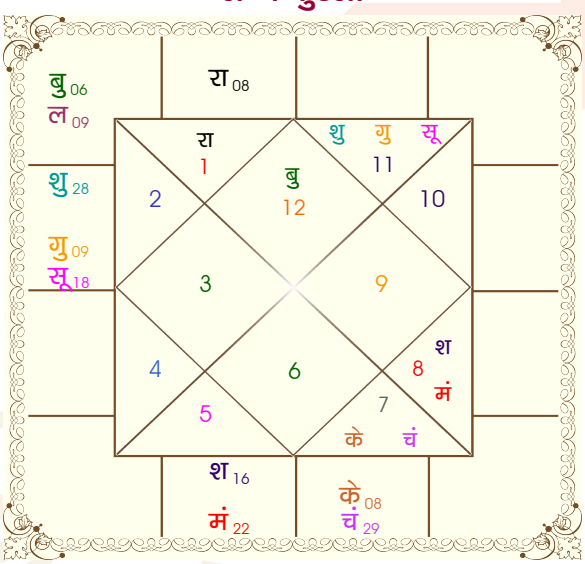

भाव कुंडली

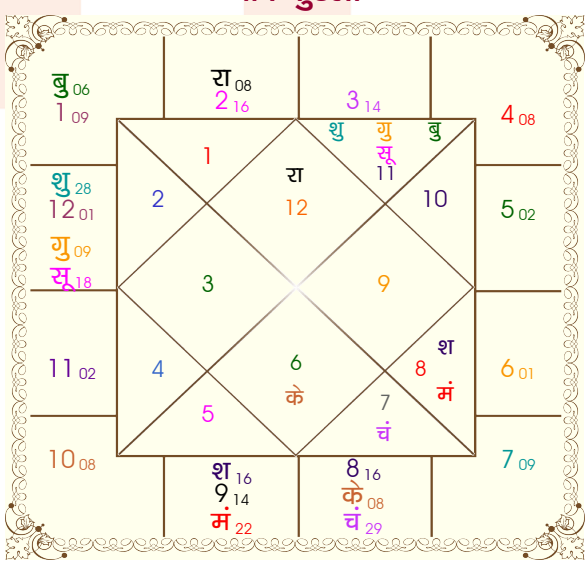

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र- गुरु+ शुक्र- राहु, केतु,
2	मंगल-
3	शुक्र-
4	मंगल- बुध-
5	चंद्र-
6	सूर्य-
7	मंगल- बुध- राहु, केतु,
8	चंद्र, शुक्र-
9	मंगल, बुध, शनि+
10	चंद्र- गुरु- शुक्र-
11	बुध- शनि,
12	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध+ गुरु, शुक्र+ शनि,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 6- 12,
चंद्र	1- 5- 8, 10- 12,
मंगल	2- 4- 7- 9, 12,
बुध	4- 7- 9, 11- 12+
गुरु	1+ 10- 12,
शुक्र	1- 3- 8- 10- 12+
शनि	9+ 11, 12,
राहु	1, 7,
केतु	1, 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	सूर्य

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	सू गु के	रा	चं शु	गु
2	--	--	--	मं
3	--	--	--	शु
4	--	--	मं	बु
5	--	--	--	चं
6	--	--	--	सू
7	रा	के	मं	बु
8	--	चं	--	शु
9	बु श	मं श	--	मं
10	--	--	चं शु	गु
11	--	--	बु श	श
12	चं मं शु	सू बु गु शु	बु श	श

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	6	7,11	कुम्भ	12
चंद्र	5	3	तुला	8
मंगल	2,9	12	वृश्चिक	9
बुध	4,7	---	मीन	12
गुरु	1,10	5	कुम्भ	12
शुक्र	3,8	2	कुम्भ	12
शनि	11,12	1,9	वृश्चिक	9
राहु	---	4,8	मेष	1
केतु	---	6,10	तुला	7

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	4,8	1	6	7,11	12
चंद्र	1,10	5	12	6	7,11	12
मंगल	4,7	---	12	5	3	8
बुध	11,12	1,9	9	4,7	---	12
गुरु	---	4,8	1	1,10	5	12
शुक्र	1,10	5	12	3,8	2	12
शनि	11,12	1,9	9	1,10	5	12
राहु	---	6,10	7	---	4,8	1
केतु	---	4,8	1	---	4,8	1

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	317.54	208.95	232.39	335.47	308.60	327.55	225.79	7.45	187.45	238.43	251.78	193.57
सूर्य	--	--	--	--	युति	युति	--	--	--	--	--	--
317.54	0.00	0.00	0.00	0.00	5.92	4.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--	--
208.95	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	--	--	4था	4था	4था	युति	अष्टां	--	युति	--	--
232.39	8.74	0.00	0.00	1.99	1.27	8.57	7.71	0.99	0.00	8.07	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--
335.47	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	युति	--	--	--	--	--	--	तृती	9वां	--	--	9वां
308.60	5.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.87	9.93	0.00	0.00	8.68
शुक्र	युति	--	--	युति	--	--	--	नवां	--	--	--	--
327.55	4.99	0.00	0.00	6.75	0.00	0.00	0.00	0.99	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	चतु	--	युति	--	--	--	--	--	--	युति	--	--
225.79	2.69	0.00	7.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.45	0.00	0.00
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	सप्त
7.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	8.02
केतु	--	--	अष्ट	--	पंच	--	--	सप्त	--	--	तृती	युति
187.45	0.00	0.00	0.99	0.00	2.87	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	1.27	8.02
हर्ष	--	--	युति	--	--	चतु	युति	--	--	--	युति	--
238.43	0.00	0.00	8.07	0.00	0.00	2.92	2.45	0.00	0.00	0.00	1.71	0.00
नेप	तृती	--	--	--	तृती	--	--	पंच	--	युति	--	--
251.78	0.19	0.00	0.00	0.00	2.02	0.00	0.00	1.27	0.00	1.71	0.00	0.00
प्लूटो	पंच	--	--	--	पंच	--	--	सप्त	युति	अष्ट	तृती	--
193.57	1.52	0.00	0.00	0.00	0.80	0.00	0.00	8.02	8.02	0.98	2.68	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	338.91	8.61	38.30	67.99	98.30	128.61	158.91	188.61	218.30	247.99	278.30	308.61
सूर्य	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
317.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.93
चंद्र	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--	--
208.95	0.00	0.00	5.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.57	0.07	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	8वां	--	--	--	--	युति	--	अष्ट	4था
232.39	0.00	0.00	0.00	0.63	0.00	0.00	0.00	0.00	0.95	0.00	0.14	1.27
बुध	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
335.47	9.36	0.00	2.22	0.00	2.22	0.00	9.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	तृती	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
308.60	0.00	3.00	2.99	9.98	0.00	10.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	10.00
शुक्र	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
327.55	3.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--
225.79	0.00	0.00	7.08	0.00	0.00	7.30	0.00	0.00	7.08	0.00	7.08	0.00
राहु	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	--	--	--	--	--
7.45	0.00	9.93	0.00	2.97	2.93	2.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच
187.45	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.93	0.00	2.97	2.93	2.86
हर्ष	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	नवां	--
238.43	0.00	0.00	0.00	5.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.98	0.00
नेप	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
251.78	2.19	2.02	0.00	9.22	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.22	0.00	2.02
प्लूटो	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--
193.57	0.00	8.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.68	0.00	0.33	0.57	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	338.91	16.05	44.09	67.99	92.12	120.88	158.91	196.05	224.09	247.99	272.12	300.88
सूर्य	--	तृती	चतु	--	अष्टां	--	--	--	--	--	--	--
317.54	0.00	2.77	1.85	0.00	0.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	नवां	तृती	चतु
208.95	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.18	0.00	0.07	2.02	2.62
मंगल	--	--	--	8वां	8वां	--	--	--	युति	--	नवां	--
232.39	0.00	0.00	0.00	0.63	5.24	0.00	0.00	0.00	6.46	0.00	0.91	0.00
बुध	युति	नवां	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
335.47	9.36	0.62	0.00	0.00	1.92	0.00	9.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	चतु	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति
308.60	0.00	0.00	0.40	9.98	0.00	6.91	0.00	7.11	0.00	0.00	0.00	6.91
शुक्र	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
327.55	3.72	0.00	0.00	0.00	1.10	0.00	3.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	षष्ठ	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--
225.79	0.00	0.92	9.84	0.00	0.00	0.09	0.00	0.00	9.84	0.00	1.39	0.00
राहु	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	--	--	--	--	--
7.45	0.00	6.22	0.00	2.97	0.52	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--
187.45	0.00	6.22	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.22	0.00	2.97	0.52	0.00
हर्ष	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	--	--	तृती
238.43	0.00	0.00	0.69	5.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.69	0.00	0.00	2.40
नेप	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
251.78	2.19	1.32	0.00	9.22	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.22	0.00	0.00
प्लूटो	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--
193.57	0.00	9.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.66	0.00	0.33	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

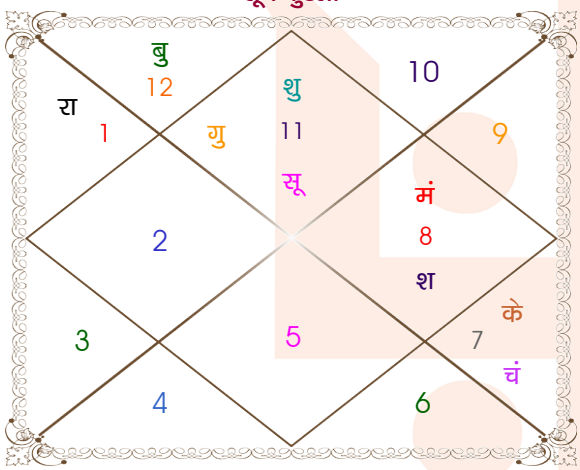

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

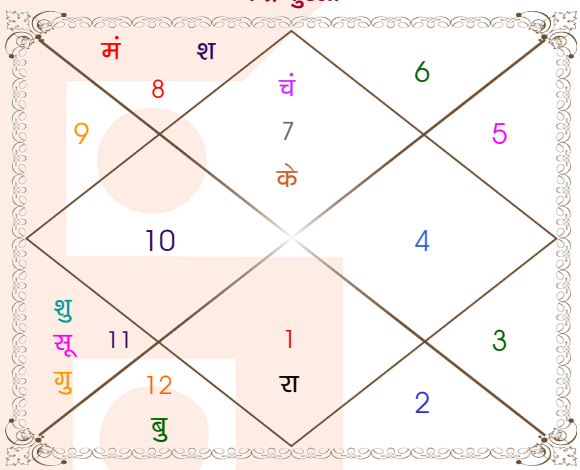

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

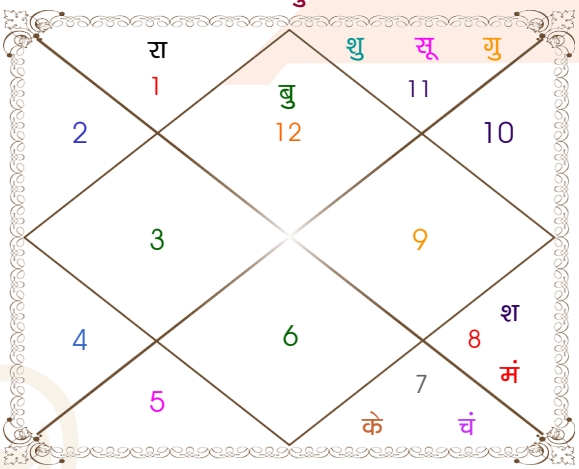

देह विचारः

होरा कुंडली

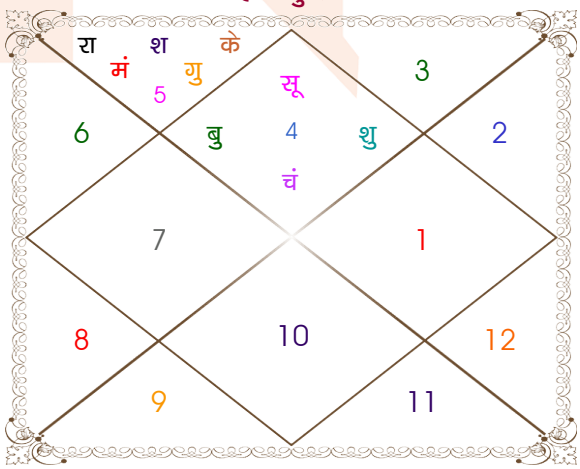

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

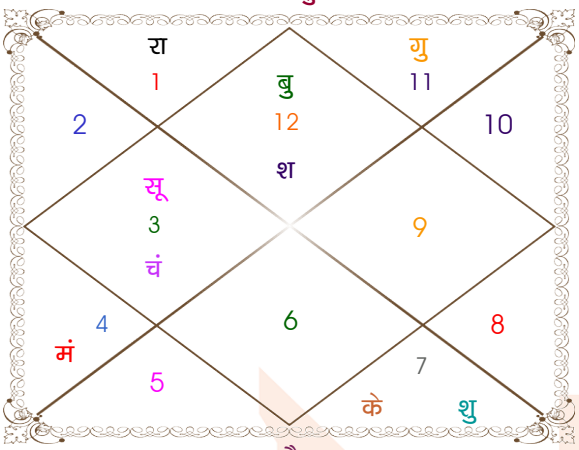

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

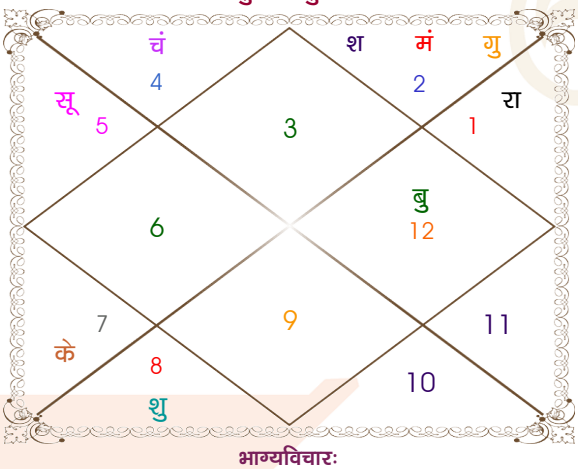

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

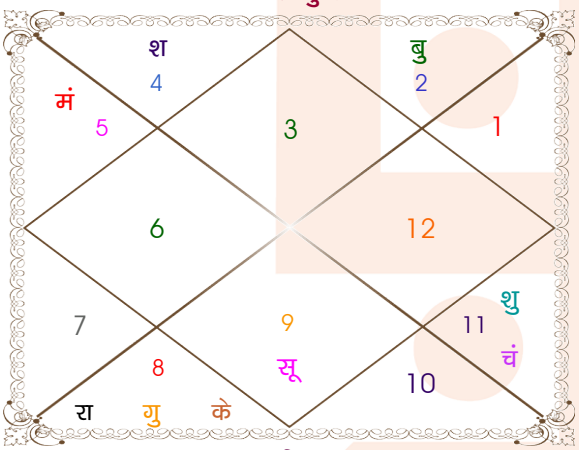

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

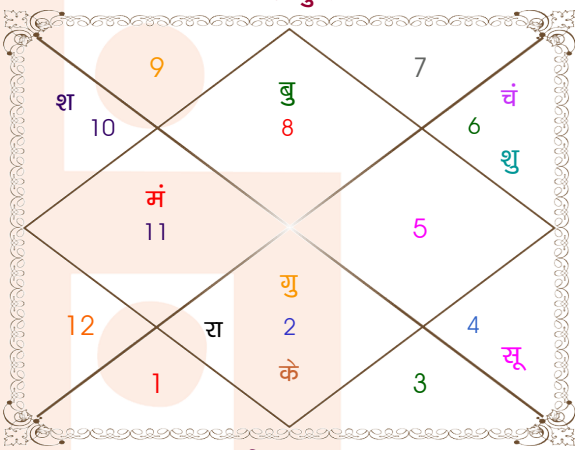

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

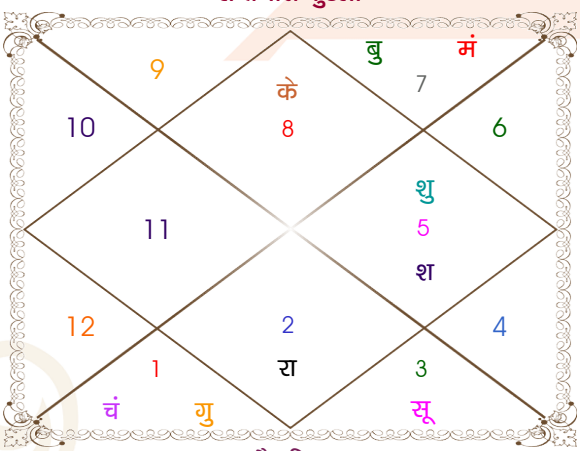

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

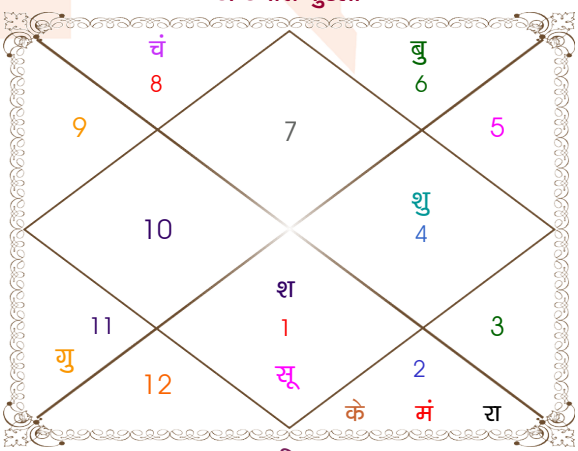

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

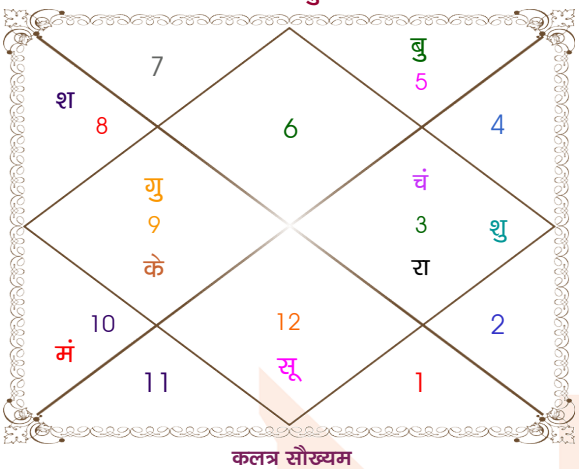

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

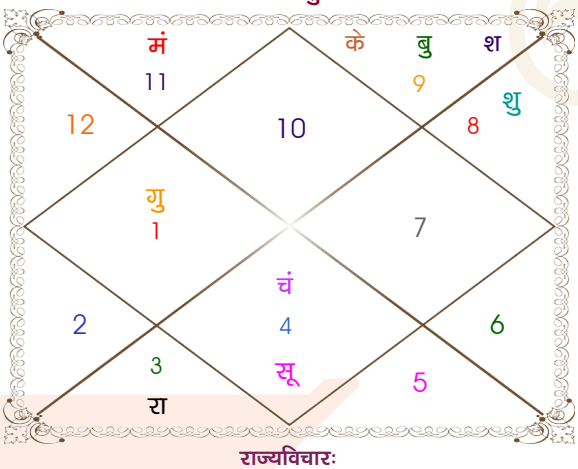

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

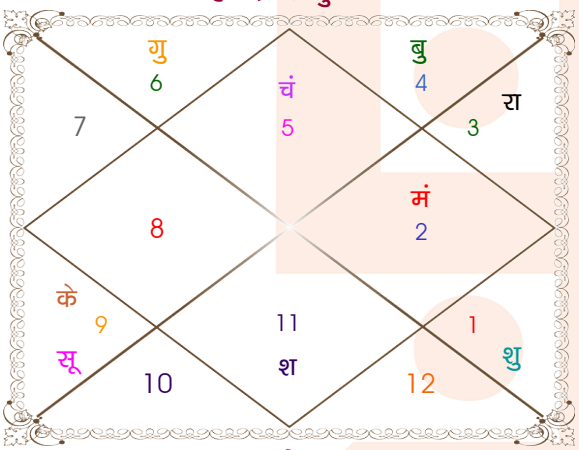

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

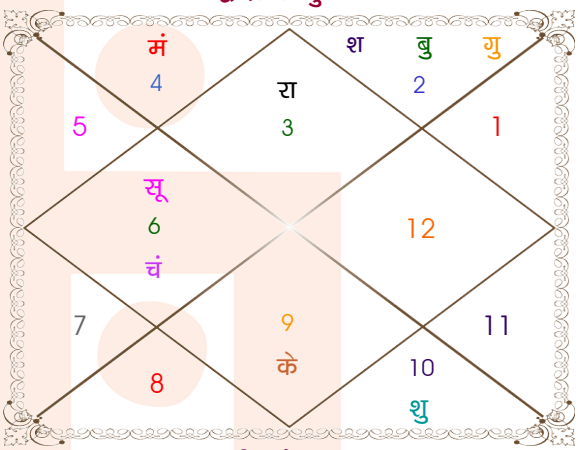

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

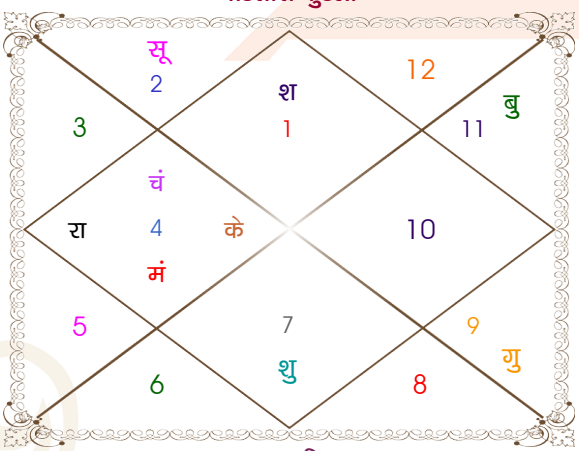

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

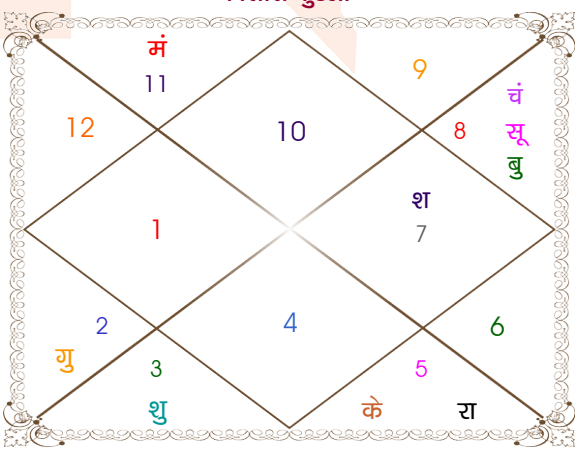

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

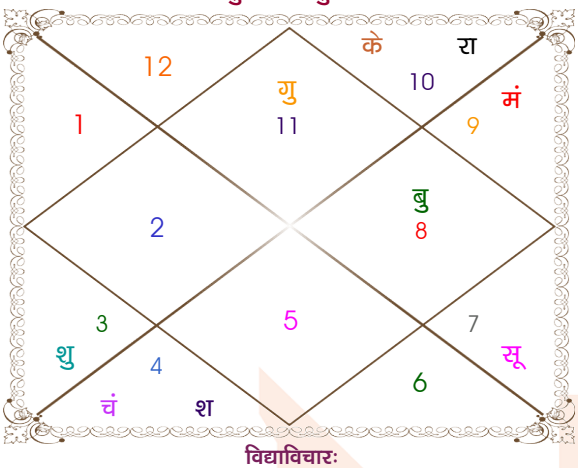

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

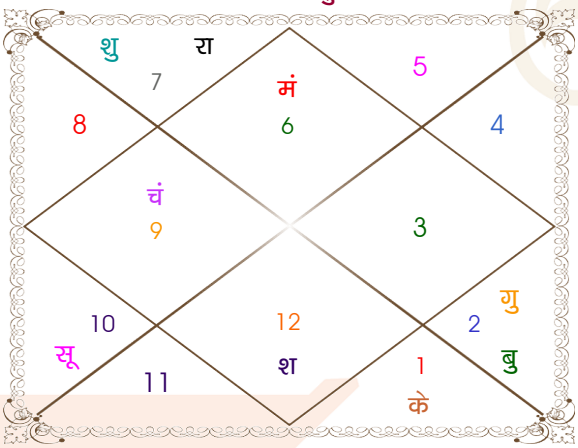

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

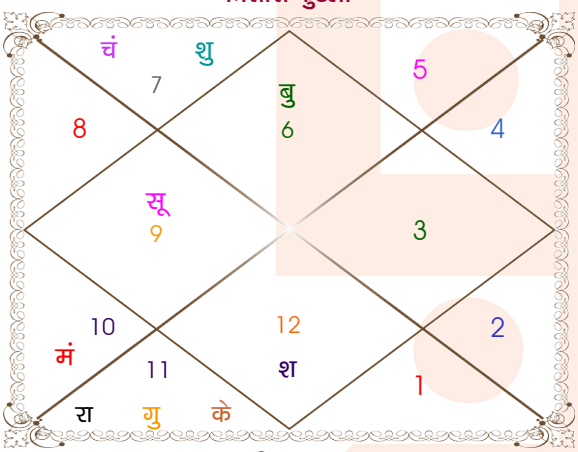

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

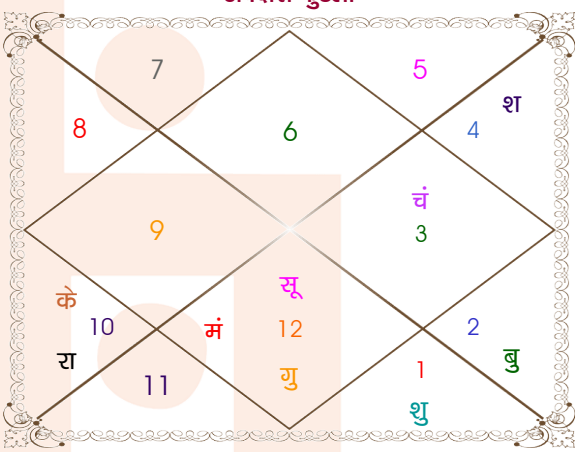

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

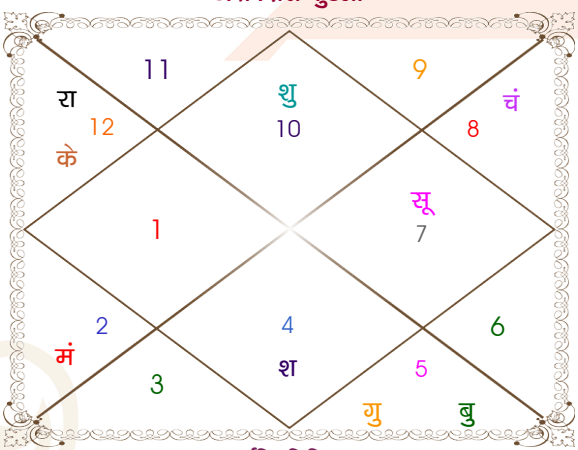

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

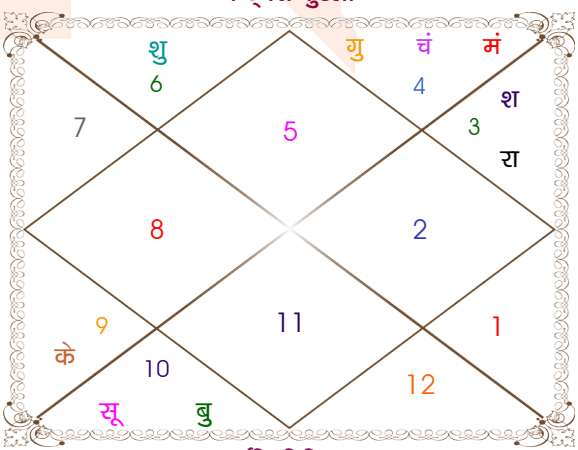

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मीन	कुंभ	तुला	वृश्चि	मीन	कुंभ	कुंभ	वृश्चि	मेष	तुला
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मीन	मिथु	मिथु	कर्क	मीन	कुंभ	तुला	मीन	मेष	तुला
चतुर्थांश	मिथु	सिंह	कर्क	वृष	मीन	वृष	वृश्चि	वृष	मेष	तुला
सप्तमांश	वृश्चि	मिथु	मेष	तुला	तुला	मेष	सिंह	सिंह	वृष	वृश्चि
नवमांश	कन्या	मीन	मिथु	मक	सिंह	धनु	मिथु	वृश्चि	मिथु	धनु
दशमांश	मक	कर्क	कर्क	कुंभ	धनु	मेष	वृश्चि	धनु	मिथु	धनु
द्वादशांश	मिथु	कन्या	कन्या	कर्क	वृष	वृष	मक	वृष	मिथु	धनु
षोडशांश	मेष	वृष	कर्क	कर्क	कुंभ	धनु	तुला	मेष	कर्क	कर्क
विंशांश	मक	वृश्चि	वृश्चि	कुंभ	वृश्चि	वृष	मिथु	तुला	सिंह	सिंह
चतुर्विंशांश	कुंभ	तुला	कर्क	धनु	वृश्चि	कुंभ	मिथु	कर्क	मक	मक
सप्तविंशांश	कन्या	मक	धनु	कन्या	वृष	वृष	तुला	मीन	तुला	मेष
त्रिंशांश	कन्या	धनु	तुला	मक	कन्या	कुंभ	तुला	मीन	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	कन्या	मीन	मिथु	मीन	वृष	मीन	मेष	कर्क	मक	मक
अक्षवेदांश	मक	तुला	वृश्चि	वृष	सिंह	सिंह	मक	कर्क	मीन	मीन
षष्ट्यंश	सिंह	मक	कर्क	कर्क	मक	कर्क	कन्या	मिथु	मिथु	धनु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
चन्द्र	1 ---	1 ---	4 गोपुर	6 केरल
मंगल	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	3 कुसुम
बुध	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
गुरु	1 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शनि	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	4 नागपुष्प
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	5 कन्दुक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	11.50	9.95	15.30	15.30	14.75	17.20	9.30	9.25	8.45
सप्तवर्ग	11.88	10.73	15.10	15.60	15.00	15.48	9.43	10.63	9.53
दशवर्ग	10.75	14.45	15.60	12.70	13.83	16.28	10.23	11.48	8.43
षोडशवर्ग	10.20	13.88	15.05	12.78	14.15	17.25	9.23	10.78	8.25

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

षड्बल और अष्टकवर्ग

जन्मकुंडली में ग्रहों एवं भावों के बिल्कुल सही बल को जानें।

किसी भी ग्रह के सही बल का निर्धारण भचक्र में उस ग्रह की स्थिति का विश्लेषण कर किया जाता है। ग्रहों की भिन्न-भिन्न स्थिति षड्बल के अलग-अलग शक्तियों को दर्शाते हैं। किसी ग्रह का बल अथवा उसकी कमजोरी का पता उसके षड्बल पर निर्भर करता है। षड्बल एवं भावबल सारणी को देखकर आप पता कर सकते हैं कि कौन सा ग्रह आपकी कुंडली में कितना मजबूत है। भावबल के द्वारा जन्मकुंडली के सभी 12 भावों के बल का ज्ञान होता है। इससे साफ निर्देश मिल जाता है कि जीवन के किस क्षेत्र में आप बलशाली हैं अथवा जीवन के किस पहलू में आपकी कमजोरी एवं असफलता छिपी हुई है।

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	43	1	38	3	11	50	51
सप्तवर्गज बल	75	75	120	129	107	131	71
ओजयुग्मक बल	15	0	0	15	30	0	0
केन्द्र बल	15	30	15	60	15	15	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	15	15	15
कुल स्थान बल	148	121	173	208	178	211	153
कुल दिग्बल	37	13	55	59	50	27	38
नतोन्नत बल	36	24	24	60	36	36	24
पक्ष बल	24	72	24	36	36	36	24
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	60	0
अयन बल	41	54	1	30	16	25	58
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	146	150	48	202	149	188	106
कुल चेष्टाबल	0	0	33	39	2	8	32
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-12	22	9	-16	-18	-16	10
कुल षट्बल	378	358	335	516	394	460	347
रूप षट्बल	6.3	6.0	5.6	8.6	6.6	7.7	5.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.0	1.1	1.2	1.0	1.4	1.2
संबंधित पद	2	7	5	3	6	1	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	31.77	6.99	35.50	11.11	4.70	19.41	40.57
कष्ट फल	25.18	37.36	24.28	34.63	53.21	22.70	15.51

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	394	335	460	516	358	378	516	460	335	394	347	347
भावदिग्बल	30	20	10	30	50	20	0	10	40	30	50	50
भावदृष्टि बल	-16	15	55	60	45	54	91	105	75	16	1	-18
कुल भाव बल	408	370	524	607	453	452	607	575	450	441	398	378
रूप भाव बल	6.8	6.2	8.7	10.1	7.5	7.5	10.1	9.6	7.5	7.3	6.6	6.3
संबंधित पद	9	12	4	2	5	6	1	3	7	8	10	11

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

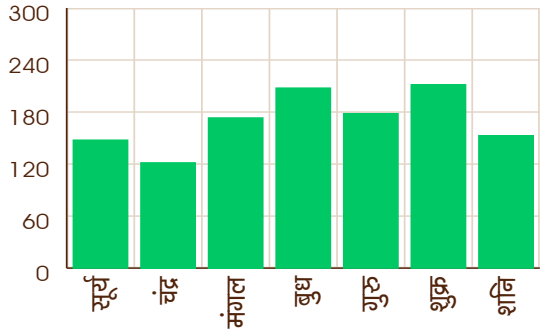

दिग्बल

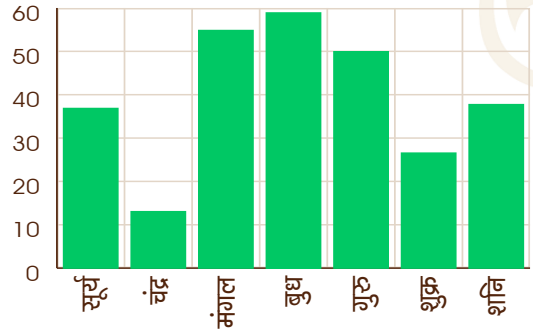

कालबल

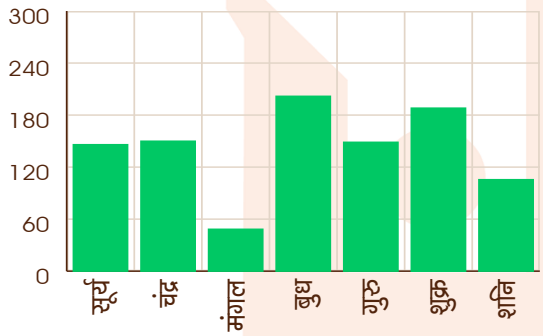

चेष्टाबल

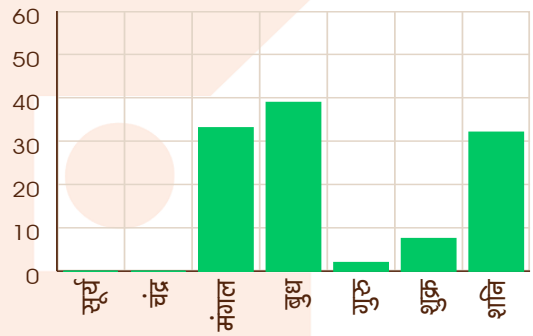

नैसर्गिक बल

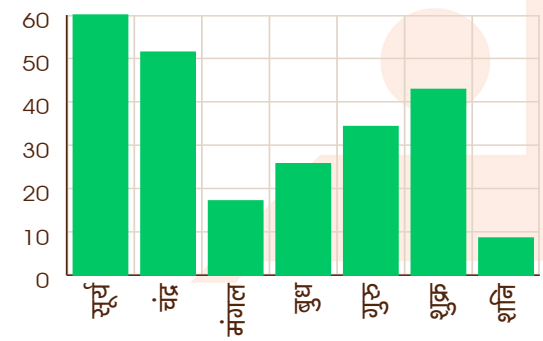

दृग्बल

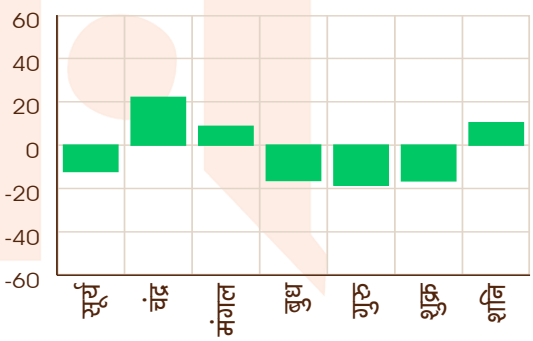

रूप षट्बल

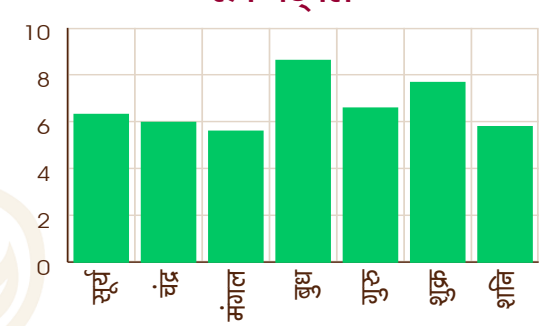

न्यूनतम षट्बल

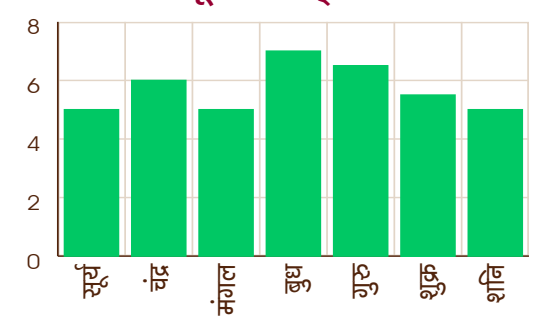

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

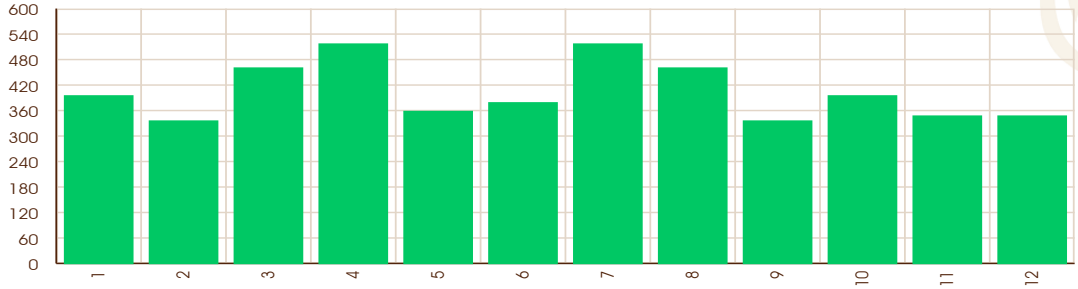

भावदिग्बल

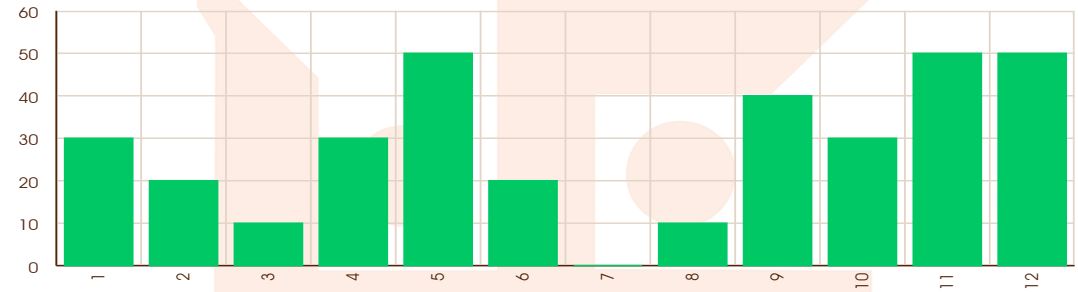

भावदृष्टि बल

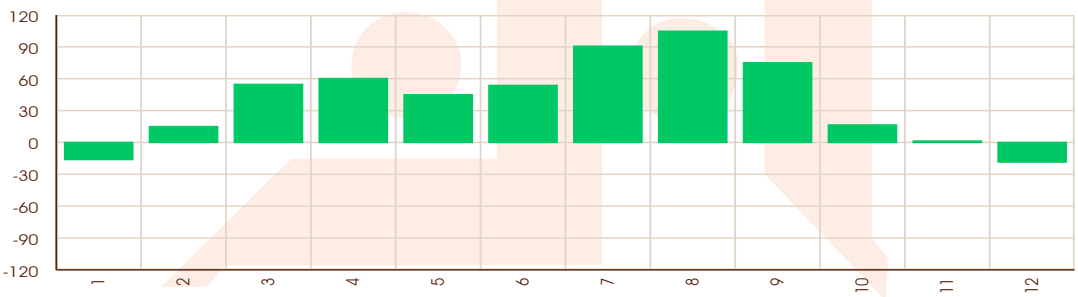

भाव बल

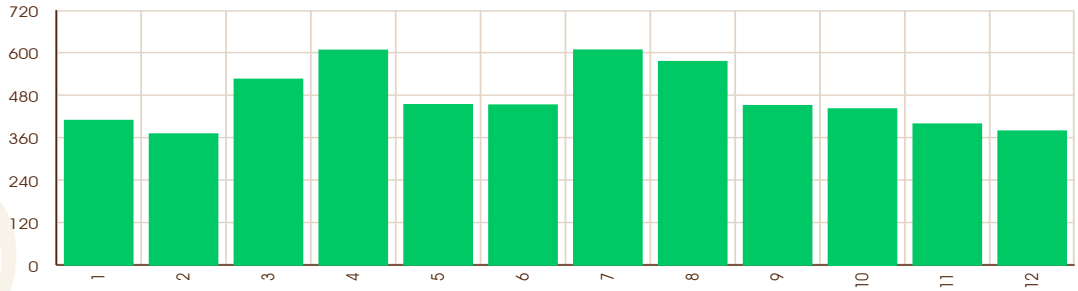

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

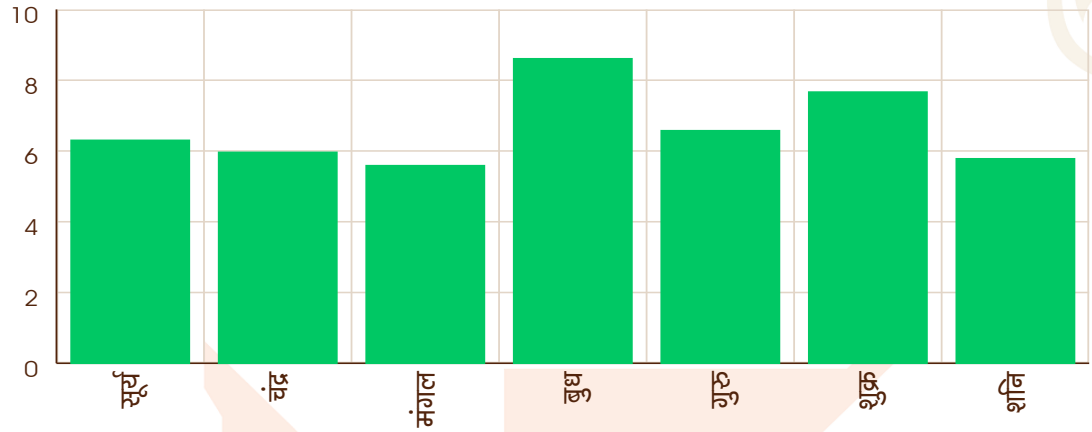

इष्ट - कष्ट फल

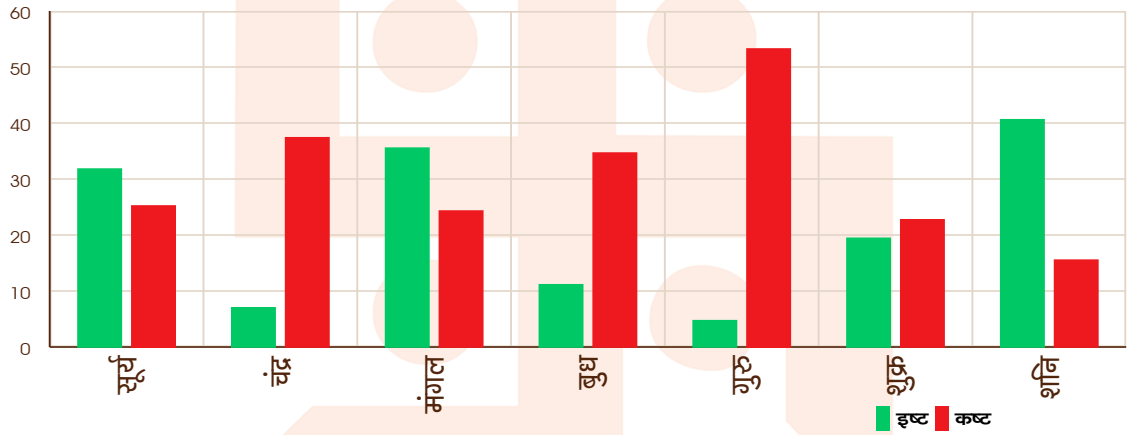

रूप भाव बल

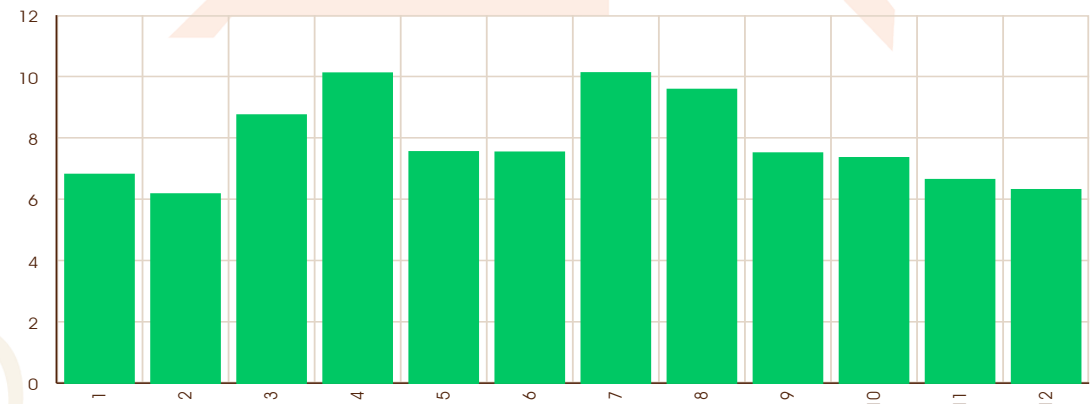

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मीन	08:54:43	--	--	उ०भाद्रपद	2	26
गुलिक	गु	कर्क	29:53:12	--	--	आश्लेषा	4	9
काल	का	मीन	17:25:11	--	--	रेवती	1	27
मृत्यु	मृ	वृष	11:51:32	--	--	रोहिणी	1	4
यमघंटक	यम	मिथु	22:40:22	--	--	पुनर्वसु	1	7
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	03:25:20	--	मूल	मृगशिरा	4	5
धूम	धू	कर्क	00:52:34	--	--	पुनर्वसु	4	7
व्यतिपात	व्य	धनु	29:07:26	--	--	उत्तराषाढ़ा	1	21
परिवेश	परि	मिथु	29:07:26	उच्च	--	पुनर्वसु	3	7
इन्द्रचाप	इ	मक	00:52:34	--	--	उत्तराषाढ़ा	2	21
उपकेतु	उप	मक	17:32:34	--	--	श्रवण	3	22

प्राणपद	:	कन्या	07:36:41	कारकाँश लग्न	:	मिथु	20:30:26
भाव लग्न	:	मीन	24:54:56	होरा लग्न	:	मेष	10:55:08
घटी लग्न	:	वृष	07:33:36	वर्णद लग्न	:	मेष	10:10:09

उपग्रह कुंडली

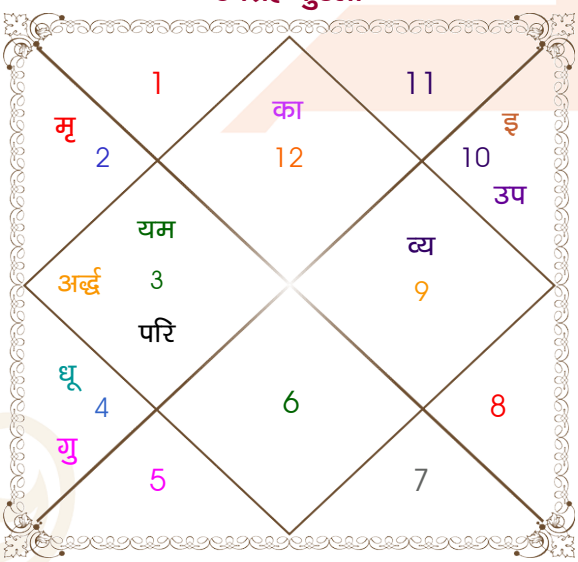

आरूढ़ कुंडली

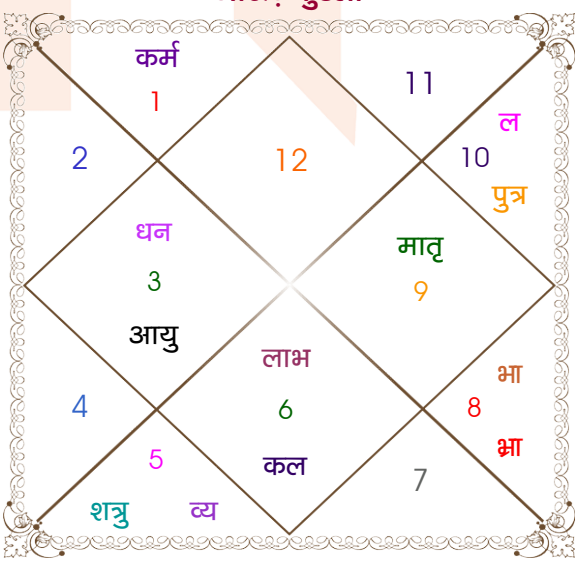

षन्नाडी चक्र

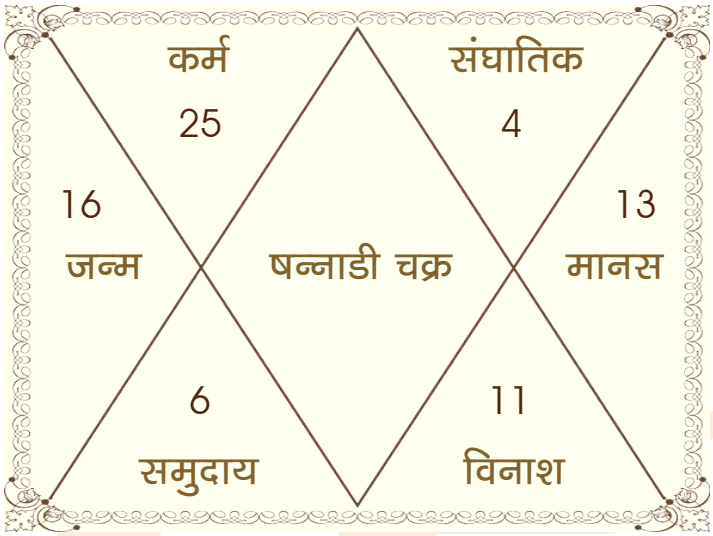

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	**5**	**2**	**0**	**5**	**4**	**6**	**7**	**3**	**2**	**4**	**7**	**3**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	कुल
शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
मंगल	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	6
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
कुल	**3**	**3**	**7**	**4**	**1**	**5**	**5**	**4**	**3**	**3**	**6**	**5**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	कुल
शनि	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	7
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
बुध	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
कुल	**4**	**6**	**4**	**2**	**2**	**1**	**4**	**3**	**5**	**5**	**3**	**0**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
कुल	**4**	**2**	**5**	**5**	**6**	**5**	**4**	**3**	**4**	**7**	**5**	**4**	**54**

गुरु का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	**4**	**6**	**6**	**3**	**5**	**3**	**6**	**4**	**3**	**7**	**6**	**3**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	**4**	**3**	**3**	**4**	**5**	**4**	**3**	**6**	**5**	**5**	**4**	**6**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
बुध	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	6
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	**2**	**6**	**6**	**2**	**5**	**2**	**2**	**2**	**2**	**5**	**3**	**2**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**4**	**5**	**4**	**3**	**3**	**6**	**4**	**3**	**4**	**5**	**5**	**3**	**49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	2	2	2	5	3	2	2	6	6	2	5	39
गुरु	6	3	5	3	6	4	3	7	6	3	4	6	56
मंगल	1	4	3	5	5	3	0	4	6	4	2	2	39
सूर्य	0	5	4	6	7	3	2	4	7	3	5	2	48
शुक्र	3	4	5	4	3	6	5	5	4	6	4	3	52
बुध	2	5	5	6	5	4	3	4	7	5	4	4	54
चंद्र	5	4	3	3	6	5	3	3	7	4	1	5	49
बिन्दु	19	27	27	29	37	28	18	29	43	31	22	27	337
रेखा	37	29	29	27	19	28	38	27	13	25	34	29	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	3	1	0	0	4	4	0	3	15
गुरु	0	0	2	0	0	1	0	4	0	0	1	3	11
मंगल	0	1	3	3	4	0	0	2	5	1	2	0	21
सूर्य	0	2	2	4	7	0	0	2	7	0	3	0	27
शुक्र	0	0	1	1	0	2	1	2	1	2	0	0	10
बुध	0	1	2	2	3	0	0	0	5	1	1	0	15
चंद्र	0	0	2	0	1	1	2	0	2	0	0	2	10
रेखा	0	4	12	10	18	5	3	10	24	8	7	8	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	3	1	0	0	1	4	0	3	12
गुरु	0	0	1	0	0	1	0	4	0	0	1	3	10
मंगल	0	1	3	3	4	0	0	2	5	0	2	0	20
सूर्य	0	2	2	4	7	0	0	2	7	0	3	0	27
शुक्र	0	0	1	1	0	1	1	2	1	2	0	0	9
बुध	0	1	2	2	3	0	0	0	5	0	1	0	14
चंद्र	0	0	1	0	1	1	2	0	0	0	0	2	7
रेखा	0	4	10	10	18	4	3	10	19	6	7	8	99

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	234	61	169	120	92	59	100
ग्रह पिंड	92	20	70	22	89	31	15
शोध्य पिंड	326	81	239	142	181	90	115

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

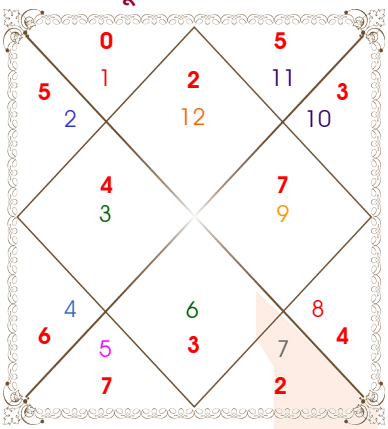

सर्वाष्टकवर्ग

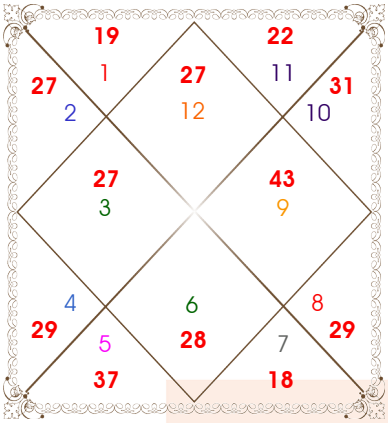

चंद्र का अष्टकवर्ग

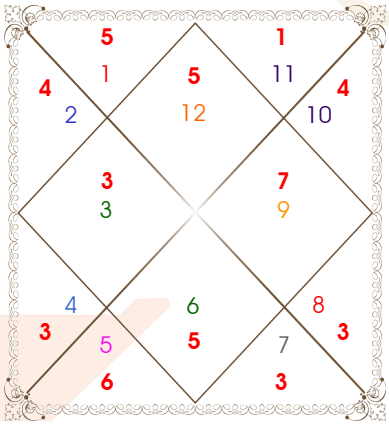

मंगल का अष्टकवर्ग

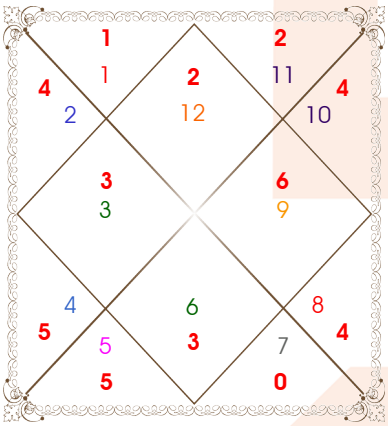

बुध का अष्टकवर्ग

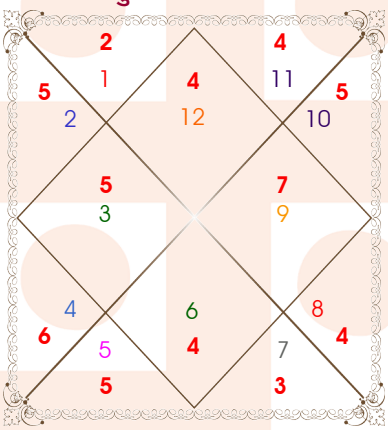

गुरु का अष्टकवर्ग

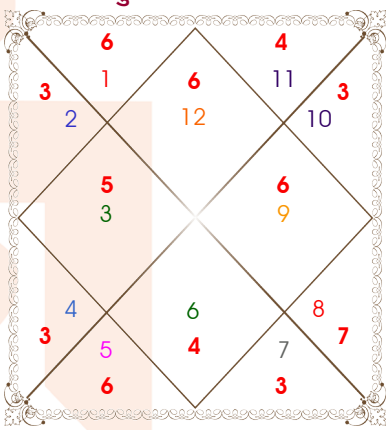

शुक्र का अष्टकवर्ग

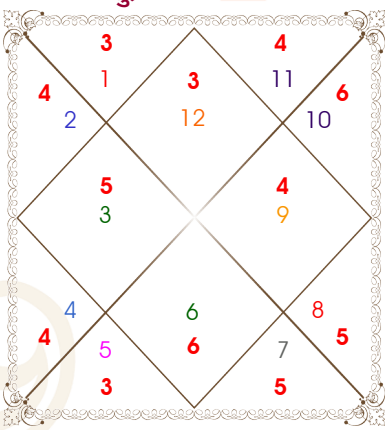

शनि का अष्टकवर्ग

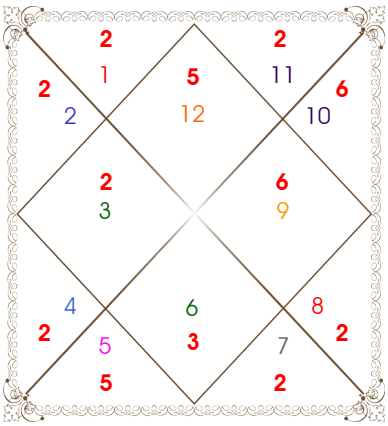

लग्न का अष्टकवर्ग

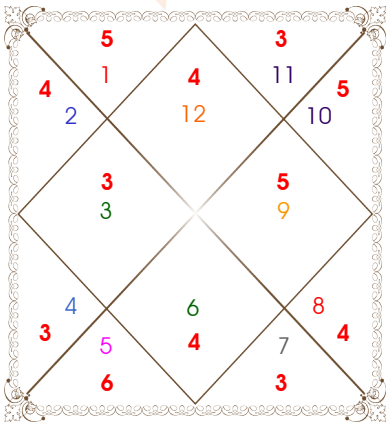

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

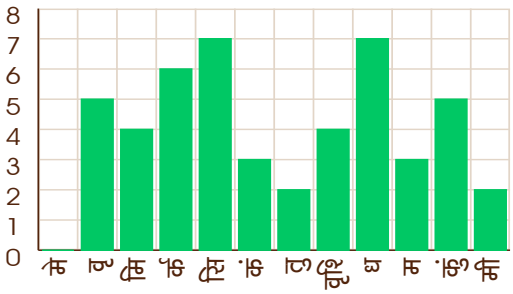

चन्द्र

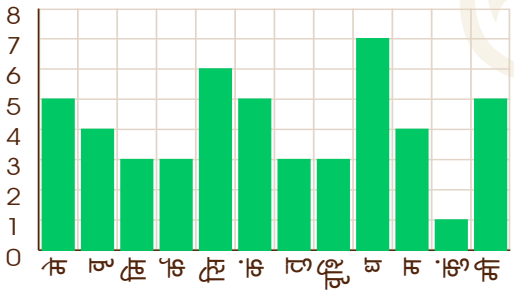

मंगल

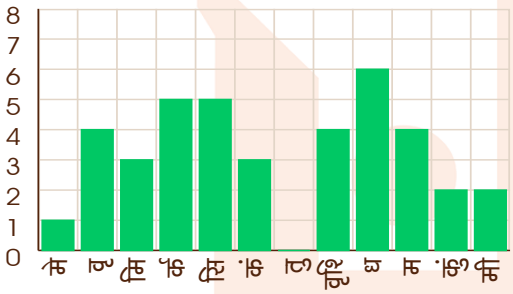

बुध

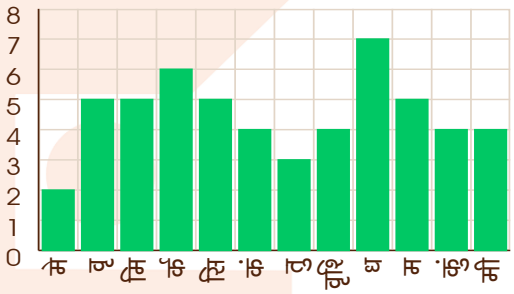

गुरु

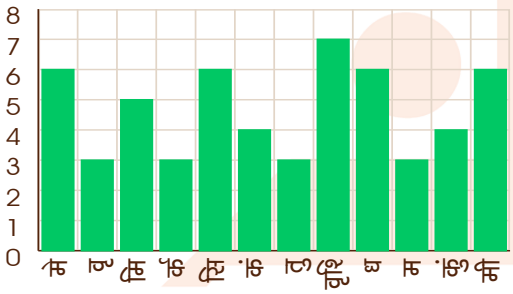

शुक्र

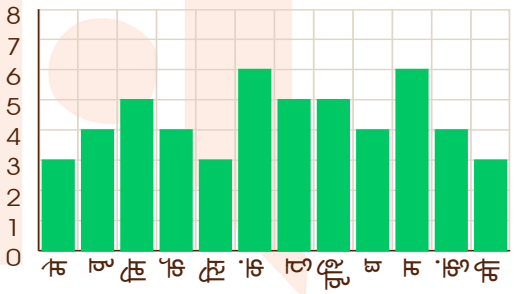

शनि

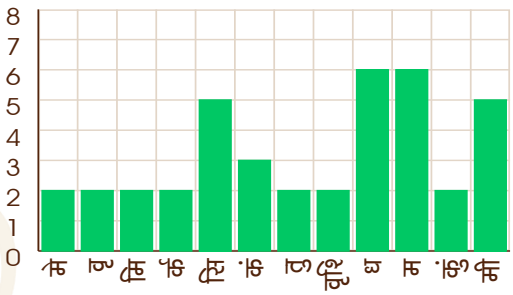

लग्न

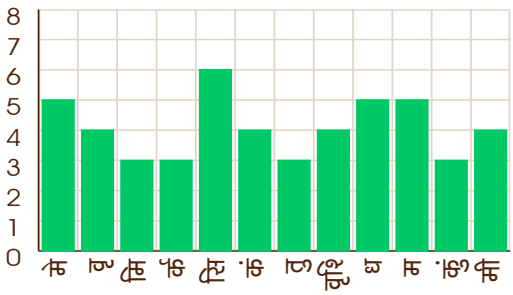

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

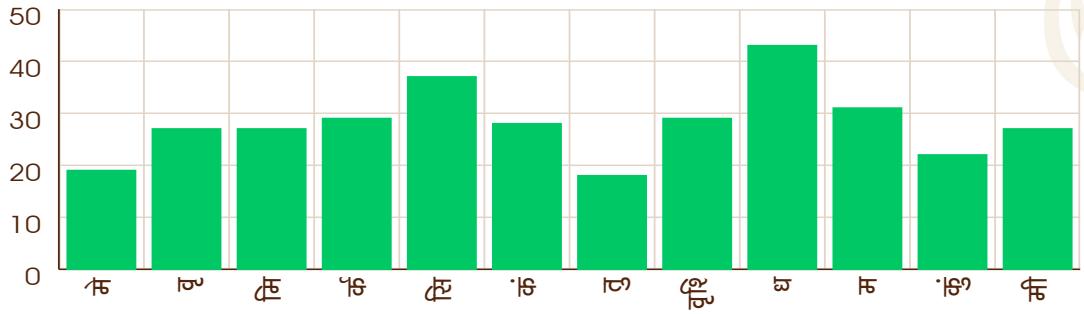

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकव

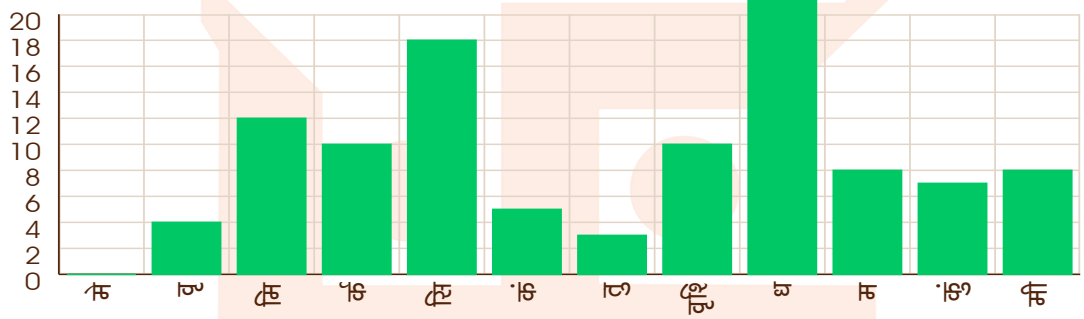

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

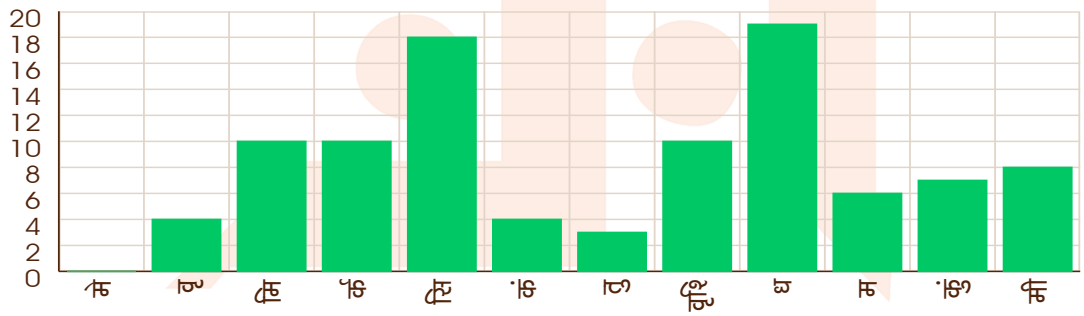

शोध्य पिंड

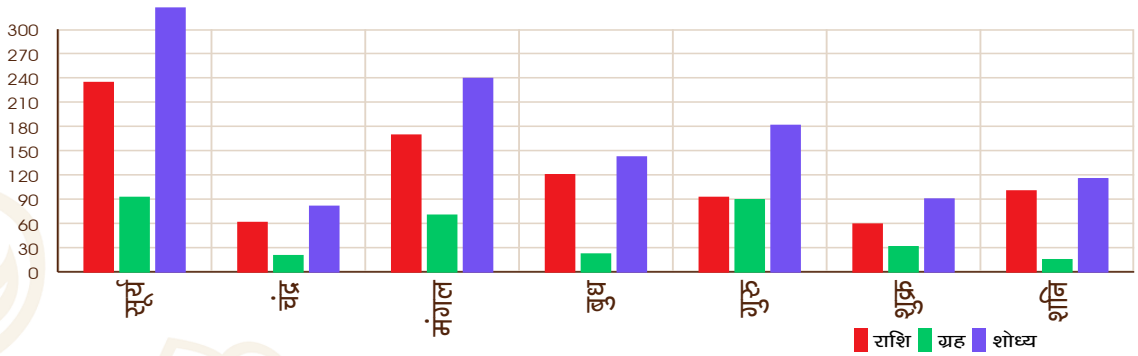

दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी या बुरी दशाओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे-बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा-अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्यान्य समस्याओं, पीड़ा जनित कष्ट, बाधा, असफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 5 वर्ष 3 मास 5 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
02/03/1986		07/06/1991		07/06/2010		07/06/2027		07/06/2034	
07/06/1991		07/06/2010		07/06/2027		07/06/2034		07/06/2054	
	00/00/0000	शनि	10/06/1994	बुध	03/11/2012	केतु	03/11/2027	शुक्र	06/10/2037
	00/00/0000	बुध	17/02/1997	केतु	31/10/2013	शुक्र	02/01/2029	सूर्य	07/10/2038
	00/00/0000	केतु	29/03/1998	शुक्र	31/08/2016	सूर्य	10/05/2029	चंद्र	06/06/2040
	00/00/0000	शुक्र	28/05/2001	सूर्य	07/07/2017	चंद्र	09/12/2029	मंगल	06/08/2041
	02/03/1986	सूर्य	10/05/2002	चंद्र	06/12/2018	मंगल	07/05/2030	राहु	06/08/2044
सूर्य	07/10/1986	चंद्र	10/12/2003	मंगल	04/12/2019	राहु	26/05/2031	गुरु	07/04/2047
चंद्र	06/02/1988	मंगल	18/01/2005	राहु	22/06/2022	गुरु	01/05/2032	शनि	07/06/2050
मंगल	12/01/1989	राहु	25/11/2007	गुरु	27/09/2024	शनि	10/06/2033	बुध	07/04/2053
राहु	07/06/1991	गुरु	07/06/2010	शनि	07/06/2027	बुध	07/06/2034	केतु	07/06/2054

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
07/06/2054		06/06/2060		07/06/2070		07/06/2077		07/06/2095	
06/06/2060		07/06/2070		07/06/2077		07/06/2095		00/00/0000	
सूर्य	24/09/2054	चंद्र	07/04/2061	मंगल	03/11/2070	राहु	18/02/2080	गुरु	25/07/2097
चंद्र	26/03/2055	मंगल	06/11/2061	राहु	22/11/2071	गुरु	13/07/2082	शनि	06/02/2100
मंगल	01/08/2055	राहु	08/05/2063	गुरु	27/10/2072	शनि	19/05/2085	बुध	15/05/2102
राहु	25/06/2056	गुरु	06/09/2064	शनि	06/12/2073	बुध	07/12/2087	केतु	20/04/2103
गुरु	13/04/2057	शनि	07/04/2066	बुध	03/12/2074	केतु	24/12/2088	शुक्र	19/12/2105
शनि	26/03/2058	बुध	06/09/2067	केतु	02/05/2075	शुक्र	25/12/2091	सूर्य	03/03/2106
बुध	30/01/2059	केतु	06/04/2068	शुक्र	01/07/2076	सूर्य	18/11/2092		00/00/0000
केतु	07/06/2059	शुक्र	06/12/2069	सूर्य	06/11/2076	चंद्र	20/05/2094		00/00/0000
शुक्र	06/06/2060	सूर्य	07/06/2070	चंद्र	07/06/2077	मंगल	07/06/2095		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 5 वर्ष 3 मा 7 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
02/03/1986		07/10/1986		06/02/1988		12/01/1989		07/06/1991	
07/10/1986		06/02/1988		12/01/1989		07/06/1991		10/06/1994	
	00/00/0000	चंद्र	16/11/1986	मंगल	26/02/1988	राहु	23/05/1989	शनि	28/11/1991
	00/00/0000	मंगल	15/12/1986	राहु	17/04/1988	गुरु	17/09/1989	बुध	02/05/1992
	02/03/1986	राहु	26/02/1987	गुरु	01/06/1988	शनि	03/02/1990	केतु	05/07/1992
राहु	28/03/1986	गुरु	02/05/1987	शनि	25/07/1988	बुध	07/06/1990	शुक्र	04/01/1993
गुरु	06/05/1986	शनि	18/07/1987	बुध	11/09/1988	केतु	28/07/1990	सूर्य	28/02/1993
शनि	21/06/1986	बुध	25/09/1987	केतु	01/10/1988	शुक्र	21/12/1990	चंद्र	30/05/1993
बुध	02/08/1986	केतु	23/10/1987	शुक्र	27/11/1988	सूर्य	03/02/1991	मंगल	03/08/1993
केतु	19/08/1986	शुक्र	12/01/1988	सूर्य	14/12/1988	चंद्र	17/04/1991	राहु	14/01/1994
शुक्र	07/10/1986	सूर्य	06/02/1988	चंद्र	12/01/1989	मंगल	07/06/1991	गुरु	10/06/1994

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
10/06/1994		17/02/1997		29/03/1998		28/05/2001		10/05/2002	
17/02/1997		29/03/1998		28/05/2001		10/05/2002		10/12/2003	
बुध	27/10/1994	केतु	13/03/1997	शुक्र	08/10/1998	सूर्य	15/06/2001	चंद्र	28/06/2002
केतु	24/12/1994	शुक्र	19/05/1997	सूर्य	04/12/1998	चंद्र	14/07/2001	मंगल	31/07/2002
शुक्र	05/06/1995	सूर्य	08/06/1997	चंद्र	11/03/1999	मंगल	03/08/2001	राहु	26/10/2002
सूर्य	25/07/1995	चंद्र	12/07/1997	मंगल	17/05/1999	राहु	24/09/2001	गुरु	11/01/2003
चंद्र	14/10/1995	मंगल	05/08/1997	राहु	07/11/1999	गुरु	09/11/2001	शनि	13/04/2003
मंगल	11/12/1995	राहु	04/10/1997	गुरु	09/04/2000	शनि	03/01/2002	बुध	04/07/2003
राहु	06/05/1996	गुरु	27/11/1997	शनि	09/10/2000	बुध	21/02/2002	केतु	06/08/2003
गुरु	14/09/1996	शनि	31/01/1998	बुध	22/03/2001	केतु	14/03/2002	शुक्र	11/11/2003
शनि	17/02/1997	बुध	29/03/1998	केतु	28/05/2001	शुक्र	10/05/2002	सूर्य	10/12/2003

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
10/12/2003		18/01/2005		25/11/2007		07/06/2010		03/11/2012	
18/01/2005		25/11/2007		07/06/2010		03/11/2012		31/10/2013	
मंगल	02/01/2004	राहु	23/06/2005	गुरु	27/03/2008	बुध	09/10/2010	केतु	24/11/2012
राहु	03/03/2004	गुरु	09/11/2005	शनि	20/08/2008	केतु	30/11/2010	शुक्र	23/01/2013
गुरु	26/04/2004	शनि	22/04/2006	बुध	30/12/2008	शुक्र	25/04/2011	सूर्य	10/02/2013
शनि	29/06/2004	बुध	17/09/2006	केतु	22/02/2009	सूर्य	08/06/2011	चंद्र	12/03/2013
बुध	26/08/2004	केतु	17/11/2006	शुक्र	26/07/2009	चंद्र	21/08/2011	मंगल	02/04/2013
केतु	18/09/2004	शुक्र	09/05/2007	सूर्य	10/09/2009	मंगल	11/10/2011	राहु	27/05/2013
शुक्र	25/11/2004	सूर्य	30/06/2007	चंद्र	26/11/2009	राहु	20/02/2012	गुरु	14/07/2013
सूर्य	15/12/2004	चंद्र	25/09/2007	मंगल	19/01/2010	गुरु	16/06/2012	शनि	09/09/2013
चंद्र	18/01/2005	मंगल	25/11/2007	राहु	07/06/2010	शनि	03/11/2012	बुध	31/10/2013

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र	
31/10/2013	
31/08/2016	
शुक्र	21/04/2014
सूर्य	12/06/2014
चंद्र	06/09/2014
मंगल	06/11/2014
राहु	10/04/2015
गुरु	26/08/2015
शनि	06/02/2016
बुध	01/07/2016
केतु	31/08/2016

बुध - सूर्य	
31/08/2016	
07/07/2017	
सूर्य	15/09/2016
चंद्र	11/10/2016
मंगल	29/10/2016
राहु	15/12/2016
गुरु	25/01/2017
शनि	15/03/2017
बुध	28/04/2017
केतु	16/05/2017
शुक्र	07/07/2017

बुध - चंद्र	
07/07/2017	
06/12/2018	
चंद्र	19/08/2017
मंगल	18/09/2017
राहु	05/12/2017
गुरु	12/02/2018
शनि	05/05/2018
बुध	17/07/2018
केतु	16/08/2018
शुक्र	11/11/2018
सूर्य	06/12/2018

बुध - मंगल	
06/12/2018	
04/12/2019	
मंगल	28/12/2018
राहु	20/02/2019
गुरु	09/04/2019
शनि	06/06/2019
बुध	27/07/2019
केतु	17/08/2019
शुक्र	16/10/2019
सूर्य	04/11/2019
चंद्र	04/12/2019

बुध - राहु	
04/12/2019	
22/06/2022	
राहु	21/04/2020
गुरु	24/08/2020
शनि	18/01/2021
बुध	30/05/2021
केतु	23/07/2021
शुक्र	26/12/2021
सूर्य	10/02/2022
चंद्र	29/04/2022
मंगल	22/06/2022

बुध - गुरु	
22/06/2022	
27/09/2024	
गुरु	10/10/2022
शनि	19/02/2023
बुध	16/06/2023
केतु	03/08/2023
शुक्र	19/12/2023
सूर्य	30/01/2024
चंद्र	08/04/2024
मंगल	26/05/2024
राहु	27/09/2024

बुध - शनि	
27/09/2024	
07/06/2027	
शनि	02/03/2025
बुध	19/07/2025
केतु	14/09/2025
शुक्र	25/02/2026
सूर्य	15/04/2026
चंद्र	06/07/2026
मंगल	02/09/2026
राहु	27/01/2027
गुरु	07/06/2027

केतु - केतु	
07/06/2027	
03/11/2027	
केतु	16/06/2027
शुक्र	11/07/2027
सूर्य	18/07/2027
चंद्र	31/07/2027
मंगल	08/08/2027
राहु	31/08/2027
गुरु	20/09/2027
शनि	13/10/2027
बुध	03/11/2027

केतु - शुक्र	
03/11/2027	
02/01/2029	
शुक्र	13/01/2028
सूर्य	04/02/2028
चंद्र	10/03/2028
मंगल	04/04/2028
राहु	07/06/2028
गुरु	03/08/2028
शनि	09/10/2028
बुध	09/12/2028
केतु	02/01/2029

केतु - सूर्य	
02/01/2029	
10/05/2029	
सूर्य	09/01/2029
चंद्र	19/01/2029
मंगल	27/01/2029
राहु	15/02/2029
गुरु	04/03/2029
शनि	24/03/2029
बुध	11/04/2029
केतु	19/04/2029
शुक्र	10/05/2029

केतु - चंद्र	
10/05/2029	
09/12/2029	
चंद्र	28/05/2029
मंगल	09/06/2029
राहु	11/07/2029
गुरु	09/08/2029
शनि	12/09/2029
बुध	12/10/2029
केतु	24/10/2029
शुक्र	29/11/2029
सूर्य	09/12/2029

केतु - मंगल	
09/12/2029	
07/05/2030	
मंगल	18/12/2029
राहु	09/01/2030
गुरु	29/01/2030
शनि	22/02/2030
बुध	15/03/2030
केतु	24/03/2030
शुक्र	18/04/2030
सूर्य	25/04/2030
चंद्र	07/05/2030

केतु - राहु	
07/05/2030	
26/05/2031	
राहु	04/07/2030
गुरु	24/08/2030
शनि	24/10/2030
बुध	17/12/2030
केतु	09/01/2031
शुक्र	13/03/2031
सूर्य	02/04/2031
चंद्र	04/05/2031
मंगल	26/05/2031

केतु - गुरु	
26/05/2031	
01/05/2032	
गुरु	10/07/2031
शनि	02/09/2031
बुध	21/10/2031
केतु	10/11/2031
शुक्र	05/01/2032
सूर्य	22/01/2032
चंद्र	20/02/2032
मंगल	11/03/2032
राहु	01/05/2032

केतु - शनि	
01/05/2032	
10/06/2033	
शनि	04/07/2032
बुध	30/08/2032
केतु	23/09/2032
शुक्र	29/11/2032
सूर्य	20/12/2032
चंद्र	22/01/2033
मंगल	15/02/2033
राहु	17/04/2033
गुरु	10/06/2033

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध	
10/06/2033	
07/06/2034	
बुध	31/07/2033
केतु	21/08/2033
शुक्र	20/10/2033
सूर्य	08/11/2033
चंद्र	08/12/2033
मंगल	29/12/2033
राहु	21/02/2034
गुरु	11/04/2034
शनि	07/06/2034

शुक्र - शुक्र	
07/06/2034	
06/10/2037	
शुक्र	27/12/2034
सूर्य	26/02/2035
चंद्र	07/06/2035
मंगल	17/08/2035
राहु	16/02/2036
गुरु	27/07/2036
शनि	05/02/2037
बुध	27/07/2037
केतु	06/10/2037

शुक्र - सूर्य	
06/10/2037	
07/10/2038	
सूर्य	25/10/2037
चंद्र	24/11/2037
मंगल	15/12/2037
राहु	08/02/2038
गुरु	29/03/2038
शनि	26/05/2038
बुध	16/07/2038
केतु	07/08/2038
शुक्र	07/10/2038

शुक्र - चंद्र	
07/10/2038	
06/06/2040	
चंद्र	26/11/2038
मंगल	01/01/2039
राहु	02/04/2039
गुरु	22/06/2039
शनि	27/09/2039
बुध	22/12/2039
केतु	26/01/2040
शुक्र	07/05/2040
सूर्य	06/06/2040

शुक्र - मंगल	
06/06/2040	
06/08/2041	
मंगल	01/07/2040
राहु	03/09/2040
गुरु	30/10/2040
शनि	05/01/2041
बुध	07/03/2041
केतु	01/04/2041
शुक्र	11/06/2041
सूर्य	02/07/2041
चंद्र	06/08/2041

शुक्र - राहु	
06/08/2041	
06/08/2044	
राहु	18/01/2042
गुरु	13/06/2042
शनि	03/12/2042
बुध	08/05/2043
केतु	11/07/2043
शुक्र	09/01/2044
सूर्य	04/03/2044
चंद्र	03/06/2044
मंगल	06/08/2044

शुक्र - गुरु	
06/08/2044	
07/04/2047	
गुरु	14/12/2044
शनि	17/05/2045
बुध	02/10/2045
केतु	28/11/2045
शुक्र	09/05/2046
सूर्य	27/06/2046
चंद्र	16/09/2046
मंगल	12/11/2046
राहु	07/04/2047

शुक्र - शनि	
07/04/2047	
07/06/2050	
शनि	07/10/2047
बुध	19/03/2048
केतु	26/05/2048
शुक्र	04/12/2048
सूर्य	31/01/2049
चंद्र	08/05/2049
मंगल	14/07/2049
राहु	04/01/2050
गुरु	07/06/2050

शुक्र - बुध	
07/06/2050	
07/04/2053	
बुध	31/10/2050
केतु	31/12/2050
शुक्र	21/06/2051
सूर्य	12/08/2051
चंद्र	06/11/2051
मंगल	06/01/2052
राहु	09/06/2052
गुरु	25/10/2052
शनि	07/04/2053

शुक्र - केतु	
07/04/2053	
07/06/2054	
केतु	02/05/2053
शुक्र	12/07/2053
सूर्य	02/08/2053
चंद्र	06/09/2053
मंगल	01/10/2053
राहु	04/12/2053
गुरु	30/01/2054
शनि	08/04/2054
बुध	07/06/2054

सूर्य - सूर्य	
07/06/2054	
24/09/2054	
सूर्य	12/06/2054
चंद्र	21/06/2054
मंगल	28/06/2054
राहु	14/07/2054
गुरु	29/07/2054
शनि	15/08/2054
बुध	31/08/2054
केतु	06/09/2054
शुक्र	24/09/2054

सूर्य - चंद्र	
24/09/2054	
26/03/2055	
चंद्र	10/10/2054
मंगल	20/10/2054
राहु	17/11/2054
गुरु	11/12/2054
शनि	09/01/2055
बुध	04/02/2055
केतु	15/02/2055
शुक्र	17/03/2055
सूर्य	26/03/2055

सूर्य - मंगल	
26/03/2055	
01/08/2055	
मंगल	03/04/2055
राहु	22/04/2055
गुरु	09/05/2055
शनि	29/05/2055
बुध	16/06/2055
केतु	24/06/2055
शुक्र	15/07/2055
सूर्य	21/07/2055
चंद्र	01/08/2055

सूर्य - राहु	
01/08/2055	
25/06/2056	
राहु	19/09/2055
गुरु	02/11/2055
शनि	24/12/2055
बुध	09/02/2056
केतु	28/02/2056
शुक्र	23/04/2056
सूर्य	09/05/2056
चंद्र	05/06/2056
मंगल	25/06/2056

सूर्य - गुरु	
25/06/2056	
13/04/2057	
गुरु	03/08/2056
शनि	18/09/2056
बुध	29/10/2056
केतु	15/11/2056
शुक्र	03/01/2057
सूर्य	18/01/2057
चंद्र	11/02/2057
मंगल	28/02/2057
राहु	13/04/2057

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि	
13/04/2057	
26/03/2058	
शनि	07/06/2057
बुध	26/07/2057
केतु	15/08/2057
शुक्र	12/10/2057
सूर्य	29/10/2057
चंद्र	27/11/2057
मंगल	18/12/2057
राहु	08/02/2058
गुरु	26/03/2058

सूर्य - बुध	
26/03/2058	
30/01/2059	
बुध	09/05/2058
केतु	27/05/2058
शुक्र	18/07/2058
सूर्य	02/08/2058
चंद्र	28/08/2058
मंगल	15/09/2058
राहु	01/11/2058
गुरु	12/12/2058
शनि	30/01/2059

सूर्य - केतु	
30/01/2059	
07/06/2059	
केतु	07/02/2059
शुक्र	28/02/2059
सूर्य	06/03/2059
चंद्र	17/03/2059
मंगल	25/03/2059
राहु	13/04/2059
गुरु	30/04/2059
शनि	20/05/2059
बुध	07/06/2059

सूर्य - शुक्र	
07/06/2059	
06/06/2060	
शुक्र	07/08/2059
सूर्य	25/08/2059
चंद्र	25/09/2059
मंगल	16/10/2059
राहु	10/12/2059
गुरु	27/01/2060
शनि	25/03/2060
बुध	16/05/2060
केतु	06/06/2060

चंद्र - चंद्र	
06/06/2060	
07/04/2061	
चंद्र	02/07/2060
मंगल	19/07/2060
राहु	03/09/2060
गुरु	14/10/2060
शनि	01/12/2060
बुध	13/01/2061
केतु	31/01/2061
शुक्र	23/03/2061
सूर्य	07/04/2061

चंद्र - मंगल	
07/04/2061	
06/11/2061	
मंगल	19/04/2061
राहु	21/05/2061
गुरु	19/06/2061
शनि	22/07/2061
बुध	21/08/2061
केतु	03/09/2061
शुक्र	08/10/2061
सूर्य	19/10/2061
चंद्र	06/11/2061

चंद्र - राहु	
06/11/2061	
08/05/2063	
राहु	27/01/2062
गुरु	10/04/2062
शनि	06/07/2062
बुध	21/09/2062
केतु	23/10/2062
शुक्र	23/01/2063
सूर्य	19/02/2063
चंद्र	06/04/2063
मंगल	08/05/2063

चंद्र - गुरु	
08/05/2063	
06/09/2064	
गुरु	12/07/2063
शनि	27/09/2063
बुध	05/12/2063
केतु	02/01/2064
शुक्र	23/03/2064
सूर्य	17/04/2064
चंद्र	27/05/2064
मंगल	25/06/2064
राहु	06/09/2064

चंद्र - शनि	
06/09/2064	
07/04/2066	
शनि	06/12/2064
बुध	26/02/2065
केतु	01/04/2065
शुक्र	06/07/2065
सूर्य	04/08/2065
चंद्र	21/09/2065
मंगल	25/10/2065
राहु	20/01/2066
गुरु	07/04/2066

चंद्र - बुध	
07/04/2066	
06/09/2067	
बुध	19/06/2066
केतु	19/07/2066
शुक्र	14/10/2066
सूर्य	09/11/2066
चंद्र	22/12/2066
मंगल	21/01/2067
राहु	09/04/2067
गुरु	17/06/2067
शनि	06/09/2067

चंद्र - केतु	
06/09/2067	
06/04/2068	
केतु	19/09/2067
शुक्र	24/10/2067
सूर्य	04/11/2067
चंद्र	22/11/2067
मंगल	04/12/2067
राहु	05/01/2068
गुरु	03/02/2068
शनि	07/03/2068
बुध	06/04/2068

चंद्र - शुक्र	
06/04/2068	
06/12/2069	
शुक्र	17/07/2068
सूर्य	16/08/2068
चंद्र	06/10/2068
मंगल	11/11/2068
राहु	10/02/2069
गुरु	02/05/2069
शनि	06/08/2069
बुध	01/11/2069
केतु	06/12/2069

चंद्र - सूर्य	
06/12/2069	
07/06/2070	
सूर्य	15/12/2069
चंद्र	31/12/2069
मंगल	10/01/2070
राहु	07/02/2070
गुरु	03/03/2070
शनि	01/04/2070
बुध	27/04/2070
केतु	07/05/2070
शुक्र	07/06/2070

मंगल - मंगल	
07/06/2070	
03/11/2070	
मंगल	16/06/2070
राहु	08/07/2070
गुरु	28/07/2070
शनि	20/08/2070
बुध	11/09/2070
केतु	19/09/2070
शुक्र	14/10/2070
सूर्य	22/10/2070
चंद्र	03/11/2070

मंगल - राहु	
03/11/2070	
22/11/2071	
राहु	31/12/2070
गुरु	20/02/2071
शनि	21/04/2071
बुध	15/06/2071
केतु	07/07/2071
शुक्र	09/09/2071
सूर्य	28/09/2071
चंद्र	30/10/2071
मंगल	22/11/2071

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु	
22/11/2071	
27/10/2072	
गुरु	06/01/2072
शनि	29/02/2072
बुध	17/04/2072
केतु	07/05/2072
शुक्र	03/07/2072
सूर्य	20/07/2072
चंद्र	17/08/2072
मंगल	06/09/2072
राहु	27/10/2072

मंगल - शनि	
27/10/2072	
06/12/2073	
शनि	31/12/2072
बुध	26/02/2073
केतु	21/03/2073
शुक्र	28/05/2073
सूर्य	17/06/2073
चंद्र	21/07/2073
मंगल	14/08/2073
राहु	13/10/2073
गुरु	06/12/2073

मंगल - बुध	
06/12/2073	
03/12/2074	
बुध	27/01/2074
केतु	17/02/2074
शुक्र	18/04/2074
सूर्य	06/05/2074
चंद्र	05/06/2074
मंगल	26/06/2074
राहु	20/08/2074
गुरु	07/10/2074
शनि	03/12/2074

मंगल - केतु	
03/12/2074	
02/05/2075	
केतु	12/12/2074
शुक्र	06/01/2075
सूर्य	13/01/2075
चंद्र	26/01/2075
मंगल	04/02/2075
राहु	26/02/2075
गुरु	18/03/2075
शनि	10/04/2075
बुध	02/05/2075

मंगल - शुक्र	
02/05/2075	
01/07/2076	
शुक्र	12/07/2075
सूर्य	02/08/2075
चंद्र	06/09/2075
मंगल	01/10/2075
राहु	04/12/2075
गुरु	30/01/2076
शनि	06/04/2076
बुध	06/06/2076
केतु	01/07/2076

मंगल - सूर्य	
01/07/2076	
06/11/2076	
सूर्य	07/07/2076
चंद्र	18/07/2076
मंगल	25/07/2076
राहु	13/08/2076
गुरु	30/08/2076
शनि	20/09/2076
बुध	08/10/2076
केतु	15/10/2076
शुक्र	06/11/2076

मंगल - चंद्र	
06/11/2076	
07/06/2077	
चंद्र	23/11/2076
मंगल	06/12/2076
राहु	07/01/2077
गुरु	04/02/2077
शनि	10/03/2077
बुध	09/04/2077
केतु	21/04/2077
शुक्र	27/05/2077
सूर्य	07/06/2077

राहु - राहु	
07/06/2077	
18/02/2080	
राहु	02/11/2077
गुरु	13/03/2078
शनि	16/08/2078
बुध	03/01/2079
केतु	01/03/2079
शुक्र	13/08/2079
सूर्य	01/10/2079
चंद्र	22/12/2079
मंगल	18/02/2080

राहु - गुरु	
18/02/2080	
13/07/2082	
गुरु	14/06/2080
शनि	30/10/2080
बुध	04/03/2081
केतु	24/04/2081
शुक्र	17/09/2081
सूर्य	31/10/2081
चंद्र	12/01/2082
मंगल	04/03/2082
राहु	13/07/2082

राहु - शनि	
13/07/2082	
19/05/2085	
शनि	25/12/2082
बुध	22/05/2083
केतु	21/07/2083
शुक्र	11/01/2084
सूर्य	03/03/2084
चंद्र	29/05/2084
मंगल	28/07/2084
राहु	01/01/2085
गुरु	19/05/2085

राहु - बुध	
19/05/2085	
07/12/2087	
बुध	28/09/2085
केतु	22/11/2085
शुक्र	26/04/2086
सूर्य	11/06/2086
चंद्र	28/08/2086
मंगल	21/10/2086
राहु	10/03/2087
गुरु	12/07/2087
शनि	07/12/2087

राहु - केतु	
07/12/2087	
24/12/2088	
केतु	29/12/2087
शुक्र	02/03/2088
सूर्य	21/03/2088
चंद्र	22/04/2088
मंगल	15/05/2088
राहु	11/07/2088
गुरु	31/08/2088
शनि	31/10/2088
बुध	24/12/2088

राहु - शुक्र	
24/12/2088	
25/12/2091	
शुक्र	25/06/2089
सूर्य	19/08/2089
चंद्र	18/11/2089
मंगल	21/01/2090
राहु	04/07/2090
गुरु	27/11/2090
शनि	20/05/2091
बुध	22/10/2091
केतु	25/12/2091

राहु - सूर्य	
25/12/2091	
18/11/2092	
सूर्य	10/01/2092
चंद्र	07/02/2092
मंगल	26/02/2092
राहु	15/04/2092
गुरु	29/05/2092
शनि	20/07/2092
बुध	05/09/2092
केतु	24/09/2092
शुक्र	18/11/2092

राहु - चंद्र	
18/11/2092	
20/05/2094	
चंद्र	02/01/2093
मंगल	03/02/2093
राहु	27/04/2093
गुरु	09/07/2093
शनि	03/10/2093
बुध	20/12/2093
केतु	21/01/2094
शुक्र	22/04/2094
सूर्य	20/05/2094

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - सूर्य - बुध		बुध - सूर्य - केतु		बुध - सूर्य - शुक्र		बुध - चंद्र - चंद्र	
15/03/2017 17:25		28/04/2017 16:59		16/05/2017 19:38		07/07/2017 13:29	
28/04/2017 16:59		16/05/2017 19:38		07/07/2017 13:29		19/08/2017 16:22	
बुध	21/03/2017 22:57	केतु	29/04/2017 18:20	शुक्र	25/05/2017 10:37	चंद्र	11/07/2017 03:43
केतु	24/03/2017 12:32	शुक्र	02/05/2017 18:47	सूर्य	28/05/2017 00:42	मंगल	13/07/2017 16:05
शुक्र	31/03/2017 20:27	सूर्य	03/05/2017 16:31	चंद्र	01/06/2017 08:11	राहु	20/07/2017 03:19
सूर्य	03/04/2017 01:14	चंद्र	05/05/2017 04:44	मंगल	04/06/2017 08:38	गुरु	25/07/2017 21:18
चंद्र	06/04/2017 17:12	मंगल	06/05/2017 06:05	राहु	12/06/2017 02:54	शनि	01/08/2017 17:10
मंगल	09/04/2017 06:46	राहु	08/05/2017 23:17	गुरु	19/06/2017 00:29	बुध	07/08/2017 19:46
राहु	15/04/2017 21:07	गुरु	11/05/2017 09:14	शनि	27/06/2017 05:07	केतु	10/08/2017 08:08
गुरु	21/04/2017 17:51	शनि	14/05/2017 06:04	बुध	04/07/2017 13:03	शुक्र	17/08/2017 12:37
शनि	28/04/2017 16:59	बुध	16/05/2017 19:38	केतु	07/07/2017 13:29	सूर्य	19/08/2017 16:22

बुध - चंद्र - मंगल		बुध - चंद्र - राहु		बुध - चंद्र - गुरु		बुध - चंद्र - शनि	
19/08/2017 16:22		18/09/2017 20:46		05/12/2017 11:33		12/02/2018 11:21	
18/09/2017 20:46		05/12/2017 11:33		12/02/2018 11:21		05/05/2018 09:37	
मंगल	21/08/2017 10:37	राहु	30/09/2017 12:11	गुरु	14/12/2017 16:19	शनि	25/02/2018 10:40
राहु	25/08/2017 23:17	गुरु	10/10/2017 20:33	शनि	25/12/2017 14:29	बुध	09/03/2018 01:13
गुरु	29/08/2017 23:52	शनि	23/10/2017 03:30	बुध	04/01/2018 09:04	केतु	13/03/2018 19:55
शनि	03/09/2017 18:34	बुध	03/11/2017 03:23	केतु	08/01/2018 09:39	शुक्र	27/03/2018 11:38
बुध	08/09/2017 01:11	केतु	07/11/2017 16:03	शुक्र	19/01/2018 21:37	सूर्य	31/03/2018 13:57
केतु	09/09/2017 19:27	शुक्र	20/11/2017 14:31	सूर्य	23/01/2018 08:24	चंद्र	07/04/2018 09:48
शुक्र	14/09/2017 20:11	सूर्य	24/11/2017 11:39	चंद्र	29/01/2018 02:23	मंगल	12/04/2018 04:30
सूर्य	16/09/2017 08:24	चंद्र	30/11/2017 22:53	मंगल	02/02/2018 02:59	राहु	24/04/2018 11:26
चंद्र	18/09/2017 20:46	मंगल	05/12/2017 11:33	राहु	12/02/2018 11:21	गुरु	05/05/2018 09:37

बुध - चंद्र - बुध		बुध - चंद्र - केतु		बुध - चंद्र - शुक्र		बुध - चंद्र - सूर्य	
05/05/2018 09:37		17/07/2018 16:54		16/08/2018 21:19		11/11/2018 03:04	
17/07/2018 16:54		16/08/2018 21:19		11/11/2018 03:04		06/12/2018 23:59	
बुध	15/05/2018 18:50	केतु	19/07/2018 11:09	शुक्र	31/08/2018 06:16	सूर्य	12/11/2018 10:06
केतु	20/05/2018 01:28	शुक्र	24/07/2018 11:53	सूर्य	04/09/2018 13:45	चंद्र	14/11/2018 13:51
शुक्र	01/06/2018 06:41	सूर्य	26/07/2018 00:07	चंद्र	11/09/2018 18:14	मंगल	16/11/2018 02:04
सूर्य	04/06/2018 22:39	चंद्र	28/07/2018 12:29	मंगल	16/09/2018 18:58	राहु	19/11/2018 23:12
चंद्र	11/06/2018 01:15	मंगल	30/07/2018 06:44	राहु	29/09/2018 17:26	गुरु	23/11/2018 10:00
मंगल	15/06/2018 07:53	राहु	03/08/2018 19:24	गुरु	11/10/2018 05:24	शनि	27/11/2018 12:19
राहु	26/06/2018 07:46	गुरु	07/08/2018 19:59	शनि	24/10/2018 21:07	बुध	01/12/2018 04:17
गुरु	06/07/2018 02:21	शनि	12/08/2018 14:41	बुध	06/11/2018 02:19	केतु	02/12/2018 16:30
शनि	17/07/2018 16:54	बुध	16/08/2018 21:19	केतु	11/11/2018 03:04	शुक्र	06/12/2018 23:59

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - मंगल - मंगल	
06/12/2018 23:59	
28/12/2018 03:04	
मंगल	08/12/2018 05:34
राहु	11/12/2018 09:38
गुरु	14/12/2018 05:14
शनि	17/12/2018 13:32
बुध	20/12/2018 13:22
केतु	21/12/2018 18:57
शुक्र	25/12/2018 07:28
सूर्य	26/12/2018 08:49
चंद्र	28/12/2018 03:04

बुध - मंगल - राहु	
28/12/2018 03:04	
20/02/2019 11:01	
राहु	05/01/2019 06:40
गुरु	12/01/2019 12:31
शनि	21/01/2019 02:59
बुध	28/01/2019 19:42
केतु	31/01/2019 23:46
शुक्र	10/02/2019 01:06
सूर्य	12/02/2019 18:17
चंद्र	17/02/2019 06:57
मंगल	20/02/2019 11:01

बुध - मंगल - गुरु	
20/02/2019 11:01	
09/04/2019 18:04	
गुरु	26/02/2019 21:33
शनि	06/03/2019 13:04
बुध	13/03/2019 09:16
केतु	16/03/2019 04:53
शुक्र	24/03/2019 06:04
सूर्य	26/03/2019 16:01
चंद्र	30/03/2019 16:36
मंगल	02/04/2019 12:13
राहु	09/04/2019 18:04

बुध - मंगल - शनि	
09/04/2019 18:04	
06/06/2019 02:28	
शनि	18/04/2019 20:00
बुध	26/04/2019 22:59
केतु	30/04/2019 07:17
शुक्र	09/05/2019 20:41
सूर्य	12/05/2019 17:30
चंद्र	17/05/2019 12:12
मंगल	20/05/2019 20:29
राहु	29/05/2019 10:56
गुरु	06/06/2019 02:28

बुध - मंगल - बुध	
06/06/2019 02:28	
27/07/2019 09:58	
बुध	13/06/2019 08:55
केतु	16/06/2019 08:46
शुक्र	24/06/2019 22:01
सूर्य	27/06/2019 11:35
चंद्र	01/07/2019 18:13
मंगल	04/07/2019 18:03
राहु	12/07/2019 10:46
गुरु	19/07/2019 06:58
शनि	27/07/2019 09:58

बुध - मंगल - केतु	
27/07/2019 09:58	
17/08/2019 13:03	
केतु	28/07/2019 15:32
शुक्र	01/08/2019 04:03
सूर्य	02/08/2019 05:25
चंद्र	03/08/2019 23:40
मंगल	05/08/2019 05:15
राहु	08/08/2019 09:19
गुरु	11/08/2019 04:55
शनि	14/08/2019 13:13
बुध	17/08/2019 13:03

बुध - मंगल - शुक्र	
17/08/2019 13:03	
16/10/2019 21:52	
शुक्र	27/08/2019 14:31
सूर्य	30/08/2019 14:58
चंद्र	04/09/2019 15:42
मंगल	08/09/2019 04:13
राहु	17/09/2019 05:32
गुरु	25/09/2019 06:43
शनि	04/10/2019 20:07
बुध	13/10/2019 09:22
केतु	16/10/2019 21:52

बुध - मंगल - सूर्य	
16/10/2019 21:52	
04/11/2019 00:31	
सूर्य	17/10/2019 19:36
चंद्र	19/10/2019 07:50
मंगल	20/10/2019 09:11
राहु	23/10/2019 02:23
गुरु	25/10/2019 12:20
शनि	28/10/2019 09:09
बुध	30/10/2019 22:44
केतु	01/11/2019 00:05
शुक्र	04/11/2019 00:31

बुध - मंगल - चंद्र	
04/11/2019 00:31	
04/12/2019 04:56	
चंद्र	06/11/2019 12:53
मंगल	08/11/2019 07:09
राहु	12/11/2019 19:48
गुरु	16/11/2019 20:24
शनि	21/11/2019 15:06
बुध	25/11/2019 21:43
केतु	27/11/2019 15:59
शुक्र	02/12/2019 16:43
सूर्य	04/12/2019 04:56

बुध - राहु - राहु	
04/12/2019 04:56	
21/04/2020 21:56	
राहु	25/12/2019 03:53
गुरु	12/01/2020 18:57
शनि	03/02/2020 21:50
बुध	23/02/2020 16:51
केतु	02/03/2020 20:26
शुक्र	26/03/2020 03:16
सूर्य	02/04/2020 02:55
चंद्र	13/04/2020 18:20
मंगल	21/04/2020 21:56

बुध - राहु - गुरु	
21/04/2020 21:56	
24/08/2020 02:22	
गुरु	08/05/2020 11:19
शनि	28/05/2020 03:13
बुध	14/06/2020 17:27
केतु	21/06/2020 23:19
शुक्र	12/07/2020 16:03
सूर्य	18/07/2020 21:04
चंद्र	29/07/2020 05:27
मंगल	05/08/2020 11:18
राहु	24/08/2020 02:22

बुध - राहु - शनि	
24/08/2020 02:22	
18/01/2021 13:38	
शनि	16/09/2020 10:45
बुध	07/10/2020 08:09
केतु	15/10/2020 22:36
शुक्र	09/11/2020 12:29
सूर्य	16/11/2020 21:27
चंद्र	29/11/2020 04:23
मंगल	07/12/2020 18:51
राहु	29/12/2020 21:44
गुरु	18/01/2021 13:38

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - राहु - बुध	
18/01/2021 13:38	
30/05/2021 12:22	
बुध	06/02/2021 06:16
केतु	13/02/2021 22:59
शुक्र	07/03/2021 22:46
सूर्य	14/03/2021 13:06
चंद्र	25/03/2021 13:00
मंगल	02/04/2021 05:44
राहु	22/04/2021 00:44
गुरु	09/05/2021 14:58
शनि	30/05/2021 12:22

बुध - राहु - केतु	
30/05/2021 12:22	
23/07/2021 20:18	
केतु	02/06/2021 16:25
शुक्र	11/06/2021 17:45
सूर्य	14/06/2021 10:57
चंद्र	18/06/2021 23:36
मंगल	22/06/2021 03:40
राहु	30/06/2021 07:16
गुरु	07/07/2021 13:07
शनि	16/07/2021 03:35
बुध	23/07/2021 20:18

बुध - राहु - शुक्र	
23/07/2021 20:18	
26/12/2021 01:51	
शुक्र	18/08/2021 17:14
सूर्य	26/08/2021 11:30
चंद्र	08/09/2021 09:58
मंगल	17/09/2021 11:17
राहु	10/10/2021 18:07
गुरु	31/10/2021 10:52
शनि	25/11/2021 00:44
बुध	17/12/2021 00:32
केतु	26/12/2021 01:51

बुध - राहु - सूर्य	
26/12/2021 01:51	
10/02/2022 15:31	
सूर्य	28/12/2021 09:44
चंद्र	01/01/2022 06:52
मंगल	04/01/2022 00:04
राहु	10/01/2022 23:43
गुरु	17/01/2022 04:45
शनि	24/01/2022 13:42
बुध	31/01/2022 04:02
केतु	02/02/2022 21:14
शुक्र	10/02/2022 15:31

बुध - राहु - चंद्र	
10/02/2022 15:31	
29/04/2022 06:17	
चंद्र	17/02/2022 02:45
मंगल	21/02/2022 15:25
राहु	05/03/2022 06:50
गुरु	15/03/2022 15:12
शनि	27/03/2022 22:08
बुध	07/04/2022 22:02
केतु	12/04/2022 10:41
शुक्र	25/04/2022 09:09
सूर्य	29/04/2022 06:17

बुध - राहु - मंगल	
29/04/2022 06:17	
22/06/2022 14:14	
मंगल	02/05/2022 10:21
राहु	10/05/2022 13:57
गुरु	17/05/2022 19:48
शनि	26/05/2022 10:16
बुध	03/06/2022 02:59
केतु	06/06/2022 07:03
शुक्र	15/06/2022 08:22
सूर्य	18/06/2022 01:34
चंद्र	22/06/2022 14:14

बुध - गुरु - गुरु	
22/06/2022 14:14	
10/10/2022 23:31	
गुरु	07/07/2022 07:28
शनि	24/07/2022 18:56
बुध	09/08/2022 10:15
केतु	15/08/2022 20:48
शुक्र	03/09/2022 06:21
सूर्य	08/09/2022 18:48
चंद्र	17/09/2022 23:35
मंगल	24/09/2022 10:07
राहु	10/10/2022 23:31

बुध - गुरु - शनि	
10/10/2022 23:31	
19/02/2023 01:32	
शनि	31/10/2022 17:38
बुध	19/11/2022 07:19
केतु	26/11/2022 22:50
शुक्र	18/12/2022 19:10
सूर्य	25/12/2022 08:29
चंद्र	05/01/2023 06:39
मंगल	12/01/2023 22:10
राहु	01/02/2023 14:04
गुरु	19/02/2023 01:32

बुध - गुरु - बुध	
19/02/2023 01:32	
16/06/2023 08:24	
बुध	07/03/2023 16:18
केतु	14/03/2023 12:30
शुक्र	03/04/2023 01:39
सूर्य	08/04/2023 22:24
चंद्र	18/04/2023 16:58
मंगल	25/04/2023 13:10
राहु	13/05/2023 03:24
गुरु	28/05/2023 18:42
शनि	16/06/2023 08:24

बुध - गुरु - केतु	
16/06/2023 08:24	
03/08/2023 15:27	
केतु	19/06/2023 04:00
शुक्र	27/06/2023 05:11
सूर्य	29/06/2023 15:08
चंद्र	03/07/2023 15:43
मंगल	06/07/2023 11:20
राहु	13/07/2023 17:12
गुरु	20/07/2023 03:44
शनि	27/07/2023 19:15
बुध	03/08/2023 15:27

बुध - गुरु - शुक्र	
03/08/2023 15:27	
19/12/2023 15:03	
शुक्र	26/08/2023 15:23
सूर्य	02/09/2023 12:58
चंद्र	14/09/2023 00:56
मंगल	22/09/2023 02:07
राहु	12/10/2023 18:51
गुरु	31/10/2023 04:24
शनि	22/11/2023 00:44
बुध	11/12/2023 13:53
केतु	19/12/2023 15:03

बुध - गुरु - सूर्य	
19/12/2023 15:03	
30/01/2024 00:32	
सूर्य	21/12/2023 16:44
चंद्र	25/12/2023 03:31
मंगल	27/12/2023 13:28
राहु	02/01/2024 18:30
गुरु	08/01/2024 06:57
शनि	14/01/2024 20:15
बुध	20/01/2024 17:00
केतु	23/01/2024 02:57
शुक्र	30/01/2024 00:32

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - गुरु - चंद्र	
30/01/2024 00:32	
08/04/2024 00:20	
चंद्र	04/02/2024 18:31
मंगल	08/02/2024 19:06
राहु	19/02/2024 03:29
गुरु	28/02/2024 08:15
शनि	10/03/2024 06:25
बुध	20/03/2024 00:59
केतु	24/03/2024 01:35
शुक्र	04/04/2024 13:33
सूर्य	08/04/2024 00:20

बुध - गुरु - मंगल	
08/04/2024 00:20	
26/05/2024 07:24	
मंगल	10/04/2024 19:57
राहु	18/04/2024 01:48
गुरु	24/04/2024 12:21
शनि	02/05/2024 03:52
बुध	09/05/2024 00:04
केतु	11/05/2024 19:41
शुक्र	19/05/2024 20:51
सूर्य	22/05/2024 06:48
चंद्र	26/05/2024 07:24

बुध - गुरु - राहु	
26/05/2024 07:24	
27/09/2024 11:50	
राहु	13/06/2024 22:28
गुरु	30/06/2024 11:51
शनि	20/07/2024 03:45
बुध	06/08/2024 17:59
केतु	13/08/2024 23:51
शुक्र	03/09/2024 16:35
सूर्य	09/09/2024 21:36
चंद्र	20/09/2024 05:58
मंगल	27/09/2024 11:50

बुध - शनि - शनि	
27/09/2024 11:50	
02/03/2025 03:44	
शनि	22/10/2024 03:21
बुध	13/11/2024 04:36
केतु	22/11/2024 06:32
शुक्र	18/12/2024 05:11
सूर्य	25/12/2024 23:59
चंद्र	07/01/2025 23:18
मंगल	17/01/2025 01:14
राहु	09/02/2025 09:37
गुरु	02/03/2025 03:44

बुध - शनि - बुध	
02/03/2025 03:44	
19/07/2025 10:23	
बुध	21/03/2025 21:16
केतु	30/03/2025 00:16
शुक्र	22/04/2025 05:22
सूर्य	29/04/2025 04:30
चंद्र	10/05/2025 19:03
मंगल	18/05/2025 22:03
राहु	08/06/2025 19:26
गुरु	27/06/2025 09:08
शनि	19/07/2025 10:23

बुध - शनि - केतु	
19/07/2025 10:23	
14/09/2025 18:46	
केतु	22/07/2025 18:40
शुक्र	01/08/2025 08:04
सूर्य	04/08/2025 04:53
चंद्र	08/08/2025 23:35
मंगल	12/08/2025 07:52
राहु	20/08/2025 22:20
गुरु	28/08/2025 13:51
शनि	06/09/2025 15:46
बुध	14/09/2025 18:46

बुध - शनि - शुक्र	
14/09/2025 18:46	
25/02/2026 15:17	
शुक्र	12/10/2025 02:11
सूर्य	20/10/2025 06:49
चंद्र	02/11/2025 22:31
मंगल	12/11/2025 11:55
राहु	07/12/2025 01:48
गुरु	28/12/2025 22:08
शनि	23/01/2026 20:47
बुध	16/02/2026 01:53
केतु	25/02/2026 15:17

बुध - शनि - सूर्य	
25/02/2026 15:17	
15/04/2026 19:03	
सूर्य	28/02/2026 02:17
चंद्र	04/03/2026 04:35
मंगल	07/03/2026 01:24
राहु	14/03/2026 10:22
गुरु	20/03/2026 23:40
शनि	28/03/2026 18:28
बुध	04/04/2026 17:36
केतु	07/04/2026 14:25
शुक्र	15/04/2026 19:03

बुध - शनि - चंद्र	
15/04/2026 19:03	
06/07/2026 17:18	
चंद्र	22/04/2026 14:54
मंगल	27/04/2026 09:36
राहु	09/05/2026 16:32
गुरु	20/05/2026 14:42
शनि	02/06/2026 14:02
बुध	14/06/2026 04:35
केतु	18/06/2026 23:17
शुक्र	02/07/2026 15:00
सूर्य	06/07/2026 17:18

बुध - शनि - मंगल	
06/07/2026 17:18	
02/09/2026 01:41	
मंगल	10/07/2026 01:36
राहु	18/07/2026 16:03
गुरु	26/07/2026 07:34
शनि	04/08/2026 09:30
बुध	12/08/2026 12:29
केतु	15/08/2026 20:47
शुक्र	25/08/2026 10:10
सूर्य	28/08/2026 07:00
चंद्र	02/09/2026 01:41

बुध - शनि - राहु	
02/09/2026 01:41	
27/01/2027 12:58	
राहु	24/09/2026 04:35
गुरु	13/10/2026 20:29
शनि	06/11/2026 04:52
बुध	27/11/2026 02:16
केतु	05/12/2026 16:43
शुक्र	30/12/2026 06:36
सूर्य	06/01/2027 15:34
चंद्र	18/01/2027 22:30
मंगल	27/01/2027 12:58

बुध - शनि - गुरु	
27/01/2027 12:58	
07/06/2027 14:59	
गुरु	14/02/2027 00:26
शनि	06/03/2027 18:33
बुध	25/03/2027 08:14
केतु	01/04/2027 23:45
शुक्र	23/04/2027 20:06
सूर्य	30/04/2027 09:24
चंद्र	11/05/2027 07:34
मंगल	18/05/2027 23:05
राहु	07/06/2027 14:59

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - सूर्य - बुध - गुरु		बुध - सूर्य - बुध - शनि		बुध - सूर्य - केतु - केतु		बुध - सूर्य - केतु - शुक्र	
15/04/2017 21:07		21/04/2017 17:51		28/04/2017 16:59		29/04/2017 18:20	
21/04/2017 17:51		28/04/2017 16:59		29/04/2017 18:20		02/05/2017 18:47	
गुरु	16/04/2017 15:53	शनि	22/04/2017 20:19	केतु	28/04/2017 18:28	शुक्र	30/04/2017 06:25
शनि	17/04/2017 14:10	बुध	23/04/2017 20:00	शुक्र	28/04/2017 22:41	सूर्य	30/04/2017 10:02
बुध	18/04/2017 10:06	केतु	24/04/2017 05:45	सूर्य	28/04/2017 23:58	चंद्र	30/04/2017 16:04
केतु	18/04/2017 18:19	शुक्र	25/04/2017 09:36	चंद्र	29/04/2017 02:04	मंगल	30/04/2017 20:18
शुक्र	19/04/2017 17:46	सूर्य	25/04/2017 17:57	मंगल	29/04/2017 03:33	राहु	01/05/2017 07:10
सूर्य	20/04/2017 00:48	चंद्र	26/04/2017 07:53	राहु	29/04/2017 07:21	गुरु	01/05/2017 16:49
चंद्र	20/04/2017 12:32	मंगल	26/04/2017 17:38	गुरु	29/04/2017 10:44	शनि	02/05/2017 04:18
मंगल	20/04/2017 20:45	राहु	27/04/2017 18:42	शनि	29/04/2017 14:45	बुध	02/05/2017 14:33
राहु	21/04/2017 17:51	गुरु	28/04/2017 16:59	बुध	29/04/2017 18:20	केतु	02/05/2017 18:47

बुध - सूर्य - केतु - सूर्य		बुध - सूर्य - केतु - चंद्र		बुध - सूर्य - केतु - मंगल		बुध - सूर्य - केतु - राहु	
02/05/2017 18:47		03/05/2017 16:31		05/05/2017 04:44		06/05/2017 06:05	
03/05/2017 16:31		05/05/2017 04:44		06/05/2017 06:05		08/05/2017 23:17	
सूर्य	02/05/2017 19:52	चंद्र	03/05/2017 19:32	मंगल	05/05/2017 06:13	राहु	06/05/2017 15:52
चंद्र	02/05/2017 21:41	मंगल	03/05/2017 21:39	राहु	05/05/2017 10:01	गुरु	07/05/2017 00:34
मंगल	02/05/2017 22:57	राहु	04/05/2017 03:05	गुरु	05/05/2017 13:24	शनि	07/05/2017 10:53
राहु	03/05/2017 02:12	गुरु	04/05/2017 07:54	शनि	05/05/2017 17:25	बुध	07/05/2017 20:07
गुरु	03/05/2017 05:06	शनि	04/05/2017 13:39	बुध	05/05/2017 21:00	केतु	07/05/2017 23:55
शनि	03/05/2017 08:33	बुध	04/05/2017 18:46	केतु	05/05/2017 22:29	शुक्र	08/05/2017 10:47
बुध	03/05/2017 11:37	केतु	04/05/2017 20:53	शुक्र	06/05/2017 02:43	सूर्य	08/05/2017 14:03
केतु	03/05/2017 12:54	शुक्र	05/05/2017 02:55	सूर्य	06/05/2017 03:59	चंद्र	08/05/2017 19:29
शुक्र	03/05/2017 16:31	सूर्य	05/05/2017 04:44	चंद्र	06/05/2017 06:05	मंगल	08/05/2017 23:17

बुध - सूर्य - केतु - गुरु		बुध - सूर्य - केतु - शनि		बुध - सूर्य - केतु - बुध		बुध - सूर्य - शुक्र - शुक्र	
08/05/2017 23:17		11/05/2017 09:14		14/05/2017 06:04		16/05/2017 19:38	
11/05/2017 09:14		14/05/2017 06:04		16/05/2017 19:38		25/05/2017 10:37	
गुरु	09/05/2017 07:01	शनि	11/05/2017 20:08	बुध	14/05/2017 14:47	शुक्र	18/05/2017 06:08
शनि	09/05/2017 16:11	बुध	12/05/2017 05:53	केतु	14/05/2017 18:22	सूर्य	18/05/2017 16:29
बुध	10/05/2017 00:24	केतु	12/05/2017 09:54	शुक्र	15/05/2017 04:38	चंद्र	19/05/2017 09:44
केतु	10/05/2017 03:47	शुक्र	12/05/2017 21:22	सूर्य	15/05/2017 07:43	मंगल	19/05/2017 21:48
शुक्र	10/05/2017 13:26	सूर्य	13/05/2017 00:49	चंद्र	15/05/2017 12:51	राहु	21/05/2017 04:51
सूर्य	10/05/2017 16:20	चंद्र	13/05/2017 06:33	मंगल	15/05/2017 16:26	गुरु	22/05/2017 08:27
चंद्र	10/05/2017 21:10	मंगल	13/05/2017 10:34	राहु	16/05/2017 01:40	शनि	23/05/2017 17:13
मंगल	11/05/2017 00:33	राहु	13/05/2017 20:53	गुरु	16/05/2017 09:53	बुध	24/05/2017 22:32
राहु	11/05/2017 09:14	गुरु	14/05/2017 06:04	शनि	16/05/2017 19:38	केतु	25/05/2017 10:37

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - सूर्य - शुक्र - सूर्य	
25/05/2017 10:37	
28/05/2017 00:42	
सूर्य	25/05/2017 13:43
चंद्र	25/05/2017 18:53
मंगल	25/05/2017 22:31
राहु	26/05/2017 07:49
गुरु	26/05/2017 16:06
शनि	27/05/2017 01:56
बुध	27/05/2017 10:44
केतु	27/05/2017 14:21
शुक्र	28/05/2017 00:42

बुध - सूर्य - शुक्र - चंद्र	
28/05/2017 00:42	
01/06/2017 08:11	
चंद्र	28/05/2017 09:20
मंगल	28/05/2017 15:22
राहु	29/05/2017 06:53
गुरु	29/05/2017 20:41
शनि	30/05/2017 13:04
बुध	31/05/2017 03:44
केतु	31/05/2017 09:46
शुक्र	01/06/2017 03:01
सूर्य	01/06/2017 08:11

बुध - सूर्य - शुक्र - मंगल	
01/06/2017 08:11	
04/06/2017 08:38	
मंगल	01/06/2017 12:25
राहु	01/06/2017 23:17
गुरु	02/06/2017 08:56
शनि	02/06/2017 20:25
बुध	03/06/2017 06:40
केतु	03/06/2017 10:54
शुक्र	03/06/2017 22:58
सूर्य	04/06/2017 02:36
चंद्र	04/06/2017 08:38

बुध - सूर्य - शुक्र - राहु	
04/06/2017 08:38	
12/06/2017 02:54	
राहु	05/06/2017 12:34
गुरु	06/06/2017 13:25
शनि	07/06/2017 18:54
बुध	08/06/2017 21:18
केतु	09/06/2017 08:09
शुक्र	10/06/2017 15:12
सूर्य	11/06/2017 00:31
चंद्र	11/06/2017 16:02
मंगल	12/06/2017 02:54

बुध - सूर्य - शुक्र - गुरु	
12/06/2017 02:54	
19/06/2017 00:29	
गुरु	13/06/2017 00:59
शनि	14/06/2017 03:12
बुध	15/06/2017 02:40
केतु	15/06/2017 12:19
शुक्र	16/06/2017 15:55
सूर्य	17/06/2017 00:12
चंद्र	17/06/2017 13:59
मंगल	17/06/2017 23:39
राहु	19/06/2017 00:29

बुध - सूर्य - शुक्र - शनि	
19/06/2017 00:29	
27/06/2017 05:07	
शनि	20/06/2017 07:37
बुध	21/06/2017 11:29
केतु	21/06/2017 22:57
शुक्र	23/06/2017 07:43
सूर्य	23/06/2017 17:33
चंद्र	24/06/2017 09:56
मंगल	24/06/2017 21:24
राहु	26/06/2017 02:54
गुरु	27/06/2017 05:07

बुध - सूर्य - शुक्र - बुध	
27/06/2017 05:07	
04/07/2017 13:03	
बुध	28/06/2017 06:02
केतु	28/06/2017 16:18
शुक्र	29/06/2017 21:37
सूर्य	30/06/2017 06:25
चंद्र	30/06/2017 21:05
मंगल	01/07/2017 07:20
राहु	02/07/2017 09:44
गुरु	03/07/2017 09:11
शनि	04/07/2017 13:03

बुध - सूर्य - शुक्र - केतु	
04/07/2017 13:03	
07/07/2017 13:29	
केतु	04/07/2017 17:16
शुक्र	05/07/2017 05:20
सूर्य	05/07/2017 08:58
चंद्र	05/07/2017 15:00
मंगल	05/07/2017 19:14
राहु	06/07/2017 06:06
गुरु	06/07/2017 15:45
शनि	07/07/2017 03:13
बुध	07/07/2017 13:29

बुध - चंद्र - चंद्र - चंद्र	
07/07/2017 13:29	
11/07/2017 03:43	
चंद्र	07/07/2017 20:40
मंगल	08/07/2017 01:42
राहु	08/07/2017 14:38
गुरु	09/07/2017 02:08
शनि	09/07/2017 15:47
बुध	10/07/2017 04:00
केतु	10/07/2017 09:02
शुक्र	10/07/2017 23:25
सूर्य	11/07/2017 03:43

बुध - चंद्र - चंद्र - मंगल	
11/07/2017 03:43	
13/07/2017 16:05	
मंगल	11/07/2017 07:15
राहु	11/07/2017 16:18
गुरु	12/07/2017 00:21
शनि	12/07/2017 09:54
बुध	12/07/2017 18:28
केतु	12/07/2017 21:59
शुक्र	13/07/2017 08:03
सूर्य	13/07/2017 11:04
चंद्र	13/07/2017 16:05

बुध - चंद्र - चंद्र - राहु	
13/07/2017 16:05	
20/07/2017 03:19	
राहु	14/07/2017 15:23
गुरु	15/07/2017 12:04
शनि	16/07/2017 12:39
बुध	17/07/2017 10:39
केतु	17/07/2017 19:42
शुक्र	18/07/2017 21:34
सूर्य	19/07/2017 05:20
चंद्र	19/07/2017 18:16
मंगल	20/07/2017 03:19

बुध - चंद्र - चंद्र - गुरु	
20/07/2017 03:19	
25/07/2017 21:18	
गुरु	20/07/2017 21:43
शनि	21/07/2017 19:34
बुध	22/07/2017 15:07
केतु	22/07/2017 23:10
शुक्र	23/07/2017 22:10
सूर्य	24/07/2017 05:04
चंद्र	24/07/2017 16:34
मंगल	25/07/2017 00:36
राहु	25/07/2017 21:18

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 7 मास 13 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
02/03/1986		14/10/1989		14/10/2001		14/10/2014		14/10/2028	
14/10/1989		14/10/2001		14/10/2014		14/10/2028		15/10/2043	
	00/00/0000	मंगल	11/01/1991	गुरु	30/03/2003	शनि	22/06/2016	केतु	22/09/2030
	00/00/0000	गुरु	16/05/1992	शनि	23/10/2004	केतु	15/04/2018	चंद्र	17/10/2032
	00/00/0000	शनि	27/10/1993	केतु	29/06/2006	चंद्र	20/03/2020	बुध	29/12/2034
	00/00/0000	केतु	16/05/1995	चंद्र	14/04/2008	बुध	08/04/2022	शुक्र	27/04/2037
	02/03/1986	चंद्र	10/01/1997	बुध	11/03/2010	शुक्र	10/06/2024	सूर्य	29/09/2038
चंद्र	20/06/1986	बुध	14/10/1998	शुक्र	17/03/2012	सूर्य	08/10/2025	मंगल	17/04/2040
बुध	30/01/1988	शुक्र	24/08/2000	सूर्य	10/06/2013	मंगल	21/03/2027	गुरु	22/12/2041
शुक्र	14/10/1989	सूर्य	14/10/2001	मंगल	14/10/2014	गुरु	14/10/2028	शनि	15/10/2043

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
15/10/2043		15/10/2059		14/10/2076		14/10/2094	
15/10/2059		14/10/2076		14/10/2094		00/00/0000	
चंद्र	29/12/2045	बुध	12/04/2062	शुक्र	31/07/2079	सूर्य	30/10/2095
बुध	03/05/2048	शुक्र	30/11/2064	सूर्य	14/04/2081	मंगल	19/12/2096
शुक्र	27/10/2050	सूर्य	12/07/2066	मंगल	24/02/2083	गुरु	14/03/2098
सूर्य	03/05/2052	मंगल	14/04/2068	गुरु	01/03/2085	शनि	12/07/2099
मंगल	29/12/2053	गुरु	11/03/2070	शनि	04/05/2087	केतु	14/12/2100
गुरु	15/10/2055	शनि	29/03/2072	केतु	31/08/2089	चंद्र	03/03/2102
शनि	19/09/2057	केतु	10/06/2074	चंद्र	24/02/2092		00/00/0000
केतु	15/10/2059	चंद्र	14/10/2076	बुध	14/10/2094		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु	
02/03/1986		20/06/1986		30/01/1988		14/10/1989		11/01/1991	
20/06/1986		30/01/1988		14/10/1989		11/01/1991		16/05/1992	
	00/00/0000	बुध	14/09/1986	शुक्र	05/05/1988	मंगल	30/11/1989	गुरु	07/03/1991
	00/00/0000	शुक्र	14/12/1986	सूर्य	04/07/1988	गुरु	20/01/1990	शनि	05/05/1991
	00/00/0000	सूर्य	08/02/1987	मंगल	06/09/1988	शनि	16/03/1990	केतु	07/07/1991
	00/00/0000	मंगल	10/04/1987	गुरु	15/11/1988	केतु	13/05/1990	चंद्र	13/09/1991
	00/00/0000	गुरु	15/06/1987	शनि	29/01/1989	चंद्र	15/07/1990	बुध	24/11/1991
	02/03/1986	शनि	25/08/1987	केतु	20/04/1989	बुध	19/09/1990	शुक्र	08/02/1992
शनि	09/04/1986	केतु	09/11/1987	चंद्र	15/07/1989	शुक्र	29/11/1990	सूर्य	26/03/1992
केतु	20/06/1986	चंद्र	30/01/1988	बुध	14/10/1989	सूर्य	11/01/1991	मंगल	16/05/1992

मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र	
16/05/1992		27/10/1993		16/05/1995		10/01/1997		14/10/1998	
27/10/1993		16/05/1995		10/01/1997		14/10/1998		24/08/2000	
शनि	19/07/1992	केतु	08/01/1994	चंद्र	08/08/1995	बुध	14/04/1997	शुक्र	28/01/1999
केतु	25/09/1992	चंद्र	27/03/1994	बुध	04/11/1995	शुक्र	23/07/1997	सूर्य	02/04/1999
चंद्र	07/12/1992	बुध	18/06/1994	शुक्र	06/02/1996	सूर्य	22/09/1997	मंगल	12/06/1999
बुध	22/02/1993	शुक्र	14/09/1994	सूर्य	04/04/1996	मंगल	27/11/1997	गुरु	27/08/1999
शुक्र	16/05/1993	सूर्य	07/11/1994	मंगल	05/06/1996	गुरु	07/02/1998	शनि	17/11/1999
सूर्य	05/07/1993	मंगल	05/01/1995	गुरु	12/08/1996	शनि	26/04/1998	केतु	13/02/2000
मंगल	28/08/1993	गुरु	09/03/1995	शनि	24/10/1996	केतु	18/07/1998	चंद्र	17/05/2000
गुरु	27/10/1993	शनि	16/05/1995	केतु	10/01/1997	चंद्र	14/10/1998	बुध	24/08/2000

मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र	
24/08/2000		14/10/2001		30/03/2003		23/10/2004		29/06/2006	
14/10/2001		30/03/2003		23/10/2004		29/06/2006		14/04/2008	
सूर्य	03/10/2000	गुरु	13/12/2001	शनि	07/06/2003	केतु	11/01/2005	चंद्र	28/09/2006
मंगल	15/11/2000	शनि	15/02/2002	केतु	20/08/2003	चंद्र	05/04/2005	बुध	02/01/2007
गुरु	31/12/2000	केतु	25/04/2002	चंद्र	08/11/2003	बुध	04/07/2005	शुक्र	13/04/2007
शनि	20/02/2001	चंद्र	07/07/2002	बुध	31/01/2004	शुक्र	08/10/2005	सूर्य	14/06/2007
केतु	14/04/2001	बुध	23/09/2002	शुक्र	28/04/2004	सूर्य	05/12/2005	मंगल	21/08/2007
चंद्र	11/06/2001	शुक्र	15/12/2002	सूर्य	22/06/2004	मंगल	06/02/2006	गुरु	02/11/2007
बुध	11/08/2001	सूर्य	03/02/2003	मंगल	20/08/2004	गुरु	16/04/2006	शनि	21/01/2008
शुक्र	14/10/2001	मंगल	30/03/2003	गुरु	23/10/2004	शनि	29/06/2006	केतु	14/04/2008

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि	
14/04/2008		11/03/2010		17/03/2012		10/06/2013		14/10/2014	
11/03/2010		17/03/2012		10/06/2013		14/10/2014		22/06/2016	
बुध	25/07/2008	शुक्र	03/07/2010	सूर्य	29/04/2012	मंगल	31/07/2013	शनि	28/12/2014
शुक्र	10/11/2008	सूर्य	11/09/2010	मंगल	14/06/2012	गुरु	24/09/2013	केतु	18/03/2015
सूर्य	15/01/2009	मंगल	27/11/2010	गुरु	04/08/2012	शनि	22/11/2013	चंद्र	11/06/2015
मंगल	28/03/2009	गुरु	17/02/2011	शनि	27/09/2012	केतु	25/01/2014	बुध	09/09/2015
गुरु	14/06/2009	शनि	17/05/2011	केतु	24/11/2012	चंद्र	03/04/2014	शुक्र	14/12/2015
शनि	06/09/2009	केतु	20/08/2011	चंद्र	25/01/2013	बुध	14/06/2014	सूर्य	10/02/2016
केतु	05/12/2009	चंद्र	30/11/2011	बुध	01/04/2013	शुक्र	29/08/2014	मंगल	14/04/2016
चंद्र	11/03/2010	बुध	17/03/2012	शुक्र	10/06/2013	सूर्य	14/10/2014	गुरु	22/06/2016

शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
22/06/2016		15/04/2018		20/03/2020		08/04/2022		10/06/2024	
15/04/2018		20/03/2020		08/04/2022		10/06/2024		08/10/2025	
केतु	16/09/2016	चंद्र	21/07/2018	बुध	08/07/2020	शुक्र	10/08/2022	सूर्य	26/07/2024
चंद्र	16/12/2016	बुध	01/11/2018	शुक्र	01/11/2020	सूर्य	24/10/2022	मंगल	14/09/2024
बुध	23/03/2017	शुक्र	19/02/2019	सूर्य	11/01/2021	मंगल	14/01/2023	गुरु	07/11/2024
शुक्र	04/07/2017	सूर्य	27/04/2019	मंगल	30/03/2021	गुरु	13/04/2023	शनि	05/01/2025
सूर्य	04/09/2017	मंगल	09/07/2019	गुरु	22/06/2021	शनि	18/07/2023	केतु	09/03/2025
मंगल	12/11/2017	गुरु	26/09/2019	शनि	20/09/2021	केतु	28/10/2023	चंद्र	14/05/2025
गुरु	25/01/2018	शनि	20/12/2019	केतु	26/12/2021	चंद्र	15/02/2024	बुध	25/07/2025
शनि	15/04/2018	केतु	20/03/2020	चंद्र	08/04/2022	बुध	10/06/2024	शुक्र	08/10/2025

शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध	
08/10/2025		21/03/2027		14/10/2028		22/09/2030		17/10/2032	
21/03/2027		14/10/2028		22/09/2030		17/10/2032		29/12/2034	
मंगल	02/12/2025	गुरु	24/05/2027	केतु	13/01/2029	चंद्र	05/01/2031	बुध	12/02/2033
गुरु	30/01/2026	शनि	01/08/2027	चंद्र	21/04/2029	बुध	25/04/2031	शुक्र	16/06/2033
शनि	04/04/2026	केतु	14/10/2027	बुध	03/08/2029	शुक्र	21/08/2031	सूर्य	31/08/2033
केतु	11/06/2026	चंद्र	01/01/2028	शुक्र	21/11/2029	सूर्य	31/10/2031	मंगल	22/11/2033
चंद्र	23/08/2026	बुध	25/03/2028	सूर्य	27/01/2030	मंगल	17/01/2032	गुरु	20/02/2034
बुध	09/11/2026	शुक्र	22/06/2028	मंगल	10/04/2030	गुरु	11/04/2032	शनि	28/05/2034
शुक्र	30/01/2027	सूर्य	16/08/2028	गुरु	29/06/2030	शनि	11/07/2032	केतु	09/09/2034
सूर्य	21/03/2027	मंगल	14/10/2028	शनि	22/09/2030	केतु	17/10/2032	चंद्र	29/12/2034

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
29/12/2034		27/04/2037		29/09/2038		17/04/2040		22/12/2041	
27/04/2037		29/09/2038		17/04/2040		22/12/2041		15/10/2043	
शुक्र	10/05/2035	सूर्य	15/06/2037	मंगल	26/11/2038	गुरु	25/06/2040	शनि	12/03/2042
सूर्य	29/07/2035	मंगल	08/08/2037	गुरु	29/01/2039	शनि	07/09/2040	केतु	06/06/2042
मंगल	25/10/2035	गुरु	05/10/2037	शनि	07/04/2039	केतु	26/11/2040	चंद्र	05/09/2042
गुरु	29/01/2036	शनि	07/12/2037	केतु	19/06/2039	चंद्र	18/02/2041	बुध	11/12/2042
शनि	10/05/2036	केतु	12/02/2038	चंद्र	06/09/2039	बुध	19/05/2041	शुक्र	23/03/2043
केतु	28/08/2036	चंद्र	25/04/2038	बुध	28/11/2039	शुक्र	23/08/2041	सूर्य	25/05/2043
चंद्र	23/12/2036	बुध	10/07/2038	शुक्र	24/02/2040	सूर्य	20/10/2041	मंगल	01/08/2043
बुध	27/04/2037	शुक्र	29/09/2038	सूर्य	17/04/2040	मंगल	22/12/2041	गुरु	15/10/2043

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
15/10/2043		29/12/2045		03/05/2048		27/10/2050		03/05/2052	
29/12/2045		03/05/2048		27/10/2050		03/05/2052		29/12/2053	
चंद्र	03/02/2044	बुध	03/05/2046	शुक्र	21/09/2048	सूर्य	18/12/2050	मंगल	05/07/2052
बुध	31/05/2044	शुक्र	13/09/2046	सूर्य	16/12/2048	मंगल	14/02/2051	गुरु	10/09/2052
शुक्र	03/10/2044	सूर्य	03/12/2046	मंगल	20/03/2049	गुरु	17/04/2051	शनि	22/11/2052
सूर्य	18/12/2044	मंगल	02/03/2047	गुरु	29/06/2049	शनि	23/06/2051	केतु	09/02/2053
मंगल	12/03/2045	गुरु	06/06/2047	शनि	17/10/2049	केतु	02/09/2051	चंद्र	03/05/2053
गुरु	10/06/2045	शनि	17/09/2047	केतु	11/02/2050	चंद्र	18/11/2051	बुध	31/07/2053
शनि	15/09/2045	केतु	06/01/2048	चंद्र	16/06/2050	बुध	07/02/2052	शुक्र	01/11/2053
केतु	29/12/2045	चंद्र	03/05/2048	बुध	27/10/2050	शुक्र	03/05/2052	सूर्य	29/12/2053

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
29/12/2053		15/10/2055		19/09/2057		15/10/2059		12/04/2062	
15/10/2055		19/09/2057		15/10/2059		12/04/2062		30/11/2064	
गुरु	12/03/2054	शनि	08/01/2056	केतु	26/12/2057	बुध	25/02/2060	शुक्र	08/09/2062
शनि	30/05/2054	केतु	08/04/2056	चंद्र	09/04/2058	शुक्र	15/07/2060	सूर्य	08/12/2062
केतु	23/08/2054	चंद्र	14/07/2056	बुध	29/07/2058	सूर्य	09/10/2060	मंगल	18/03/2063
चंद्र	21/11/2054	बुध	26/10/2056	शुक्र	23/11/2058	मंगल	12/01/2061	गुरु	04/07/2063
बुध	25/02/2055	शुक्र	12/02/2057	सूर्य	03/02/2059	गुरु	24/04/2061	शनि	28/10/2063
शुक्र	07/06/2055	सूर्य	20/04/2057	मंगल	22/04/2059	शनि	11/08/2061	केतु	01/03/2064
सूर्य	08/08/2055	मंगल	02/07/2057	गुरु	15/07/2059	केतु	07/12/2061	चंद्र	12/07/2064
मंगल	15/10/2055	गुरु	19/09/2057	शनि	15/10/2059	चंद्र	12/04/2062	बुध	30/11/2064

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य	
30/11/2064	
12/07/2066	
सूर्य	25/01/2065
मंगल	27/03/2065
गुरु	01/06/2065
शनि	11/08/2065
केतु	26/10/2065
चंद्र	15/01/2066
बुध	12/04/2066
शुक्र	12/07/2066

बुध - मंगल	
12/07/2066	
14/04/2068	
मंगल	16/09/2066
गुरु	27/11/2066
शनि	13/02/2067
केतु	07/05/2067
चंद्र	03/08/2067
बुध	06/11/2067
शुक्र	13/02/2068
सूर्य	14/04/2068

बुध - गुरु	
14/04/2068	
11/03/2070	
गुरु	01/07/2068
शनि	23/09/2068
केतु	22/12/2068
चंद्र	28/03/2069
बुध	08/07/2069
शुक्र	24/10/2069
सूर्य	29/12/2069
मंगल	11/03/2070

बुध - शनि	
11/03/2070	
29/03/2072	
शनि	10/06/2070
केतु	14/09/2070
चंद्र	27/12/2070
बुध	16/04/2071
शुक्र	10/08/2071
सूर्य	20/10/2071
मंगल	05/01/2072
गुरु	29/03/2072

बुध - केतु	
29/03/2072	
10/06/2074	
केतु	11/07/2072
चंद्र	30/10/2072
बुध	25/02/2073
शुक्र	29/06/2073
सूर्य	13/09/2073
मंगल	06/12/2073
गुरु	05/03/2074
शनि	10/06/2074

बुध - चंद्र	
10/06/2074	
14/10/2076	
चंद्र	07/10/2074
बुध	09/02/2075
शुक्र	22/06/2075
सूर्य	11/09/2075
मंगल	09/12/2075
गुरु	14/03/2076
शनि	25/06/2076
केतु	14/10/2076

शुक्र - शुक्र	
14/10/2076	
31/07/2079	
शुक्र	21/03/2077
सूर्य	26/06/2077
मंगल	09/10/2077
गुरु	01/02/2078
शनि	04/06/2078
केतु	14/10/2078
चंद्र	04/03/2079
बुध	31/07/2079

शुक्र - सूर्य	
31/07/2079	
14/04/2081	
सूर्य	28/09/2079
मंगल	02/12/2079
गुरु	10/02/2080
शनि	25/04/2080
केतु	14/07/2080
चंद्र	08/10/2080
बुध	08/01/2081
शुक्र	14/04/2081

शुक्र - मंगल	
14/04/2081	
24/02/2083	
मंगल	24/06/2081
गुरु	08/09/2081
शनि	29/11/2081
केतु	25/02/2082
चंद्र	30/05/2082
बुध	07/09/2082
शुक्र	21/12/2082
सूर्य	24/02/2083

शुक्र - गुरु	
24/02/2083	
01/03/2085	
गुरु	17/05/2083
शनि	14/08/2083
केतु	17/11/2083
चंद्र	27/02/2084
बुध	14/06/2084
शुक्र	06/10/2084
सूर्य	15/12/2084
मंगल	01/03/2085

शुक्र - शनि	
01/03/2085	
04/05/2087	
शनि	05/06/2085
केतु	16/09/2085
चंद्र	03/01/2086
बुध	29/04/2086
शुक्र	31/08/2086
सूर्य	14/11/2086
मंगल	04/02/2087
गुरु	04/05/2087

शुक्र - केतु	
04/05/2087	
31/08/2089	
केतु	22/08/2087
चंद्र	17/12/2087
बुध	20/04/2088
शुक्र	30/08/2088
सूर्य	18/11/2088
मंगल	14/02/2089
गुरु	20/05/2089
शनि	31/08/2089

शुक्र - चंद्र	
31/08/2089	
24/02/2092	
चंद्र	03/01/2090
बुध	16/05/2090
शुक्र	04/10/2090
सूर्य	29/12/2090
मंगल	02/04/2091
गुरु	12/07/2091
शनि	30/10/2091
केतु	24/02/2092

शुक्र - बुध	
24/02/2092	
14/10/2094	
बुध	14/07/2092
शुक्र	11/12/2092
सूर्य	12/03/2093
मंगल	20/06/2093
गुरु	06/10/2093
शनि	30/01/2094
केतु	03/06/2094
चंद्र	14/10/2094

सूर्य - सूर्य	
14/10/2094	
30/10/2095	
सूर्य	19/11/2094
मंगल	29/12/2094
गुरु	10/02/2095
शनि	28/03/2095
केतु	16/05/2095
चंद्र	07/07/2095
बुध	01/09/2095
शुक्र	30/10/2095

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 3 वर्ष 6 मास 3 दिन

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
02/03/1986		04/09/1989		06/05/2002		04/09/2013		06/05/2018	
04/09/1989		06/05/2002		04/09/2013		06/05/2018		05/09/2031	
	00/00/0000	शनि	07/09/1991	बुध	13/12/2003	केतु	12/12/2013	शुक्र	25/07/2020
	00/00/0000	बुध	23/06/1993	केतु	10/08/2004	शुक्र	23/09/2014	सूर्य	26/03/2021
	00/00/0000	केतु	20/03/1994	शुक्र	01/07/2006	सूर्य	17/12/2014	चंद्र	06/05/2022
	00/00/0000	शुक्र	29/04/1996	सूर्य	24/01/2007	चंद्र	08/05/2015	मंगल	14/02/2023
	02/03/1986	सूर्य	16/12/1996	चंद्र	04/01/2008	मंगल	15/08/2015	राहु	13/02/2025
सूर्य	26/07/1986	चंद्र	06/01/1998	मंगल	02/09/2008	राहु	27/04/2016	गुरु	24/11/2026
चंद्र	15/06/1987	मंगल	03/10/1998	राहु	16/05/2010	गुरु	10/12/2016	शनि	04/01/2029
मंगल	29/01/1988	राहु	27/08/2000	गुरु	19/11/2011	शनि	06/09/2017	बुध	24/11/2030
राहु	04/09/1989	गुरु	06/05/2002	शनि	04/09/2013	बुध	06/05/2018	केतु	05/09/2031

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
05/09/2031		05/09/2035		06/05/2042		04/01/2047		04/01/2059	
05/09/2035		06/05/2042		04/01/2047		04/01/2059		00/00/0000	
सूर्य	17/11/2031	चंद्र	25/03/2036	मंगल	13/08/2042	राहु	22/10/2048	गुरु	06/06/2060
चंद्र	17/03/2032	मंगल	14/08/2036	राहु	26/04/2043	गुरु	30/05/2050	शनि	13/02/2062
मंगल	11/06/2032	राहु	15/08/2037	गुरु	09/12/2043	शनि	23/04/2052	बुध	19/08/2063
राहु	16/01/2033	गुरु	05/07/2038	शनि	04/09/2044	बुध	04/01/2054	केतु	03/04/2064
गुरु	30/07/2033	शनि	26/07/2039	बुध	03/05/2045	केतु	16/09/2054	शुक्र	12/01/2066
शनि	18/03/2034	बुध	05/07/2040	केतु	11/08/2045	शुक्र	16/09/2056	सूर्य	02/03/2066
बुध	11/10/2034	केतु	24/11/2040	शुक्र	22/05/2046	सूर्य	23/04/2057		00/00/0000
केतु	04/01/2035	शुक्र	04/01/2042	सूर्य	15/08/2046	चंद्र	23/04/2058		00/00/0000
शुक्र	05/09/2035	सूर्य	06/05/2042	चंद्र	04/01/2047	मंगल	04/01/2059		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
02/03/1986		26/07/1986		15/06/1987		29/01/1988		04/09/1989	
26/07/1986		15/06/1987		29/01/1988		04/09/1989		07/09/1991	
	00/00/0000	चंद्र	22/08/1986	मंगल	29/06/1987	राहु	25/04/1988	शनि	29/12/1989
	00/00/0000	मंगल	10/09/1986	राहु	02/08/1987	गुरु	12/07/1988	बुध	12/04/1990
	02/03/1986	राहु	28/10/1986	गुरु	01/09/1987	शनि	13/10/1988	केतु	25/05/1990
राहु	19/03/1986	गुरु	11/12/1986	शनि	07/10/1987	बुध	04/01/1989	शुक्र	24/09/1990
गुरु	14/04/1986	शनि	31/01/1987	बुध	08/11/1987	केतु	07/02/1989	सूर्य	30/10/1990
शनि	15/05/1986	बुध	18/03/1987	केतु	21/11/1987	शुक्र	15/05/1989	चंद्र	30/12/1990
बुध	12/06/1986	केतु	06/04/1987	शुक्र	29/12/1987	सूर्य	13/06/1989	मंगल	11/02/1991
केतु	23/06/1986	शुक्र	30/05/1987	सूर्य	10/01/1988	चंद्र	01/08/1989	राहु	01/06/1991
शुक्र	26/07/1986	सूर्य	15/06/1987	चंद्र	29/01/1988	मंगल	04/09/1989	गुरु	07/09/1991

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
07/09/1991		23/06/1993		20/03/1994		29/04/1996		16/12/1996	
23/06/1993		20/03/1994		29/04/1996		16/12/1996		06/01/1998	
बुध	08/12/1991	केतु	09/07/1993	शुक्र	26/07/1994	सूर्य	11/05/1996	चंद्र	17/01/1997
केतु	16/01/1992	शुक्र	23/08/1993	सूर्य	03/09/1994	चंद्र	30/05/1996	मंगल	09/02/1997
शुक्र	04/05/1992	सूर्य	05/09/1993	चंद्र	06/11/1994	मंगल	12/06/1996	राहु	08/04/1997
सूर्य	06/06/1992	चंद्र	28/09/1993	मंगल	21/12/1994	राहु	17/07/1996	गुरु	29/05/1997
चंद्र	30/07/1992	मंगल	13/10/1993	राहु	16/04/1995	गुरु	17/08/1996	शनि	29/07/1997
मंगल	06/09/1992	राहु	23/11/1993	गुरु	28/07/1995	शनि	22/09/1996	बुध	22/09/1997
राहु	14/12/1992	गुरु	29/12/1993	शनि	27/11/1995	बुध	25/10/1996	केतु	14/10/1997
गुरु	11/03/1993	शनि	10/02/1994	बुध	15/03/1996	केतु	08/11/1996	शुक्र	18/12/1997
शनि	23/06/1993	बुध	20/03/1994	केतु	29/04/1996	शुक्र	16/12/1996	सूर्य	06/01/1998

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
06/01/1998		03/10/1998		27/08/2000		06/05/2002		13/12/2003	
03/10/1998		27/08/2000		06/05/2002		13/12/2003		10/08/2004	
मंगल	22/01/1998	राहु	15/01/1999	गुरु	17/11/2000	बुध	28/07/2002	केतु	27/12/2003
राहु	03/03/1998	गुरु	17/04/1999	शनि	23/02/2001	केतु	31/08/2002	शुक्र	05/02/2004
गुरु	08/04/1998	शनि	05/08/1999	बुध	21/05/2001	शुक्र	07/12/2002	सूर्य	17/02/2004
शनि	21/05/1998	बुध	12/11/1999	केतु	26/06/2001	सूर्य	05/01/2003	चंद्र	08/03/2004
बुध	28/06/1998	केतु	22/12/1999	शुक्र	07/10/2001	चंद्र	23/02/2003	मंगल	23/03/2004
केतु	14/07/1998	शुक्र	16/04/2000	सूर्य	07/11/2001	मंगल	29/03/2003	राहु	28/04/2004
शुक्र	28/08/1998	सूर्य	20/05/2000	चंद्र	28/12/2001	राहु	25/06/2003	गुरु	30/05/2004
सूर्य	10/09/1998	चंद्र	17/07/2000	मंगल	02/02/2002	गुरु	11/09/2003	शनि	07/07/2004
चंद्र	03/10/1998	मंगल	27/08/2000	राहु	06/05/2002	शनि	13/12/2003	बुध	10/08/2004

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
10/08/2004		01/07/2006		24/01/2007		04/01/2008		02/09/2008	
01/07/2006		24/01/2007		04/01/2008		02/09/2008		16/05/2010	
शुक्र	03/12/2004	सूर्य	12/07/2006	चंद्र	22/02/2007	मंगल	18/01/2008	राहु	04/12/2008
सूर्य	07/01/2005	चंद्र	29/07/2006	मंगल	14/03/2007	राहु	24/02/2008	गुरु	25/02/2009
चंद्र	05/03/2005	मंगल	10/08/2006	राहु	05/05/2007	गुरु	27/03/2008	शनि	03/06/2009
मंगल	15/04/2005	राहु	10/09/2006	गुरु	20/06/2007	शनि	04/05/2008	बुध	30/08/2009
राहु	27/07/2005	गुरु	08/10/2006	शनि	14/08/2007	बुध	07/06/2008	केतु	05/10/2009
गुरु	27/10/2005	शनि	09/11/2006	बुध	01/10/2007	केतु	21/06/2008	शुक्र	17/01/2010
शनि	13/02/2006	बुध	09/12/2006	केतु	22/10/2007	शुक्र	01/08/2008	सूर्य	17/02/2010
बुध	22/05/2006	केतु	21/12/2006	शुक्र	18/12/2007	सूर्य	13/08/2008	चंद्र	09/04/2010
केतु	01/07/2006	शुक्र	24/01/2007	सूर्य	04/01/2008	चंद्र	02/09/2008	मंगल	16/05/2010

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
16/05/2010		19/11/2011		04/09/2013		12/12/2013		23/09/2014	
19/11/2011		04/09/2013		12/12/2013		23/09/2014		17/12/2014	
गुरु	28/07/2010	शनि	01/03/2012	केतु	10/09/2013	शुक्र	29/01/2014	सूर्य	27/09/2014
शनि	24/10/2010	बुध	02/06/2012	शुक्र	26/09/2013	सूर्य	12/02/2014	चंद्र	04/10/2014
बुध	10/01/2011	केतु	10/07/2012	सूर्य	01/10/2013	चंद्र	08/03/2014	मंगल	09/10/2014
केतु	11/02/2011	शुक्र	28/10/2012	चंद्र	10/10/2013	मंगल	24/03/2014	राहु	22/10/2014
शुक्र	14/05/2011	सूर्य	29/11/2012	मंगल	15/10/2013	राहु	06/05/2014	गुरु	02/11/2014
सूर्य	11/06/2011	चंद्र	23/01/2013	राहु	30/10/2013	गुरु	13/06/2014	शनि	16/11/2014
चंद्र	27/07/2011	मंगल	02/03/2013	गुरु	13/11/2013	शनि	28/07/2014	बुध	28/11/2014
मंगल	28/08/2011	राहु	09/06/2013	शनि	28/11/2013	बुध	06/09/2014	केतु	03/12/2014
राहु	19/11/2011	गुरु	04/09/2013	बुध	12/12/2013	केतु	23/09/2014	शुक्र	17/12/2014

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
17/12/2014		08/05/2015		15/08/2015		27/04/2016		10/12/2016	
08/05/2015		15/08/2015		27/04/2016		10/12/2016		06/09/2017	
चंद्र	29/12/2014	मंगल	14/05/2015	राहु	23/09/2015	गुरु	27/05/2016	शनि	22/01/2017
मंगल	06/01/2015	राहु	29/05/2015	गुरु	27/10/2015	शनि	02/07/2016	बुध	01/03/2017
राहु	27/01/2015	गुरु	11/06/2015	शनि	06/12/2015	बुध	03/08/2016	केतु	17/03/2017
गुरु	15/02/2015	शनि	27/06/2015	बुध	11/01/2016	केतु	17/08/2016	शुक्र	01/05/2017
शनि	10/03/2015	बुध	11/07/2015	केतु	26/01/2016	शुक्र	24/09/2016	सूर्य	14/05/2017
बुध	30/03/2015	केतु	16/07/2015	शुक्र	09/03/2016	सूर्य	05/10/2016	चंद्र	06/06/2017
केतु	07/04/2015	शुक्र	02/08/2015	सूर्य	22/03/2016	चंद्र	24/10/2016	मंगल	22/06/2017
शुक्र	01/05/2015	सूर्य	07/08/2015	चंद्र	12/04/2016	मंगल	06/11/2016	राहु	01/08/2017
सूर्य	08/05/2015	चंद्र	15/08/2015	मंगल	27/04/2016	राहु	10/12/2016	गुरु	06/09/2017

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
06/09/2017		06/05/2018		25/07/2020		26/03/2021		06/05/2022	
06/05/2018		25/07/2020		26/03/2021		06/05/2022		14/02/2023	
बुध	10/10/2017	शुक्र	18/09/2018	सूर्य	06/08/2020	चंद्र	29/04/2021	मंगल	22/05/2022
केतु	24/10/2017	सूर्य	28/10/2018	चंद्र	27/08/2020	मंगल	22/05/2021	राहु	04/07/2022
शुक्र	04/12/2017	चंद्र	04/01/2019	मंगल	10/09/2020	राहु	22/07/2021	गुरु	11/08/2022
सूर्य	16/12/2017	मंगल	20/02/2019	राहु	16/10/2020	गुरु	14/09/2021	शनि	25/09/2022
चंद्र	05/01/2018	राहु	22/06/2019	गुरु	18/11/2020	शनि	17/11/2021	बुध	04/11/2022
मंगल	19/01/2018	गुरु	08/10/2019	शनि	26/12/2020	बुध	14/01/2022	केतु	20/11/2022
राहु	24/02/2018	शनि	14/02/2020	बुध	30/01/2021	केतु	07/02/2022	शुक्र	07/01/2023
गुरु	28/03/2018	बुध	08/06/2020	केतु	13/02/2021	शुक्र	15/04/2022	सूर्य	21/01/2023
शनि	06/05/2018	केतु	25/07/2020	शुक्र	26/03/2021	सूर्य	06/05/2022	चंद्र	14/02/2023

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
14/02/2023		13/02/2025		24/11/2026		04/01/2029		24/11/2030	
13/02/2025		24/11/2026		04/01/2029		24/11/2030		05/09/2031	
राहु	03/06/2023	गुरु	11/05/2025	शनि	27/03/2027	बुध	11/04/2029	केतु	11/12/2030
गुरु	09/09/2023	शनि	21/08/2025	बुध	14/07/2027	केतु	22/05/2029	शुक्र	27/01/2031
शनि	02/01/2024	बुध	21/11/2025	केतु	28/08/2027	शुक्र	13/09/2029	सूर्य	11/02/2031
बुध	15/04/2024	केतु	29/12/2025	शुक्र	03/01/2028	सूर्य	18/10/2029	चंद्र	06/03/2031
केतु	27/05/2024	शुक्र	17/04/2026	सूर्य	11/02/2028	चंद्र	14/12/2029	मंगल	23/03/2031
शुक्र	26/09/2024	सूर्य	19/05/2026	चंद्र	15/04/2028	मंगल	24/01/2030	राहु	04/05/2031
सूर्य	02/11/2024	चंद्र	12/07/2026	मंगल	30/05/2028	राहु	07/05/2030	गुरु	11/06/2031
चंद्र	01/01/2025	मंगल	19/08/2026	राहु	23/09/2028	गुरु	07/08/2030	शनि	26/07/2031
मंगल	13/02/2025	राहु	24/11/2026	गुरु	04/01/2029	शनि	24/11/2030	बुध	05/09/2031

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
05/09/2031		17/11/2031		17/03/2032		11/06/2032		16/01/2033	
17/11/2031		17/03/2032		11/06/2032		16/01/2033		30/07/2033	
सूर्य	08/09/2031	चंद्र	27/11/2031	मंगल	22/03/2032	राहु	13/07/2032	गुरु	11/02/2033
चंद्र	14/09/2031	मंगल	04/12/2031	राहु	04/04/2032	गुरु	12/08/2032	शनि	14/03/2033
मंगल	19/09/2031	राहु	22/12/2031	गुरु	15/04/2032	शनि	15/09/2032	बुध	10/04/2033
राहु	29/09/2031	गुरु	07/01/2032	शनि	29/04/2032	बुध	16/10/2032	केतु	21/04/2033
गुरु	09/10/2031	शनि	27/01/2032	बुध	11/05/2032	केतु	29/10/2032	शुक्र	24/05/2033
शनि	21/10/2031	बुध	13/02/2032	केतु	16/05/2032	शुक्र	05/12/2032	सूर्य	03/06/2033
बुध	31/10/2031	केतु	20/02/2032	शुक्र	30/05/2032	सूर्य	16/12/2032	चंद्र	19/06/2033
केतु	04/11/2031	शुक्र	11/03/2032	सूर्य	03/06/2032	चंद्र	03/01/2033	मंगल	30/06/2033
शुक्र	17/11/2031	सूर्य	17/03/2032	चंद्र	11/06/2032	मंगल	16/01/2033	राहु	30/07/2033

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
30/07/2033		18/03/2034		11/10/2034		04/01/2035		05/09/2035	
18/03/2034		11/10/2034		04/01/2035		05/09/2035		25/03/2036	
शनि	04/09/2033	बुध	16/04/2034	केतु	16/10/2034	शुक्र	14/02/2035	चंद्र	21/09/2035
बुध	07/10/2033	केतु	28/04/2034	शुक्र	30/10/2034	सूर्य	26/02/2035	मंगल	03/10/2035
केतु	20/10/2033	शुक्र	02/06/2034	सूर्य	03/11/2034	चंद्र	18/03/2035	राहु	03/11/2035
शुक्र	28/11/2033	सूर्य	12/06/2034	चंद्र	10/11/2034	मंगल	01/04/2035	गुरु	30/11/2035
सूर्य	10/12/2033	चंद्र	29/06/2034	मंगल	15/11/2034	राहु	08/05/2035	शनि	01/01/2036
चंद्र	29/12/2033	मंगल	11/07/2034	राहु	28/11/2034	गुरु	09/06/2035	बुध	30/01/2036
मंगल	11/01/2034	राहु	11/08/2034	गुरु	09/12/2034	शनि	18/07/2035	केतु	10/02/2036
राहु	15/02/2034	गुरु	08/09/2034	शनि	23/12/2034	बुध	21/08/2035	शुक्र	15/03/2036
गुरु	18/03/2034	शनि	11/10/2034	बुध	04/01/2035	केतु	05/09/2035	सूर्य	25/03/2036

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
25/03/2036		14/08/2036		15/08/2037		05/07/2038		26/07/2039	
14/08/2036		15/08/2037		05/07/2038		26/07/2039		05/07/2040	
मंगल	03/04/2036	राहु	08/10/2036	गुरु	27/09/2037	शनि	04/09/2038	बुध	13/09/2039
राहु	24/04/2036	गुरु	26/11/2036	शनि	17/11/2037	बुध	29/10/2038	केतु	03/10/2039
गुरु	13/05/2036	शनि	23/01/2037	बुध	02/01/2038	केतु	21/11/2038	शुक्र	29/11/2039
शनि	04/06/2036	बुध	16/03/2037	केतु	21/01/2038	शुक्र	24/01/2039	सूर्य	17/12/2039
बुध	25/06/2036	केतु	06/04/2037	शुक्र	16/03/2038	सूर्य	12/02/2039	चंद्र	14/01/2040
केतु	03/07/2036	शुक्र	06/06/2037	सूर्य	02/04/2038	चंद्र	16/03/2039	मंगल	04/02/2040
शुक्र	27/07/2036	सूर्य	24/06/2037	चंद्र	29/04/2038	मंगल	08/04/2039	राहु	26/03/2040
सूर्य	03/08/2036	चंद्र	24/07/2037	मंगल	18/05/2038	राहु	05/06/2039	गुरु	11/05/2040
चंद्र	14/08/2036	मंगल	15/08/2037	राहु	05/07/2038	गुरु	26/07/2039	शनि	05/07/2040

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
05/07/2040		24/11/2040		04/01/2042		06/05/2042		13/08/2042	
24/11/2040		04/01/2042		06/05/2042		13/08/2042		26/04/2043	
केतु	13/07/2040	शुक्र	31/01/2041	सूर्य	10/01/2042	मंगल	11/05/2042	राहु	20/09/2042
शुक्र	06/08/2040	सूर्य	20/02/2041	चंद्र	20/01/2042	राहु	26/05/2042	गुरु	24/10/2042
सूर्य	13/08/2040	चंद्र	26/03/2041	मंगल	27/01/2042	गुरु	08/06/2042	शनि	04/12/2042
चंद्र	25/08/2040	मंगल	18/04/2041	राहु	14/02/2042	शनि	24/06/2042	बुध	09/01/2043
मंगल	02/09/2040	राहु	18/06/2041	गुरु	03/03/2042	बुध	08/07/2042	केतु	24/01/2043
राहु	23/09/2040	गुरु	11/08/2041	शनि	22/03/2042	केतु	14/07/2042	शुक्र	08/03/2043
गुरु	12/10/2040	शनि	15/10/2041	बुध	08/04/2042	शुक्र	31/07/2042	सूर्य	20/03/2043
शनि	04/11/2040	बुध	11/12/2041	केतु	15/04/2042	सूर्य	05/08/2042	चंद्र	11/04/2043
बुध	24/11/2040	केतु	04/01/2042	शुक्र	06/05/2042	चंद्र	13/08/2042	मंगल	26/04/2043

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
26/04/2043		09/12/2043		04/09/2044		03/05/2045		11/08/2045	
09/12/2043		04/09/2044		03/05/2045		11/08/2045		22/05/2046	
गुरु	26/05/2043	शनि	21/01/2044	बुध	08/10/2044	केतु	09/05/2045	शुक्र	27/09/2045
शनि	01/07/2043	बुध	28/02/2044	केतु	22/10/2044	शुक्र	26/05/2045	सूर्य	11/10/2045
बुध	02/08/2043	केतु	15/03/2044	शुक्र	01/12/2044	सूर्य	31/05/2045	चंद्र	04/11/2045
केतु	15/08/2043	शुक्र	29/04/2044	सूर्य	13/12/2044	चंद्र	08/06/2045	मंगल	20/11/2045
शुक्र	22/09/2043	सूर्य	12/05/2044	चंद्र	03/01/2045	मंगल	14/06/2045	राहु	02/01/2046
सूर्य	04/10/2043	चंद्र	04/06/2044	मंगल	17/01/2045	राहु	29/06/2045	गुरु	09/02/2046
चंद्र	23/10/2043	मंगल	19/06/2044	राहु	22/02/2045	गुरु	12/07/2045	शनि	26/03/2046
मंगल	05/11/2043	राहु	30/07/2044	गुरु	26/03/2045	शनि	28/07/2045	बुध	05/05/2046
राहु	09/12/2043	गुरु	04/09/2044	शनि	03/05/2045	बुध	11/08/2045	केतु	22/05/2046

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
22/05/2046		15/08/2046		04/01/2047		22/10/2048		30/05/2050	
15/08/2046		04/01/2047		22/10/2048		30/05/2050		23/04/2052	
सूर्य	26/05/2046	चंद्र	27/08/2046	राहु	13/04/2047	गुरु	08/01/2049	शनि	17/09/2050
चंद्र	02/06/2046	मंगल	04/09/2046	गुरु	09/07/2047	शनि	11/04/2049	बुध	24/12/2050
मंगल	07/06/2046	राहु	25/09/2046	शनि	21/10/2047	बुध	03/07/2049	केतु	03/02/2051
राहु	20/06/2046	गुरु	14/10/2046	बुध	23/01/2048	केतु	06/08/2049	शुक्र	29/05/2051
गुरु	01/07/2046	शनि	06/11/2046	केतु	01/03/2048	शुक्र	11/11/2049	सूर्य	03/07/2051
शनि	15/07/2046	बुध	26/11/2046	शुक्र	18/06/2048	सूर्य	10/12/2049	चंद्र	30/08/2051
बुध	27/07/2046	केतु	04/12/2046	सूर्य	21/07/2048	चंद्र	28/01/2050	मंगल	09/10/2051
केतु	01/08/2046	शुक्र	28/12/2046	चंद्र	14/09/2048	मंगल	03/03/2050	राहु	21/01/2052
शुक्र	15/08/2046	सूर्य	04/01/2047	मंगल	22/10/2048	राहु	30/05/2050	गुरु	23/04/2052

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
23/04/2052		04/01/2054		16/09/2054		16/09/2056		23/04/2057	
04/01/2054		16/09/2054		16/09/2056		23/04/2057		23/04/2058	
बुध	20/07/2052	केतु	19/01/2054	शुक्र	16/01/2055	सूर्य	27/09/2056	चंद्र	24/05/2057
केतु	25/08/2052	शुक्र	02/03/2054	सूर्य	22/02/2055	चंद्र	15/10/2056	मंगल	14/06/2057
शुक्र	07/12/2052	सूर्य	15/03/2054	चंद्र	24/04/2055	मंगल	28/10/2056	राहु	08/08/2057
सूर्य	07/01/2053	चंद्र	05/04/2054	मंगल	05/06/2055	राहु	30/11/2056	गुरु	25/09/2057
चंद्र	27/02/2053	मंगल	20/04/2054	राहु	23/09/2055	गुरु	29/12/2056	शनि	22/11/2057
मंगल	05/04/2053	राहु	29/05/2054	गुरु	29/12/2055	शनि	02/02/2057	बुध	13/01/2058
राहु	07/07/2053	गुरु	02/07/2054	शनि	23/04/2056	बुध	05/03/2057	केतु	03/02/2058
गुरु	27/09/2053	शनि	11/08/2054	बुध	04/08/2056	केतु	18/03/2057	शुक्र	05/04/2058
शनि	04/01/2054	बुध	16/09/2054	केतु	16/09/2056	शुक्र	23/04/2057	सूर्य	23/04/2058

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 14 वर्ष 1 मास 23 दिन

बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
02/03/1986		25/04/2000		25/04/2010		25/04/2029		25/04/2041	
25/04/2000		25/04/2010		25/04/2029		25/04/2041		25/04/2062	
	02/03/1986	शनि	29/03/2001	गुरु	28/08/2013	राहु	25/08/2030	शुक्र	25/05/2045
शनि	26/07/1987	गुरु	31/12/2002	राहु	08/10/2015	शुक्र	24/12/2032	सूर्य	25/07/2046
गुरु	22/07/1990	राहु	10/02/2004	शुक्र	19/06/2019	सूर्य	25/08/2033	चंद्र	25/06/2049
राहु	11/06/1992	शुक्र	20/01/2006	सूर्य	08/07/2020	चंद्र	25/04/2035	मंगल	14/01/2051
शुक्र	01/10/1995	सूर्य	11/08/2006	चंद्र	27/02/2023	मंगल	15/03/2036	बुध	05/05/2054
सूर्य	10/09/1996	चंद्र	01/01/2008	मंगल	25/07/2024	बुध	03/02/2038	शनि	14/04/2056
चंद्र	21/01/1999	मंगल	27/09/2008	बुध	22/07/2027	शनि	16/03/2039	गुरु	25/12/2059
मंगल	25/04/2000	बुध	25/04/2010	शनि	25/04/2029	गुरु	25/04/2041	राहु	25/04/2062

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
25/04/2062		25/04/2068		25/04/2083		25/04/2091	
25/04/2068		25/04/2083		25/04/2091		00/00/0000	
सूर्य	25/08/2062	चंद्र	26/05/2070	मंगल	28/11/2083	बुध	28/12/2093
चंद्र	25/06/2063	मंगल	05/07/2071	बुध	02/03/2085	शनि	02/03/2094
मंगल	05/12/2063	बुध	14/11/2073	शनि	27/11/2085		00/00/0000
बुध	14/11/2064	शनि	05/04/2075	गुरु	25/04/2087		00/00/0000
शनि	04/06/2065	गुरु	24/11/2077	राहु	15/03/2088		00/00/0000
गुरु	25/06/2066	राहु	26/07/2079	शुक्र	04/10/2089		00/00/0000
राहु	24/02/2067	शुक्र	25/06/2082	सूर्य	16/03/2090		00/00/0000
शुक्र	25/04/2068	सूर्य	25/04/2083	चंद्र	25/04/2091		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
02/03/1986		26/07/1987		22/07/1990		11/06/1992		01/10/1995	
26/07/1987		22/07/1990		11/06/1992		01/10/1995		10/09/1996	
	02/03/1986	गुरु	03/02/1988	राहु	07/10/1990	शुक्र	01/02/1993	सूर्य	21/10/1995
गुरु	31/05/1986	राहु	03/06/1988	शुक्र	18/02/1991	सूर्य	09/04/1993	चंद्र	07/12/1995
राहु	03/08/1986	शुक्र	02/01/1989	सूर्य	28/03/1991	चंद्र	24/09/1993	मंगल	02/01/1996
शुक्र	23/11/1986	सूर्य	03/03/1989	चंद्र	02/07/1991	मंगल	22/12/1993	बुध	25/02/1996
सूर्य	25/12/1986	चंद्र	02/08/1989	मंगल	22/08/1991	बुध	30/06/1994	शनि	28/03/1996
चंद्र	15/03/1987	मंगल	22/10/1989	बुध	09/12/1991	शनि	20/10/1994	गुरु	28/05/1996
मंगल	26/04/1987	बुध	12/04/1990	शनि	11/02/1992	गुरु	20/05/1995	राहु	05/07/1996
बुध	26/07/1987	शनि	22/07/1990	गुरु	11/06/1992	राहु	01/10/1995	शुक्र	10/09/1996

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु	
10/09/1996		21/01/1999		25/04/2000		29/03/2001		31/12/2002	
21/01/1999		25/04/2000		29/03/2001		31/12/2002		10/02/2004	
चंद्र	08/01/1997	मंगल	24/02/1999	शनि	26/05/2000	गुरु	20/07/2001	राहु	14/02/2003
मंगल	13/03/1997	बुध	07/05/1999	गुरु	24/07/2000	राहु	29/09/2001	शुक्र	04/05/2003
बुध	27/07/1997	शनि	19/06/1999	राहु	31/08/2000	शुक्र	01/02/2002	सूर्य	27/05/2003
शनि	15/10/1997	गुरु	08/09/1999	शुक्र	05/11/2000	सूर्य	09/03/2002	चंद्र	22/07/2003
गुरु	15/03/1998	राहु	29/10/1999	सूर्य	24/11/2000	चंद्र	06/06/2002	मंगल	21/08/2003
राहु	19/06/1998	शुक्र	26/01/2000	चंद्र	10/01/2001	मंगल	24/07/2002	बुध	24/10/2003
शुक्र	04/12/1998	सूर्य	21/02/2000	मंगल	04/02/2001	बुध	02/11/2002	शनि	01/12/2003
सूर्य	21/01/1999	चंद्र	25/04/2000	बुध	29/03/2001	शनि	31/12/2002	गुरु	10/02/2004

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
10/02/2004		20/01/2006		11/08/2006		01/01/2008		27/09/2008	
20/01/2006		11/08/2006		01/01/2008		27/09/2008		25/04/2010	
शुक्र	27/06/2004	सूर्य	01/02/2006	चंद्र	21/10/2006	मंगल	21/01/2008	बुध	27/12/2008
सूर्य	06/08/2004	चंद्र	01/03/2006	मंगल	27/11/2006	बुध	03/03/2008	शनि	18/02/2009
चंद्र	12/11/2004	मंगल	16/03/2006	बुध	15/02/2007	शनि	28/03/2008	गुरु	30/05/2009
मंगल	04/01/2005	बुध	17/04/2006	शनि	03/04/2007	गुरु	15/05/2008	राहु	02/08/2009
बुध	26/04/2005	शनि	06/05/2006	गुरु	01/07/2007	राहु	14/06/2008	शुक्र	22/11/2009
शनि	01/07/2005	गुरु	10/06/2006	राहु	27/08/2007	शुक्र	06/08/2008	सूर्य	24/12/2009
गुरु	03/11/2005	राहु	03/07/2006	शुक्र	03/12/2007	सूर्य	21/08/2008	चंद्र	14/03/2010
राहु	20/01/2006	शुक्र	11/08/2006	सूर्य	01/01/2008	चंद्र	27/09/2008	मंगल	25/04/2010

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
25/04/2010		28/08/2013		08/10/2015		19/06/2019		08/07/2020	
28/08/2013		08/10/2015		19/06/2019		08/07/2020		27/02/2023	
गुरु	26/11/2010	राहु	22/11/2013	शुक्र	26/06/2016	सूर्य	10/07/2019	चंद्र	19/11/2020
राहु	11/04/2011	शुक्र	21/04/2014	सूर्य	09/09/2016	चंद्र	01/09/2019	मंगल	29/01/2021
शुक्र	04/12/2011	सूर्य	02/06/2014	चंद्र	16/03/2017	मंगल	30/09/2019	बुध	30/06/2021
सूर्य	10/02/2012	चंद्र	18/09/2014	मंगल	24/06/2017	बुध	30/11/2019	शनि	27/09/2021
चंद्र	28/07/2012	मंगल	14/11/2014	बुध	22/01/2018	शनि	04/01/2020	गुरु	16/03/2022
मंगल	27/10/2012	बुध	15/03/2015	शनि	27/05/2018	गुरु	12/03/2020	राहु	01/07/2022
बुध	07/05/2013	शनि	25/05/2015	गुरु	20/01/2019	राहु	24/04/2020	शुक्र	04/01/2023
शनि	28/08/2013	गुरु	08/10/2015	राहु	19/06/2019	शुक्र	08/07/2020	सूर्य	27/02/2023

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
27/02/2023		25/07/2024		22/07/2027		25/04/2029		25/08/2030	
25/07/2024		22/07/2027		25/04/2029		25/08/2030		24/12/2032	
मंगल	06/04/2023	बुध	13/01/2025	शनि	20/09/2027	राहु	18/06/2029	शुक्र	07/02/2031
बुध	26/06/2023	शनि	24/04/2025	गुरु	11/01/2028	शुक्र	21/09/2029	सूर्य	26/03/2031
शनि	12/08/2023	गुरु	02/11/2025	राहु	22/03/2028	सूर्य	18/10/2029	चंद्र	22/07/2031
गुरु	11/11/2023	राहु	04/03/2026	शुक्र	25/07/2028	चंद्र	24/12/2029	मंगल	23/09/2031
राहु	07/01/2024	शुक्र	02/10/2026	सूर्य	30/08/2028	मंगल	29/01/2030	बुध	05/02/2032
शुक्र	16/04/2024	सूर्य	02/12/2026	चंद्र	27/11/2028	बुध	16/04/2030	शनि	24/04/2032
सूर्य	15/05/2024	चंद्र	02/05/2027	मंगल	14/01/2029	शनि	31/05/2030	गुरु	20/09/2032
चंद्र	25/07/2024	मंगल	22/07/2027	बुध	25/04/2029	गुरु	25/08/2030	राहु	24/12/2032

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
24/12/2032		25/08/2033		25/04/2035		15/03/2036		03/02/2038	
25/08/2033		25/04/2035		15/03/2036		03/02/2038		16/03/2039	
सूर्य	07/01/2033	चंद्र	17/11/2033	मंगल	19/05/2035	बुध	02/07/2036	शनि	13/03/2038
चंद्र	09/02/2033	मंगल	01/01/2034	बुध	10/07/2035	शनि	04/09/2036	गुरु	23/05/2038
मंगल	28/02/2033	बुध	07/04/2034	शनि	09/08/2035	गुरु	03/01/2037	राहु	07/07/2038
बुध	07/04/2033	शनि	02/06/2034	गुरु	05/10/2035	राहु	21/03/2037	शुक्र	24/09/2038
शनि	29/04/2033	गुरु	18/09/2034	राहु	10/11/2035	शुक्र	02/08/2037	सूर्य	16/10/2038
गुरु	11/06/2033	राहु	24/11/2034	शुक्र	12/01/2036	सूर्य	09/09/2037	चंद्र	12/12/2038
राहु	08/07/2033	शुक्र	23/03/2035	सूर्य	30/01/2036	चंद्र	14/12/2037	मंगल	11/01/2039
शुक्र	25/08/2033	सूर्य	25/04/2035	चंद्र	15/03/2036	मंगल	03/02/2038	बुध	16/03/2039

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु	
16/03/2039	
25/04/2041	
गुरु	29/07/2039
राहु	23/10/2039
शुक्र	21/03/2040
सूर्य	03/05/2040
चंद्र	18/08/2040
मंगल	14/10/2040
बुध	12/02/2041
शनि	25/04/2041

शुक्र - शुक्र	
25/04/2041	
25/05/2045	
शुक्र	09/02/2042
सूर्य	03/05/2042
चंद्र	26/11/2042
मंगल	16/03/2043
बुध	06/11/2043
शनि	23/03/2044
गुरु	11/12/2044
राहु	25/05/2045

शुक्र - सूर्य	
25/05/2045	
25/07/2046	
सूर्य	18/06/2045
चंद्र	16/08/2045
मंगल	17/09/2045
बुध	23/11/2045
शनि	01/01/2046
गुरु	17/03/2046
राहु	04/05/2046
शुक्र	25/07/2046

शुक्र - चंद्र	
25/07/2046	
25/06/2049	
चंद्र	20/12/2046
मंगल	09/03/2047
बुध	24/08/2047
शनि	01/12/2047
गुरु	05/06/2048
राहु	01/10/2048
शुक्र	27/04/2049
सूर्य	25/06/2049

शुक्र - मंगल	
25/06/2049	
14/01/2051	
मंगल	06/08/2049
बुध	03/11/2049
शनि	26/12/2049
गुरु	05/04/2050
राहु	07/06/2050
शुक्र	25/09/2050
सूर्य	27/10/2050
चंद्र	14/01/2051

शुक्र - बुध	
14/01/2051	
05/05/2054	
बुध	23/07/2051
शनि	12/11/2051
गुरु	11/06/2052
राहु	23/10/2052
शुक्र	15/06/2053
सूर्य	21/08/2053
चंद्र	05/02/2054
मंगल	05/05/2054

शुक्र - शनि	
05/05/2054	
14/04/2056	
शनि	10/07/2054
गुरु	12/11/2054
राहु	30/01/2055
शुक्र	17/06/2055
सूर्य	26/07/2055
चंद्र	02/11/2055
मंगल	25/12/2055
बुध	14/04/2056

शुक्र - गुरु	
14/04/2056	
25/12/2059	
गुरु	08/12/2056
राहु	07/05/2057
शुक्र	24/01/2058
सूर्य	09/04/2058
चंद्र	14/10/2058
मंगल	22/01/2059
बुध	22/08/2059
शनि	25/12/2059

शुक्र - राहु	
25/12/2059	
25/04/2062	
राहु	29/03/2060
शुक्र	10/09/2060
सूर्य	28/10/2060
चंद्र	23/02/2061
मंगल	27/04/2061
बुध	08/09/2061
शनि	26/11/2061
गुरु	25/04/2062

सूर्य - सूर्य	
25/04/2062	
25/08/2062	
सूर्य	02/05/2062
चंद्र	19/05/2062
मंगल	28/05/2062
बुध	16/06/2062
शनि	27/06/2062
गुरु	19/07/2062
राहु	01/08/2062
शुक्र	25/08/2062

सूर्य - चंद्र	
25/08/2062	
25/06/2063	
चंद्र	06/10/2062
मंगल	29/10/2062
बुध	16/12/2062
शनि	13/01/2063
गुरु	07/03/2063
राहु	10/04/2063
शुक्र	08/06/2063
सूर्य	25/06/2063

सूर्य - मंगल	
25/06/2063	
05/12/2063	
मंगल	07/07/2063
बुध	02/08/2063
शनि	17/08/2063
गुरु	14/09/2063
राहु	02/10/2063
शुक्र	03/11/2063
सूर्य	12/11/2063
चंद्र	05/12/2063

सूर्य - बुध	
05/12/2063	
14/11/2064	
बुध	28/01/2064
शनि	29/02/2064
गुरु	30/04/2064
राहु	07/06/2064
शुक्र	13/08/2064
सूर्य	01/09/2064
चंद्र	19/10/2064
मंगल	14/11/2064

सूर्य - शनि	
14/11/2064	
04/06/2065	
शनि	02/12/2064
गुरु	07/01/2065
राहु	30/01/2065
शुक्र	10/03/2065
सूर्य	21/03/2065
चंद्र	19/04/2065
मंगल	04/05/2065
बुध	04/06/2065

सूर्य - गुरु	
04/06/2065	
25/06/2066	
गुरु	11/08/2065
राहु	23/09/2065
शुक्र	07/12/2065
सूर्य	29/12/2065
चंद्र	20/02/2066
मंगल	21/03/2066
बुध	20/05/2066
शनि	25/06/2066

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध	
25/06/2066		24/02/2067		25/04/2068		26/05/2070		05/07/2071	
24/02/2067		25/04/2068		26/05/2070		05/07/2071		14/11/2073	
राहु	22/07/2066	शुक्र	17/05/2067	चंद्र	08/08/2068	मंगल	25/06/2070	बुध	18/11/2071
शुक्र	07/09/2066	सूर्य	10/06/2067	मंगल	04/10/2068	बुध	28/08/2070	शनि	06/02/2072
सूर्य	21/09/2066	चंद्र	08/08/2067	बुध	31/01/2069	शनि	04/10/2070	गुरु	07/07/2072
चंद्र	25/10/2066	मंगल	09/09/2067	शनि	12/04/2069	गुरु	14/12/2070	राहु	11/10/2072
मंगल	12/11/2066	बुध	15/11/2067	गुरु	24/08/2069	राहु	29/01/2071	शुक्र	27/03/2073
बुध	20/12/2066	शनि	24/12/2067	राहु	16/11/2069	शुक्र	17/04/2071	सूर्य	14/05/2073
शनि	12/01/2067	गुरु	08/03/2068	शुक्र	13/04/2070	सूर्य	10/05/2071	चंद्र	11/09/2073
गुरु	24/02/2067	राहु	25/04/2068	सूर्य	26/05/2070	चंद्र	05/07/2071	मंगल	14/11/2073

चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
14/11/2073		05/04/2075		24/11/2077		26/07/2079		25/06/2082	
05/04/2075		24/11/2077		26/07/2079		25/06/2082		25/04/2083	
शनि	31/12/2073	गुरु	22/09/2075	राहु	31/01/2078	शुक्र	18/02/2080	सूर्य	12/07/2082
गुरु	30/03/2074	राहु	07/01/2076	शुक्र	29/05/2078	सूर्य	17/04/2080	चंद्र	23/08/2082
राहु	25/05/2074	शुक्र	12/07/2076	सूर्य	02/07/2078	चंद्र	12/09/2080	मंगल	15/09/2082
शुक्र	01/09/2074	सूर्य	04/09/2076	चंद्र	24/09/2078	मंगल	30/11/2080	बुध	02/11/2082
सूर्य	29/09/2074	चंद्र	16/01/2077	मंगल	08/11/2078	बुध	17/05/2081	शनि	30/11/2082
चंद्र	09/12/2074	मंगल	28/03/2077	बुध	12/02/2079	शनि	23/08/2081	गुरु	22/01/2083
मंगल	15/01/2075	बुध	27/08/2077	शनि	10/04/2079	गुरु	27/02/2082	राहु	25/02/2083
बुध	05/04/2075	शनि	24/11/2077	गुरु	26/07/2079	राहु	25/06/2082	शुक्र	25/04/2083

मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु	
25/04/2083		28/11/2083		02/03/2085		27/11/2085		25/04/2087	
28/11/2083		02/03/2085		27/11/2085		25/04/2087		15/03/2088	
मंगल	11/05/2083	बुध	08/02/2084	शनि	27/03/2085	गुरु	26/02/2086	राहु	31/05/2087
बुध	14/06/2083	शनि	22/03/2084	गुरु	13/05/2085	राहु	24/04/2086	शुक्र	03/08/2087
शनि	05/07/2083	गुरु	11/06/2084	राहु	12/06/2085	शुक्र	02/08/2086	सूर्य	21/08/2087
गुरु	12/08/2083	राहु	01/08/2084	शुक्र	04/08/2085	सूर्य	30/08/2086	चंद्र	05/10/2087
राहु	05/09/2083	शुक्र	29/10/2084	सूर्य	19/08/2085	चंद्र	10/11/2086	मंगल	29/10/2087
शुक्र	17/10/2083	सूर्य	24/11/2084	चंद्र	26/09/2085	मंगल	18/12/2086	बुध	19/12/2087
सूर्य	29/10/2083	चंद्र	27/01/2085	मंगल	16/10/2085	बुध	09/03/2087	शनि	18/01/2088
चंद्र	28/11/2083	मंगल	02/03/2085	बुध	27/11/2085	शनि	25/04/2087	गुरु	15/03/2088

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 0 वर्ष 11 मास 25 दिन

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
02/03/1986		25/02/1987		25/02/1991		26/02/1996		25/02/2002	
25/02/1987		25/02/1991		26/02/1996		25/02/2002		25/02/2009	
	00/00/0000	भ्राम	07/08/1987	भद्रि	06/11/1991	उल्क	25/02/1997	सिद्ध	07/07/2003
	00/00/0000	भद्रि	26/02/1988	उल्क	05/09/1992	सिद्ध	27/04/1998	संक	26/01/2005
	00/00/0000	उल्क	26/10/1988	सिद्ध	27/08/1993	संक	27/08/1999	मंग	07/04/2005
	02/03/1986	सिद्ध	06/08/1989	संक	06/10/1994	मंग	27/10/1999	पिंग	27/08/2005
सिद्ध	28/03/1986	संक	27/06/1990	मंग	26/11/1994	पिंग	26/02/2000	धांय	28/03/2006
संक	26/11/1986	मंग	07/08/1990	पिंग	08/03/1995	धांय	26/08/2000	भ्राम	06/01/2007
मंग	27/12/1986	पिंग	27/10/1990	धांय	07/08/1995	भ्राम	27/04/2001	भद्रि	27/12/2007
पिंग	25/02/1987	धांय	25/02/1991	भ्राम	26/02/1996	भद्रि	25/02/2002	उल्क	25/02/2009

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
25/02/2009		25/02/2017		25/02/2018		26/02/2020		25/02/2023	
25/02/2017		25/02/2018		26/02/2020		25/02/2023		25/02/2027	
संक	06/12/2010	मंग	07/03/2017	पिंग	07/04/2018	धांय	27/05/2020	भ्राम	07/08/2023
मंग	25/02/2011	पिंग	27/03/2017	धांय	07/06/2018	भ्राम	26/09/2020	भद्रि	26/02/2024
पिंग	07/08/2011	धांय	27/04/2017	भ्राम	27/08/2018	भद्रि	25/02/2021	उल्क	26/10/2024
धांय	06/04/2012	भ्राम	06/06/2017	भद्रि	06/12/2018	उल्क	27/08/2021	सिद्ध	06/08/2025
भ्राम	25/02/2013	भद्रि	27/07/2017	उल्क	07/04/2019	सिद्ध	28/03/2022	संक	27/06/2026
भद्रि	07/04/2014	उल्क	26/09/2017	सिद्ध	27/08/2019	संक	26/11/2022	मंग	07/08/2026
उल्क	07/08/2015	सिद्ध	06/12/2017	संक	05/02/2020	मंग	27/12/2022	पिंग	27/10/2026
सिद्ध	25/02/2017	संक	25/02/2018	मंग	26/02/2020	पिंग	25/02/2023	धांय	25/02/2027

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
25/02/2027		26/02/2032		25/02/2038		25/02/2045		25/02/2053	
26/02/2032		25/02/2038		25/02/2045		25/02/2053		25/02/2054	
भद्रि	06/11/2027	उल्क	25/02/2033	सिद्ध	07/07/2039	संक	06/12/2046	मंग	07/03/2053
उल्क	05/09/2028	सिद्ध	27/04/2034	संक	26/01/2041	मंग	25/02/2047	पिंग	27/03/2053
सिद्ध	27/08/2029	संक	27/08/2035	मंग	07/04/2041	पिंग	07/08/2047	धांय	27/04/2053
संक	06/10/2030	मंग	27/10/2035	पिंग	27/08/2041	धांय	06/04/2048	भ्राम	06/06/2053
मंग	26/11/2030	पिंग	26/02/2036	धांय	28/03/2042	भ्राम	25/02/2049	भद्रि	27/07/2053
पिंग	08/03/2031	धांय	26/08/2036	भ्राम	06/01/2043	भद्रि	07/04/2050	उल्क	26/09/2053
धांय	07/08/2031	भ्राम	27/04/2037	भद्रि	27/12/2043	उल्क	07/08/2051	सिद्ध	06/12/2053
भ्राम	26/02/2032	भद्रि	25/02/2038	उल्क	25/02/2045	सिद्ध	25/02/2053	संक	25/02/2054

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
25/02/2054		26/02/2056		25/02/2059		25/02/2063		26/02/2068	
26/02/2056		25/02/2059		25/02/2063		26/02/2068		25/02/2074	
पिंग	07/04/2054	धांय	27/05/2056	भ्राम	07/08/2059	भद्रि	06/11/2063	उल्क	25/02/2069
धांय	07/06/2054	भ्राम	26/09/2056	भद्रि	26/02/2060	उल्क	05/09/2064	सिद्ध	27/04/2070
भ्राम	27/08/2054	भद्रि	25/02/2057	उल्क	26/10/2060	सिद्ध	27/08/2065	संक	27/08/2071
भद्रि	06/12/2054	उल्क	27/08/2057	सिद्ध	06/08/2061	संक	06/10/2066	मंग	27/10/2071
उल्क	07/04/2055	सिद्ध	28/03/2058	संक	27/06/2062	मंग	26/11/2066	पिंग	26/02/2072
सिद्ध	27/08/2055	संक	26/11/2058	मंग	07/08/2062	पिंग	08/03/2067	धांय	26/08/2072
संक	05/02/2056	मंग	27/12/2058	पिंग	27/10/2062	धांय	07/08/2067	भ्राम	27/04/2073
मंग	26/02/2056	पिंग	25/02/2059	धांय	25/02/2063	भ्राम	26/02/2068	भद्रि	25/02/2074

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
25/02/2074		25/02/2081		25/02/2089		25/02/2090		26/02/2092	
25/02/2081		25/02/2089		25/02/2090		26/02/2092		00/00/0000	
सिद्ध	07/07/2075	संक	06/12/2082	मंग	07/03/2089	पिंग	07/04/2090	धांय	27/05/2092
संक	26/01/2077	मंग	25/02/2083	पिंग	27/03/2089	धांय	07/06/2090	भ्राम	26/09/2092
मंग	07/04/2077	पिंग	07/08/2083	धांय	27/04/2089	भ्राम	27/08/2090	भद्रि	25/02/2093
पिंग	27/08/2077	धांय	06/04/2084	भ्राम	06/06/2089	भद्रि	06/12/2090	उल्क	27/08/2093
धांय	28/03/2078	भ्राम	25/02/2085	भद्रि	27/07/2089	उल्क	07/04/2091	सिद्ध	02/03/2094
भ्राम	06/01/2079	भद्रि	07/04/2086	उल्क	26/09/2089	सिद्ध	27/08/2091		00/00/0000
भद्रि	27/12/2079	उल्क	07/08/2087	सिद्ध	06/12/2089	संक	05/02/2092		00/00/0000
उल्क	25/02/2081	सिद्ध	25/02/2089	संक	25/02/2090	मंग	26/02/2092		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध	
27/03/2017		27/04/2017		06/06/2017		27/07/2017		26/09/2017	
27/04/2017		06/06/2017		27/07/2017		26/09/2017		06/12/2017	
धांय	30/03/2017	भ्राम	01/05/2017	भद्रि	13/06/2017	उल्क	06/08/2017	सिद्ध	10/10/2017
भ्राम	02/04/2017	भद्रि	07/05/2017	उल्क	22/06/2017	सिद्ध	18/08/2017	संक	26/10/2017
भद्रि	07/04/2017	उल्क	14/05/2017	सिद्ध	02/07/2017	संक	01/09/2017	मंग	28/10/2017
उल्क	12/04/2017	सिद्ध	22/05/2017	संक	13/07/2017	मंग	02/09/2017	पिंग	01/11/2017
सिद्ध	18/04/2017	संक	31/05/2017	मंग	14/07/2017	पिंग	06/09/2017	धांय	06/11/2017
संक	24/04/2017	मंग	01/06/2017	पिंग	17/07/2017	धांय	11/09/2017	भ्राम	14/11/2017
मंग	25/04/2017	पिंग	03/06/2017	धांय	21/07/2017	भ्राम	18/09/2017	भद्रि	24/11/2017
पिंग	27/04/2017	धांय	06/06/2017	भ्राम	27/07/2017	भद्रि	26/09/2017	उल्क	06/12/2017

मंग - संक		पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि	
06/12/2017		25/02/2018		07/04/2018		07/06/2018		27/08/2018	
25/02/2018		07/04/2018		07/06/2018		27/08/2018		06/12/2018	
संक	24/12/2017	पिंग	27/02/2018	धांय	12/04/2018	भ्राम	16/06/2018	भद्रि	10/09/2018
मंग	26/12/2017	धांय	03/03/2018	भ्राम	19/04/2018	भद्रि	27/06/2018	उल्क	27/09/2018
पिंग	31/12/2017	भ्राम	07/03/2018	भद्रि	27/04/2018	उल्क	10/07/2018	सिद्ध	17/10/2018
धांय	07/01/2018	भद्रि	13/03/2018	उल्क	07/05/2018	सिद्ध	26/07/2018	संक	08/11/2018
भ्राम	16/01/2018	उल्क	20/03/2018	सिद्ध	19/05/2018	संक	13/08/2018	मंग	11/11/2018
भद्रि	27/01/2018	सिद्ध	28/03/2018	संक	02/06/2018	मंग	16/08/2018	पिंग	17/11/2018
उल्क	09/02/2018	संक	06/04/2018	मंग	03/06/2018	पिंग	20/08/2018	धांय	25/11/2018
सिद्ध	25/02/2018	मंग	07/04/2018	पिंग	07/06/2018	धांय	27/08/2018	भ्राम	06/12/2018

पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय	
06/12/2018		07/04/2019		27/08/2019		05/02/2020		26/02/2020	
07/04/2019		27/08/2019		05/02/2020		26/02/2020		27/05/2020	
उल्क	27/12/2018	सिद्ध	05/05/2019	संक	02/10/2019	मंग	06/02/2020	धांय	04/03/2020
सिद्ध	19/01/2019	संक	05/06/2019	मंग	07/10/2019	पिंग	07/02/2020	भ्राम	14/03/2020
संक	15/02/2019	मंग	09/06/2019	पिंग	16/10/2019	धांय	09/02/2020	भद्रि	27/03/2020
मंग	19/02/2019	पिंग	17/06/2019	धांय	29/10/2019	भ्राम	11/02/2020	उल्क	11/04/2020
पिंग	25/02/2019	धांय	29/06/2019	भ्राम	16/11/2019	भद्रि	14/02/2020	सिद्ध	29/04/2020
धांय	08/03/2019	भ्राम	15/07/2019	भद्रि	09/12/2019	उल्क	17/02/2020	संक	19/05/2020
भ्राम	21/03/2019	भद्रि	03/08/2019	उल्क	05/01/2020	सिद्ध	21/02/2020	मंग	22/05/2020
भद्रि	07/04/2019	उल्क	27/08/2019	सिद्ध	05/02/2020	संक	26/02/2020	पिंग	27/05/2020

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक	
27/05/2020		26/09/2020		25/02/2021		27/08/2021		28/03/2022	
26/09/2020		25/02/2021		27/08/2021		28/03/2022		26/11/2022	
भ्राम	10/06/2020	भद्रि	17/10/2020	उल्क	27/03/2021	सिद्ध	07/10/2021	संक	21/05/2022
भद्रि	26/06/2020	उल्क	11/11/2020	सिद्ध	02/05/2021	संक	23/11/2021	मंग	28/05/2022
उल्क	17/07/2020	सिद्ध	11/12/2020	संक	11/06/2021	मंग	29/11/2021	पिंग	10/06/2022
सिद्ध	09/08/2020	संक	14/01/2021	मंग	17/06/2021	पिंग	11/12/2021	धांय	30/06/2022
संक	05/09/2020	मंग	18/01/2021	पिंग	27/06/2021	धांय	29/12/2021	भ्राम	27/07/2022
मंग	09/09/2020	पिंग	26/01/2021	धांय	12/07/2021	भ्राम	22/01/2022	भद्रि	30/08/2022
पिंग	16/09/2020	धांय	08/02/2021	भ्राम	01/08/2021	भद्रि	20/02/2022	उल्क	10/10/2022
धांय	26/09/2020	भ्राम	25/02/2021	भद्रि	27/08/2021	उल्क	28/03/2022	सिद्ध	26/11/2022

धांय - मंग		धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क	
26/11/2022		27/12/2022		25/02/2023		07/08/2023		26/02/2024	
27/12/2022		25/02/2023		07/08/2023		26/02/2024		26/10/2024	
मंग	27/11/2022	पिंग	30/12/2022	भ्राम	15/03/2023	भद्रि	04/09/2023	उल्क	06/04/2024
पिंग	29/11/2022	धांय	04/01/2023	भद्रि	07/04/2023	उल्क	08/10/2023	सिद्ध	24/05/2024
धांय	01/12/2022	भ्राम	11/01/2023	उल्क	04/05/2023	सिद्ध	16/11/2023	संक	17/07/2024
भ्राम	05/12/2022	भद्रि	19/01/2023	सिद्ध	05/06/2023	संक	31/12/2023	मंग	24/07/2024
भद्रि	09/12/2022	उल्क	29/01/2023	संक	11/07/2023	मंग	06/01/2024	पिंग	06/08/2024
उल्क	14/12/2022	सिद्ध	10/02/2023	मंग	15/07/2023	पिंग	17/01/2024	धांय	26/08/2024
सिद्ध	20/12/2022	संक	24/02/2023	पिंग	24/07/2023	धांय	03/02/2024	भ्राम	22/09/2024
संक	27/12/2022	मंग	25/02/2023	धांय	07/08/2023	भ्राम	26/02/2024	भद्रि	26/10/2024

भ्राम - सिद्ध		भ्राम - संक		भ्राम - मंग		भ्राम - पिंग		भ्राम - धांय	
26/10/2024		06/08/2025		27/06/2026		07/08/2026		27/10/2026	
06/08/2025		27/06/2026		07/08/2026		27/10/2026		25/02/2027	
सिद्ध	20/12/2024	संक	17/10/2025	मंग	28/06/2026	पिंग	11/08/2026	धांय	06/11/2026
संक	22/02/2025	मंग	26/10/2025	पिंग	30/06/2026	धांय	18/08/2026	भ्राम	19/11/2026
मंग	01/03/2025	पिंग	13/11/2025	धांय	04/07/2026	भ्राम	27/08/2026	भद्रि	06/12/2026
पिंग	17/03/2025	धांय	11/12/2025	भ्राम	08/07/2026	भद्रि	07/09/2026	उल्क	27/12/2026
धांय	10/04/2025	भ्राम	16/01/2026	भद्रि	14/07/2026	उल्क	21/09/2026	सिद्ध	19/01/2027
भ्राम	11/05/2025	भद्रि	02/03/2026	उल्क	21/07/2026	सिद्ध	06/10/2026	संक	15/02/2027
भद्रि	20/06/2025	उल्क	25/04/2026	सिद्ध	29/07/2026	संक	24/10/2026	मंग	19/02/2027
उल्क	06/08/2025	सिद्ध	27/06/2026	संक	07/08/2026	मंग	27/10/2026	पिंग	25/02/2027

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृष 1 वर्ष 10 मास 22 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : विशाखा - 3 अपसव्य
देह : कुम्भ जीव : कन्या

वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष	
02/03/1986		23/01/1988		23/01/1995		23/01/2005		23/01/2009	
23/01/1988		23/01/1995		23/01/2005		23/01/2009		23/01/2013	
	00/00/0000	मेष	21/08/1988	धनु	28/03/1996	मक	01/04/2005	कुंभ	01/04/2009
	00/00/0000	धनु	18/06/1989	मक	16/09/1996	कुंभ	09/06/2005	कन्या	03/09/2009
	00/00/0000	मक	16/10/1989	कुंभ	07/03/1997	कन्या	11/11/2005	सिंह	28/11/2009
	00/00/0000	कुंभ	13/02/1990	कन्या	28/03/1998	सिंह	05/02/2006	कर्क	24/11/2010
	00/00/0000	कन्या	11/11/1990	सिंह	29/10/1998	कर्क	01/02/2007	मिथु	28/04/2011
	00/00/0000	सिंह	11/04/1991	कर्क	19/04/2001	मिथु	05/07/2007	वृष	28/01/2012
	02/03/1986	कर्क	01/01/1993	मिथु	10/05/2002	वृष	05/04/2008	मेष	27/05/2012
कर्क	15/05/1986	मिथु	29/09/1993	वृष	28/03/2004	मेष	04/08/2008	धनु	15/11/2012
मिथु	23/01/1988	वृष	23/01/1995	मेष	23/01/2005	धनु	23/01/2009	मक	23/01/2013

कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष	
23/01/2013		23/01/2022		23/01/2027		23/01/2048		23/01/2057	
23/01/2022		23/01/2027		23/01/2048		23/01/2057		00/00/0000	
कन्या	06/01/2014	सिंह	10/05/2022	कर्क	01/04/2032	मिथु	05/01/2049	वृष	28/01/2060
सिंह	18/07/2014	कर्क	05/08/2023	मिथु	22/06/2034	वृष	16/09/2050	मेष	23/05/2061
कर्क	07/10/2016	मिथु	14/02/2024	वृष	05/06/2038	मेष	14/06/2051	धनु	11/04/2063
मिथु	20/09/2017	वृष	23/01/2025	मेष	27/02/2040	धनु	05/07/2052	मक	11/01/2064
वृष	01/06/2019	मेष	22/06/2025	धनु	17/08/2042	मक	06/12/2052	कुंभ	12/10/2064
मेष	27/02/2020	धनु	23/01/2026	मक	13/08/2043	कुंभ	10/05/2053	कन्या	22/06/2066
धनु	20/03/2021	मक	19/04/2026	कुंभ	08/08/2044	कन्या	23/04/2054	सिंह	01/06/2067
मक	21/08/2021	कुंभ	14/07/2026	कन्या	29/10/2046	सिंह	03/11/2054	कर्क	02/03/2071
कुंभ	23/01/2022	कन्या	23/01/2027	सिंह	23/01/2048	कर्क	23/01/2057		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - मिथु	
07/10/2016	
20/09/2017	
मिथु	13/11/2016
वृष	18/01/2017
मेष	15/02/2017
धनु	28/03/2017
मक	14/04/2017
कुंभ	30/04/2017
कन्या	06/06/2017
सिंह	26/06/2017
कर्क	20/09/2017

कन्या - वृष	
20/09/2017	
01/06/2019	
वृष	15/01/2018
मेष	07/03/2018
धनु	19/05/2018
मक	17/06/2018
कुंभ	16/07/2018
कन्या	19/09/2018
सिंह	26/10/2018
कर्क	28/03/2019
मिथु	01/06/2019

कन्या - मेष	
01/06/2019	
27/02/2020	
मेष	23/06/2019
धनु	25/07/2019
मक	07/08/2019
कुंभ	20/08/2019
कन्या	17/09/2019
सिंह	03/10/2019
कर्क	09/12/2019
मिथु	07/01/2020
वृष	27/02/2020

कन्या - धनु	
27/02/2020	
20/03/2021	
धनु	12/04/2020
मक	30/04/2020
कुंभ	19/05/2020
कन्या	29/06/2020
सिंह	21/07/2020
कर्क	25/10/2020
मिथु	05/12/2020
वृष	16/02/2021
मेष	20/03/2021

कन्या - मक	
20/03/2021	
21/08/2021	
मक	27/03/2021
कुंभ	03/04/2021
कन्या	19/04/2021
सिंह	29/04/2021
कर्क	06/06/2021
मिथु	22/06/2021
वृष	21/07/2021
मेष	03/08/2021
धनु	21/08/2021

कन्या - कुंभ	
21/08/2021	
23/01/2022	
कुंभ	28/08/2021
कन्या	14/09/2021
सिंह	23/09/2021
कर्क	31/10/2021
मिथु	17/11/2021
वृष	16/12/2021
मेष	28/12/2021
धनु	16/01/2022
मक	23/01/2022

सिंह - सिंह	
23/01/2022	
10/05/2022	
सिंह	29/01/2022
कर्क	25/02/2022
मिथु	08/03/2022
वृष	28/03/2022
मेष	06/04/2022
धनु	19/04/2022
मक	24/04/2022
कुंभ	29/04/2022
कन्या	10/05/2022

सिंह - कर्क	
10/05/2022	
05/08/2023	
कर्क	30/08/2022
मिथु	17/10/2022
वृष	10/01/2023
मेष	16/02/2023
धनु	10/04/2023
मक	01/05/2023
कुंभ	22/05/2023
कन्या	09/07/2023
सिंह	05/08/2023

सिंह - मिथु	
05/08/2023	
14/02/2024	
मिथु	25/08/2023
वृष	30/09/2023
मेष	16/10/2023
धनु	08/11/2023
मक	17/11/2023
कुंभ	26/11/2023
कन्या	17/12/2023
सिंह	28/12/2023
कर्क	14/02/2024

सिंह - वृष	
14/02/2024	
23/01/2025	
वृष	19/04/2024
मेष	17/05/2024
धनु	26/06/2024
मक	13/07/2024
कुंभ	29/07/2024
कन्या	03/09/2024
सिंह	23/09/2024
कर्क	17/12/2024
मिथु	23/01/2025

सिंह - मेष	
23/01/2025	
22/06/2025	
मेष	04/02/2025
धनु	22/02/2025
मक	01/03/2025
कुंभ	08/03/2025
कन्या	24/03/2025
सिंह	02/04/2025
कर्क	09/05/2025
मिथु	25/05/2025
वृष	22/06/2025

सिंह - धनु	
22/06/2025	
23/01/2026	
धनु	17/07/2025
मक	27/07/2025
कुंभ	07/08/2025
कन्या	29/08/2025
सिंह	11/09/2025
कर्क	03/11/2025
मिथु	26/11/2025
वृष	05/01/2026
मेष	23/01/2026

सिंह - मक	
23/01/2026	
19/04/2026	
मक	27/01/2026
कुंभ	31/01/2026
कन्या	09/02/2026
सिंह	14/02/2026
कर्क	07/03/2026
मिथु	16/03/2026
वृष	02/04/2026
मेष	09/04/2026
धनु	19/04/2026

सिंह - कुंभ	
19/04/2026	
14/07/2026	
कुंभ	23/04/2026
कन्या	02/05/2026
सिंह	07/05/2026
कर्क	28/05/2026
मिथु	06/06/2026
वृष	23/06/2026
मेष	30/06/2026
धनु	10/07/2026
मक	14/07/2026

सिंह - कन्या	
14/07/2026	
23/01/2027	
कन्या	03/08/2026
सिंह	15/08/2026
कर्क	01/10/2026
मिथु	22/10/2026
वृष	27/11/2026
मेष	13/12/2026
धनु	05/01/2027
मक	14/01/2027
कुंभ	23/01/2027

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - कर्क	
23/01/2027	
01/04/2032	
कर्क	05/05/2028
मिथु	22/11/2028
वृष	14/11/2029
मेष	19/04/2030
धनु	28/11/2030
मक	25/02/2031
कुंभ	25/05/2031
कन्या	12/12/2031
सिंह	01/04/2032

कर्क - मिथु	
01/04/2032	
22/06/2034	
मिथु	26/06/2032
वृष	26/11/2032
मेष	01/02/2033
धनु	07/05/2033
मक	15/06/2033
कुंभ	23/07/2033
कन्या	17/10/2033
सिंह	04/12/2033
कर्क	22/06/2034

कर्क - वृष	
22/06/2034	
05/06/2038	
वृष	21/03/2035
मेष	18/07/2035
धनु	04/01/2036
मक	12/03/2036
कुंभ	19/05/2036
कन्या	19/10/2036
सिंह	12/01/2037
कर्क	03/01/2038
मिथु	05/06/2038

कर्क - मेष	
05/06/2038	
27/02/2040	
मेष	27/07/2038
धनु	09/10/2038
मक	08/11/2038
कुंभ	08/12/2038
कन्या	13/02/2039
सिंह	22/03/2039
कर्क	25/08/2039
मिथु	31/10/2039
वृष	27/02/2040

कर्क - धनु	
27/02/2040	
17/08/2042	
धनु	12/06/2040
मक	24/07/2040
कुंभ	05/09/2040
कन्या	09/12/2040
सिंह	01/02/2041
कर्क	11/09/2041
मिथु	16/12/2041
वृष	04/06/2042
मेष	17/08/2042

कर्क - मक	
17/08/2042	
13/08/2043	
मक	03/09/2042
कुंभ	20/09/2042
कन्या	28/10/2042
सिंह	19/11/2042
कर्क	16/02/2043
मिथु	26/03/2043
वृष	02/06/2043
मेष	02/07/2043
धनु	13/08/2043

कर्क - कुंभ	
13/08/2043	
08/08/2044	
कुंभ	30/08/2043
कन्या	07/10/2043
सिंह	29/10/2043
कर्क	26/01/2044
मिथु	04/03/2044
वृष	11/05/2044
मेष	10/06/2044
धनु	22/07/2044
मक	08/08/2044

कर्क - कन्या	
08/08/2044	
29/10/2046	
कन्या	02/11/2044
सिंह	20/12/2044
कर्क	08/07/2045
मिथु	02/10/2045
वृष	04/03/2046
मेष	10/05/2046
धनु	14/08/2046
मक	21/09/2046
कुंभ	29/10/2046

कर्क - सिंह	
29/10/2046	
23/01/2048	
सिंह	25/11/2046
कर्क	16/03/2047
मिथु	03/05/2047
वृष	27/07/2047
मेष	02/09/2047
धनु	25/10/2047
मक	15/11/2047
कुंभ	07/12/2047
कन्या	23/01/2048

मिथु - मिथु	
23/01/2048	
05/01/2049	
मिथु	29/02/2048
वृष	05/05/2048
मेष	02/06/2048
धनु	13/07/2048
मक	30/07/2048
कुंभ	15/08/2048
कन्या	21/09/2048
सिंह	11/10/2048
कर्क	05/01/2049

मिथु - वृष	
05/01/2049	
16/09/2050	
वृष	02/05/2049
मेष	22/06/2049
धनु	03/09/2049
मक	02/10/2049
कुंभ	31/10/2049
कन्या	04/01/2050
सिंह	10/02/2050
कर्क	13/07/2050
मिथु	16/09/2050

मिथु - मेष	
16/09/2050	
14/06/2051	
मेष	09/10/2050
धनु	09/11/2050
मक	22/11/2050
कुंभ	05/12/2050
कन्या	03/01/2051
सिंह	18/01/2051
कर्क	26/03/2051
मिथु	24/04/2051
वृष	14/06/2051

मिथु - धनु	
14/06/2051	
05/07/2052	
धनु	29/07/2051
मक	17/08/2051
कुंभ	04/09/2051
कन्या	15/10/2051
सिंह	07/11/2051
कर्क	10/02/2052
मिथु	22/03/2052
वृष	03/06/2052
मेष	05/07/2052

मिथु - मक	
05/07/2052	
06/12/2052	
मक	12/07/2052
कुंभ	19/07/2052
कन्या	05/08/2052
सिंह	14/08/2052
कर्क	21/09/2052
मिथु	07/10/2052
वृष	05/11/2052
मेष	18/11/2052
धनु	06/12/2052

मिथु - कुंभ	
06/12/2052	
10/05/2053	
कुंभ	14/12/2052
कन्या	30/12/2052
सिंह	08/01/2053
कर्क	15/02/2053
मिथु	04/03/2053
वृष	02/04/2053
मेष	15/04/2053
धनु	03/05/2053
मक	10/05/2053

चर दशा

भोग्य दशा काल : मीन 1 वर्ष 0 मास 0 दिन

मीन 1 वर्ष	
02/03/1986	
02/03/1987	
मेष	01/04/1986
वृष	02/05/1986
मिथु	01/06/1986
कर्क	02/07/1986
सिंह	01/08/1986
कन्या	31/08/1986
तुला	01/10/1986
वृश्चि	31/10/1986
धनु	01/12/1986
मक	31/12/1986
कुंभ	31/01/1987
मीन	02/03/1987

मेष 7 वर्ष	
02/03/1987	
02/03/1994	
वृष	01/10/1987
मिथु	01/05/1988
कर्क	30/11/1988
सिंह	01/07/1989
कन्या	30/01/1990
तुला	31/08/1990
वृश्चि	02/04/1991
धनु	01/11/1991
मक	01/06/1992
कुंभ	31/12/1992
मीन	01/08/1993
मेष	02/03/1994

वृष 9 वर्ष	
02/03/1994	
02/03/2003	
मेष	01/12/1994
मीन	01/09/1995
कुंभ	01/06/1996
मक	02/03/1997
धनु	01/12/1997
वृश्चि	31/08/1998
तुला	01/06/1999
कन्या	01/03/2000
सिंह	30/11/2000
कर्क	31/08/2001
मिथु	01/06/2002
वृष	02/03/2003

मिथुन 9 वर्ष	
02/03/2003	
01/03/2012	
वृष	01/12/2003
मेष	31/08/2004
मीन	01/06/2005
कुंभ	02/03/2006
मक	01/12/2006
धनु	01/09/2007
वृश्चि	01/06/2008
तुला	02/03/2009
कन्या	01/12/2009
सिंह	31/08/2010
कर्क	01/06/2011
मिथु	01/03/2012

कर्क 9 वर्ष	
01/03/2012	
02/03/2021	
मिथु	30/11/2012
वृष	31/08/2013
मेष	01/06/2014
मीन	02/03/2015
कुंभ	01/12/2015
मक	31/08/2016
धनु	01/06/2017
वृश्चि	02/03/2018
तुला	01/12/2018
कन्या	01/09/2019
सिंह	01/06/2020
कर्क	02/03/2021

सिंह 6 वर्ष	
02/03/2021	
02/03/2027	
कन्या	31/08/2021
तुला	02/03/2022
वृश्चि	31/08/2022
धनु	02/03/2023
मक	01/09/2023
कुंभ	01/03/2024
मीन	31/08/2024
मेष	02/03/2025
वृष	31/08/2025
मिथु	02/03/2026
कर्क	31/08/2026
सिंह	02/03/2027

कन्या 6 वर्ष	
02/03/2027	
02/03/2033	
तुला	01/09/2027
वृश्चि	01/03/2028
धनु	31/08/2028
मक	02/03/2029
कुंभ	31/08/2029
मीन	02/03/2030
मेष	31/08/2030
वृष	02/03/2031
मिथु	01/09/2031
कर्क	01/03/2032
सिंह	31/08/2032
कन्या	02/03/2033

तुला 4 वर्ष	
02/03/2033	
02/03/2037	
वृश्चि	01/07/2033
धनु	31/10/2033
मक	02/03/2034
कुंभ	02/07/2034
मीन	31/10/2034
मेष	02/03/2035
वृष	02/07/2035
मिथु	01/11/2035
कर्क	01/03/2036
सिंह	01/07/2036
कन्या	31/10/2036
तुला	02/03/2037

वृश्चिक 11 वर्ष	
02/03/2037	
01/03/2048	
तुला	30/01/2038
कन्या	31/12/2038
सिंह	01/12/2039
कर्क	31/10/2040
मिथु	01/10/2041
वृष	31/08/2042
मेष	01/08/2043
मीन	01/07/2044
कुंभ	01/06/2045
मक	02/05/2046
धनु	02/04/2047
वृश्चि	01/03/2048

धनु 2 वर्ष	
01/03/2048	
02/03/2050	
वृश्चि	01/05/2048
तुला	01/07/2048
कन्या	31/08/2048
सिंह	31/10/2048
कर्क	31/12/2048
मिथु	02/03/2049
वृष	01/05/2049
मेष	01/07/2049
मीन	31/08/2049
कुंभ	31/10/2049
मक	31/12/2049
धनु	02/03/2050

मकर 2 वर्ष	
02/03/2050	
01/03/2052	
धनु	02/05/2050
वृश्चि	02/07/2050
तुला	31/08/2050
कन्या	31/10/2050
सिंह	31/12/2050
कर्क	02/03/2051
मिथु	02/05/2051
वृष	02/07/2051
मेष	01/09/2051
मीन	01/11/2051
कुंभ	31/12/2051
मक	01/03/2052

कुम्भ 3 वर्ष	
01/03/2052	
02/03/2055	
मीन	01/06/2052
मेष	31/08/2052
वृष	30/11/2052
मिथु	02/03/2053
कर्क	01/06/2053
सिंह	31/08/2053
कन्या	01/12/2053
तुला	02/03/2054
वृश्चि	01/06/2054
धनु	31/08/2054
मक	01/12/2054
कुंभ	02/03/2055

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - धनु		कर्क - वृश्चि		कर्क - तुला		कर्क - कन्या		कर्क - सिंह	
31/08/2016		01/06/2017		02/03/2018		01/12/2018		01/09/2019	
01/06/2017		02/03/2018		01/12/2018		01/09/2019		01/06/2020	
वृश्चि	23/09/2016	तुला	24/06/2017	वृश्चि	25/03/2018	तुला	24/12/2018	कन्या	24/09/2019
तुला	16/10/2016	कन्या	17/07/2017	धनु	16/04/2018	वृश्चि	15/01/2019	तुला	16/10/2019
कन्या	07/11/2016	सिंह	08/08/2017	मक	09/05/2018	धनु	07/02/2019	वृश्चि	08/11/2019
सिंह	30/11/2016	कर्क	31/08/2017	कुंभ	01/06/2018	मक	02/03/2019	धनु	01/12/2019
कर्क	23/12/2016	मिथु	23/09/2017	मीन	24/06/2018	कुंभ	25/03/2019	मक	24/12/2019
मिथु	15/01/2017	वृष	16/10/2017	मेष	17/07/2018	मीन	17/04/2019	कुंभ	16/01/2020
वृष	07/02/2017	मेष	08/11/2017	वृष	09/08/2018	मेष	10/05/2019	मीन	07/02/2020
मेष	02/03/2017	मीन	01/12/2017	मिथु	31/08/2018	वृष	01/06/2019	मेष	01/03/2020
मीन	24/03/2017	कुंभ	23/12/2017	कर्क	23/09/2018	मिथु	24/06/2019	वृष	24/03/2020
कुंभ	16/04/2017	मक	15/01/2018	सिंह	16/10/2018	कर्क	17/07/2019	मिथु	16/04/2020
मक	09/05/2017	धनु	07/02/2018	कन्या	08/11/2018	सिंह	09/08/2019	कर्क	09/05/2020
धनु	01/06/2017	वृश्चि	02/03/2018	तुला	01/12/2018	कन्या	01/09/2019	सिंह	01/06/2020

कर्क - कर्क		सिंह - कन्या		सिंह - तुला		सिंह - वृश्चि		सिंह - धनु	
01/06/2020		02/03/2021		31/08/2021		02/03/2022		31/08/2022	
02/03/2021		31/08/2021		02/03/2022		31/08/2022		02/03/2023	
मिथु	23/06/2020	तुला	17/03/2021	वृश्चि	15/09/2021	तुला	17/03/2022	वृश्चि	16/09/2022
वृष	16/07/2020	वृश्चि	01/04/2021	धनु	01/10/2021	कन्या	01/04/2022	तुला	01/10/2022
मेष	08/08/2020	धनु	16/04/2021	मक	16/10/2021	सिंह	16/04/2022	कन्या	16/10/2022
मीन	31/08/2020	मक	01/05/2021	कुंभ	31/10/2021	कर्क	02/05/2022	सिंह	31/10/2022
कुंभ	23/09/2020	कुंभ	17/05/2021	मीन	15/11/2021	मिथु	17/05/2022	कर्क	16/11/2022
मक	16/10/2020	मीन	01/06/2021	मेष	01/12/2021	वृष	01/06/2022	मिथु	01/12/2022
धनु	07/11/2020	मेष	16/06/2021	वृष	16/12/2021	मेष	16/06/2022	वृष	16/12/2022
वृश्चि	30/11/2020	वृष	01/07/2021	मिथु	31/12/2021	मीन	02/07/2022	मेष	31/12/2022
तुला	23/12/2020	मिथु	17/07/2021	कर्क	15/01/2022	कुंभ	17/07/2022	मीन	15/01/2023
कन्या	15/01/2021	कर्क	01/08/2021	सिंह	30/01/2022	मक	01/08/2022	कुंभ	31/01/2023
सिंह	07/02/2021	सिंह	16/08/2021	कन्या	15/02/2022	धनु	16/08/2022	मक	15/02/2023
कर्क	02/03/2021	कन्या	31/08/2021	तुला	02/03/2022	वृश्चि	31/08/2022	धनु	02/03/2023

सिंह - मक		सिंह - कुंभ		सिंह - मीन		सिंह - मेष		सिंह - वृष	
02/03/2023		01/09/2023		01/03/2024		31/08/2024		02/03/2025	
01/09/2023		01/03/2024		31/08/2024		02/03/2025		31/08/2025	
धनु	17/03/2023	मीन	16/09/2023	मेष	17/03/2024	वृष	15/09/2024	मेष	17/03/2025
वृश्चि	02/04/2023	मेष	01/10/2023	वृष	01/04/2024	मिथु	30/09/2024	मीन	01/04/2025
तुला	17/04/2023	वृष	16/10/2023	मिथु	16/04/2024	कर्क	16/10/2024	कुंभ	16/04/2025
कन्या	02/05/2023	मिथु	01/11/2023	कर्क	01/05/2024	सिंह	31/10/2024	मक	01/05/2025
सिंह	17/05/2023	कर्क	16/11/2023	सिंह	16/05/2024	कन्या	15/11/2024	धनु	17/05/2025
कर्क	01/06/2023	सिंह	01/12/2023	कन्या	01/06/2024	तुला	30/11/2024	वृश्चि	01/06/2025
मिथु	17/06/2023	कन्या	16/12/2023	तुला	16/06/2024	वृश्चि	15/12/2024	तुला	16/06/2025
वृष	02/07/2023	तुला	31/12/2023	वृश्चि	01/07/2024	धनु	31/12/2024	कन्या	01/07/2025
मेष	17/07/2023	वृश्चि	16/01/2024	धनु	16/07/2024	मक	15/01/2025	सिंह	17/07/2025
मीन	01/08/2023	धनु	31/01/2024	मक	01/08/2024	कुंभ	30/01/2025	कर्क	01/08/2025
कुंभ	16/08/2023	मक	15/02/2024	कुंभ	16/08/2024	मीन	14/02/2025	मिथु	16/08/2025
मक	01/09/2023	कुंभ	01/03/2024	मीन	31/08/2024	मेष	02/03/2025	वृष	31/08/2025

चर दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - मिथु	
31/08/2025	
02/03/2026	
वृष	15/09/2025
मेष	01/10/2025
मीन	16/10/2025
कुंभ	31/10/2025
मक	15/11/2025
धनु	01/12/2025
वृश्चि	16/12/2025
तुला	31/12/2025
कन्या	15/01/2026
सिंह	30/01/2026
कर्क	15/02/2026
मिथु	02/03/2026

सिंह - कर्क	
02/03/2026	
31/08/2026	
मिथु	17/03/2026
वृष	01/04/2026
मेष	16/04/2026
मीन	02/05/2026
कुंभ	17/05/2026
मक	01/06/2026
धनु	16/06/2026
वृश्चि	02/07/2026
तुला	17/07/2026
कन्या	01/08/2026
सिंह	16/08/2026
कर्क	31/08/2026

सिंह - सिंह	
31/08/2026	
02/03/2027	
कन्या	16/09/2026
तुला	01/10/2026
वृश्चि	16/10/2026
धनु	31/10/2026
मक	16/11/2026
कुंभ	01/12/2026
मीन	16/12/2026
मेष	31/12/2026
वृष	15/01/2027
मिथु	31/01/2027
कर्क	15/02/2027
सिंह	02/03/2027

कन्या - तुला	
02/03/2027	
01/09/2027	
वृश्चि	17/03/2027
धनु	02/04/2027
मक	17/04/2027
कुंभ	02/05/2027
मीन	17/05/2027
मेष	01/06/2027
वृष	17/06/2027
मिथु	02/07/2027
कर्क	17/07/2027
सिंह	01/08/2027
कन्या	16/08/2027
तुला	01/09/2027

कन्या - वृश्चि	
01/09/2027	
01/03/2028	
तुला	16/09/2027
कन्या	01/10/2027
सिंह	16/10/2027
कर्क	01/11/2027
मिथु	16/11/2027
वृष	01/12/2027
मेष	16/12/2027
मीन	31/12/2027
कुंभ	16/01/2028
मक	31/01/2028
धनु	15/02/2028
वृश्चि	01/03/2028

कन्या - धनु	
01/03/2028	
31/08/2028	
वृश्चि	17/03/2028
तुला	01/04/2028
कन्या	16/04/2028
सिंह	01/05/2028
कर्क	16/05/2028
मिथु	01/06/2028
वृष	16/06/2028
मेष	01/07/2028
मीन	16/07/2028
कुंभ	01/08/2028
मक	16/08/2028
धनु	31/08/2028

कन्या - मक	
31/08/2028	
02/03/2029	
धनु	15/09/2028
वृश्चि	30/09/2028
तुला	16/10/2028
कन्या	31/10/2028
सिंह	15/11/2028
कर्क	30/11/2028
मिथु	15/12/2028
वृष	31/12/2028
मेष	15/01/2029
मीन	30/01/2029
कुंभ	14/02/2029
मक	02/03/2029

कन्या - कुंभ	
02/03/2029	
31/08/2029	
मीन	17/03/2029
मेष	01/04/2029
वृष	16/04/2029
मिथु	01/05/2029
कर्क	17/05/2029
सिंह	01/06/2029
कन्या	16/06/2029
तुला	01/07/2029
वृश्चि	17/07/2029
धनु	01/08/2029
मक	16/08/2029
कुंभ	31/08/2029

कन्या - मीन	
31/08/2029	
02/03/2030	
मेष	15/09/2029
वृष	01/10/2029
मिथु	16/10/2029
कर्क	31/10/2029
सिंह	15/11/2029
कन्या	01/12/2029
तुला	16/12/2029
वृश्चि	31/12/2029
धनु	15/01/2030
मक	30/01/2030
कुंभ	15/02/2030
मीन	02/03/2030

कन्या - मेष	
02/03/2030	
31/08/2030	
वृष	17/03/2030
मिथु	01/04/2030
कर्क	16/04/2030
सिंह	02/05/2030
कन्या	17/05/2030
तुला	01/06/2030
वृश्चि	16/06/2030
धनु	02/07/2030
मक	17/07/2030
कुंभ	01/08/2030
मीन	16/08/2030
मेष	31/08/2030

कन्या - वृष	
31/08/2030	
02/03/2031	
मेष	16/09/2030
मीन	01/10/2030
कुंभ	16/10/2030
मक	31/10/2030
धनु	16/11/2030
वृश्चि	01/12/2030
तुला	16/12/2030
कन्या	31/12/2030
सिंह	15/01/2031
कर्क	31/01/2031
मिथु	15/02/2031
वृष	02/03/2031

कन्या - मिथु	
02/03/2031	
01/09/2031	
वृष	17/03/2031
मेष	02/04/2031
मीन	17/04/2031
कुंभ	02/05/2031
मक	17/05/2031
धनु	01/06/2031
वृश्चि	17/06/2031
तुला	02/07/2031
कन्या	17/07/2031
सिंह	01/08/2031
कर्क	16/08/2031
मिथु	01/09/2031

कन्या - कर्क	
01/09/2031	
01/03/2032	
मिथु	16/09/2031
वृष	01/10/2031
मेष	16/10/2031
मीन	01/11/2031
कुंभ	16/11/2031
मक	01/12/2031
धनु	16/12/2031
वृश्चि	31/12/2031
तुला	16/01/2032
कन्या	31/01/2032
सिंह	15/02/2032
कर्क	01/03/2032

कन्या - सिंह	
01/03/2032	
31/08/2032	
कन्या	17/03/2032
तुला	01/04/2032
वृश्चि	16/04/2032
धनु	01/05/2032
मक	16/05/2032
कुंभ	01/06/2032
मीन	16/06/2032
मेष	01/07/2032
वृष	16/07/2032
मिथु	01/08/2032
कर्क	16/08/2032
सिंह	31/08/2032

कन्या - कन्या	
31/08/2032	
02/03/2033	
तुला	15/09/2032
वृश्चि	30/09/2032
धनु	16/10/2032
मक	31/10/2032
कुंभ	15/11/2032
मीन	30/11/2032
मेष	15/12/2032
वृष	31/12/2032
मिथु	15/01/2033
कर्क	30/01/2033
सिंह	14/02/2033
कन्या	02/03/2033

उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, ग्रहों के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, धन
पुखराज	गुरु	86%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	70%	धन, भाग्योदय
पन्ना	बुध	58%	स्वास्थ्य, सुख, दम्पति
नीलम	शनि	56%	भाग्योदय, धनार्जन, कम खर्च
मोती	चंद्र	50%	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	व्यय, पराक्रम हानि, दुर्घटना
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना, व्यय

रत्न की शुभता

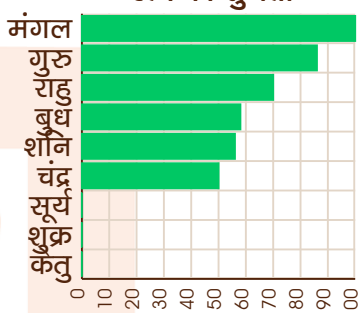

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	07/06/1991	9%	56%	100%	41%	98%	0%	56%	70%	0%
शनि	07/06/2010	0%	25%	92%	64%	86%	0%	69%	77%	0%
बुध	07/06/2027	9%	25%	100%	70%	86%	0%	56%	70%	0%
केतु	07/06/2034	0%	25%	100%	58%	86%	0%	38%	58%	16%
शुक्र	07/06/2054	0%	25%	100%	64%	86%	0%	62%	77%	3%
सूर्य	06/06/2060	22%	56%	100%	58%	92%	0%	38%	58%	0%
चंद्र	07/06/2070	9%	62%	100%	64%	86%	0%	56%	58%	0%
मंगल	07/06/2077	9%	56%	100%	41%	92%	0%	56%	58%	3%
राहु	07/06/2095	0%	25%	92%	58%	86%	0%	62%	83%	0%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति

तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, पन्ना, नीलम एवं मोती रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित

करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीयेश एवं नवमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते है। मूंगा रत्न प्रभाव से आपकी धन वृद्धि हो सकती है। इसकी शुभता से आपकी पारिवारिक वृद्धि हो सकती है। माता-पिता का सुख सहयोग आपको प्राप्त होगा। मूंगा रत्न भूमि-भवन संपति का सुख आपको दे सकता है। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। यह रत्न आपको आय के उत्तम साधन उपलब्ध करा सकता है। भाग्य भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न आपके भाग्योदय का रत्न सिद्ध हो सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। गुरु ग्रह का पुखराज रत्न आपके लिए शुभ रत्न रहेगा। पुखराज रत्न धारण कर आप धार्मिक आचरण करेंगे। आपकी परोपकार प्रवृत्ति देगा। रत्न शुभता से आप अप्रिय भाषण और व्यर्थ विषयों पर व्यय करने से बचेंगे। पुखराज शुभता आपको चिकित्सक, लोकसेवक सम्पादक, वेदज्ञानी, धर्मगुरु या सम्पादक बना सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको जीवन काल में धन, सम्पत्ति, सोना, वस्त्र आदि पर्याप्त मात्रा में देगा। साथ ही दूर प्रदेशों के प्रवास से आपको लाभ और कीर्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं दसमेश है। आप गुरु रत्न पुखराज रत्न धारण कर सकते है। पुखराज रत्न धारण से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो सकता है। माता-पिता सुख में बढ़ोतरी करने में पुखराज रत्न की शुभता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त पुखराज रत्न आपकी आरोग्यता को बढ़ाएगा। पारिवारिक सुख प्राप्ति के लिए भी पुखराज रत्न की शुभता आपके लिए बनी हुई है। पुखराज रत्न दशमेश का रत्न होने के कारण आपके आजीविका क्षेत्र को शुभ रख आपको उन्नति और सफलता के प्रर्याप्त अव्सर दे सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध

होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंड़ली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। राहु रत्न गोमेद धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। यह रत्न धारण कर आप धन संचय के प्रति सचेत रहेंगे। धन के प्रति आपका मोह बढ़ेगा। सत्य बोलने की ओर आप अग्रसर होंगे। गोमेद रत्न की शुभता चातुर्य एवं नीति निर्माण से धन संचय करने में आपको सफलता देगी। गोमेद आपके स्वभाव को सौम्य बनाए रखेगा। गोमेद रत्न धारण कर आप पारिवारिक संस्कारों का नियम से पालन करेंगे। यह रत्न आपको विचार अभिव्यक्ति का कौशल देगा।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल नवम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृतज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। बुध रत्न पन्ना आपकी बौद्धिक योग्यता, ज्ञान क्षमता एवं शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को जागृत करेगा। तथा पन्ना रत्न लेखन एवं कला का विकास करेगा। यह रत्न भाई-बहनों का स्नेह देगा एवं आप शत्रुओं को चातुर्य से परास्त कर सकेंगे। यह रत्न व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं लाभ प्राप्ति के सुअवसर देकर व्यापार में आपको अच्छी सफलता देगा। पन्ना रत्न मित्रों से संबंध मजबूत करेगा। संचार क्षेत्रों से आय मार्ग शुभफलकारी होंगे।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में बुध चतुर्थेश एवं सप्तमेश है। बुध रत्न पन्ना धारण कर आप बुध की शुभता में वृद्धि कर सकते है। रत्न शुभता से आपकी माता के स्वास्थ्य सुख में बढ़ोतरी हो सकती है। जीवन साथी का स्नेह आपके साथ बना रहेगा। पन्ना रत्न शुभता से आपका पारिवारिक जीवन उल्लासपूर्ण हो सकता है। भूमि-संपति से लाभ प्राप्ति में भी आपको यह पन्ना रत्न उपयोगी हो सकता है। बुध पन्ना आपको स्वतंत्र व्यापार की योग्यता दे सकता है। लाभ व सम्मान प्राप्ति के लिए भी यह पन्ना रत्न आपके लिए शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि नवम भाव में स्थित है। आप शनि रत्न नीलम धारण करें। नीलम रत्न की शुभता से आपको भ्रमणशील और धर्मात्मा के गुणों से ओत प्रोत करेगा। रत्न शुभता से आप मृदुभाषी बनेंगे। तीर्थयात्राओं में भी आपकी अच्छी रुचि बनेगी। रत्न प्रभाव से आप आध्यात्म की ओर उन्मुख होंगे। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि करेगा। नीलम रत्न शुभता आपको तीर्थयात्राओं से सुख देगी। यह रत्न आपको बड़ी प्रसिद्धि देगा। नीलम रत्न आपको शिक्षक, वकील या ज्योतिषी के रूप में विख्यात कर सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शनि एकादशेश एवं द्वादशेश है। आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है। नीलम रत्न शुभ होकर आपको उत्तम लाभ, मोक्ष, विदेश यात्रा एवं ऐश्वर्य प्राप्ति में शुभ हो सकता है। यह रत्न आपके आय मार्ग की बाधाओं को दूर कर सकता है। व्ययों पर नियंत्रण रखने में शनि रत्न लाभकारी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न शुभता से आपको बाहरी मामलों का प्रतिनिधित्व करने के अवसर प्राप्त हो सकते है। आय बढ़ने और व्ययों पर नियंत्रण होने

से संचित धन भी स्वतः ही बढ़ेगा। मेहनत, निष्ठा बढ़ सकती है और मानसिक चिंताओं में कमी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। चंद्र की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न आप को व्यापार क्षेत्र में लाभ देगा। यह रत्न आपको स्वाभिमानी बनायेगा। आप को ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति हो सकती है। भौतिक जीवन में आपकी रुचि बनी रहेगी। मोती रत्न आपके अपनी माता से संबन्ध मधुर बनाने में सहयोग करेगा। कार्य बाधरहित पूर्ण होंगे। कफ, जुकाम व खांसी जैसे रोगों से बचाव होगा। मोती रत्न आपके लिए शुभ होने के कारण आपको किसी बंधन का भय हो तो वह दूर होगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में चंद्र पंचमेश है। पंचमेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र की शुभता वृद्धि कर सकते है। यह रत्न आपको मन की शांति देगा तथा आपकी मानसिक चिंताओं को दूर करेगा। मोती रत्न की शुभता से आपके यश एवं प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप मधुरभाषी, उच्च मनोबल, दूरदशी एवं योग्य व्यक्ति बन सकते है। इस रत्न की शुभता से अनेक विद्याओं का धनी बना सकती है। मोती शुभ रत्न होकर आपके संतान पक्ष को प्रबल रख सकता है। रत्न प्रभाव से जीवन साथी के प्रति आपकी स्नेह वृद्धि हो सकती है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातःकाल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी

रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते है। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते है। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते है। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में सूर्य षष्ठेश है। सूर्य रत्न माणिक्य आपकी शिक्षा को अपूर्ण कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यक्तित्व के गुणों में कमी हो सकती है। समस्याओं का समाधान निकालने की जगह समस्याओं से भागने की प्रवृति यह रत्न आपमें विकसित कर सकता है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपको सरकारी क्षेत्रों में नौकरी प्राप्ति में संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से कोर्ट कचहरी के मामलों में आपको समझौते करने के लिए आप बाध्य हो सकते है। इसके अलावा माणिक्य रत्न रोग, ऋण एवं शत्रु पक्ष की चिंताओं में समय समय पर वृद्धि करता रहेगा। आत्मविश्वास की कमी आपकी उन्नति के विकास को बाधित कर सकती है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आपका वैवाहिक जीवन तनाव युक्त हो सकता है। हीरा रत्न आपके व्ययों को सौंदर्य विषयों पर केन्द्रित कर सकता है। इसके साथ ही रत्न प्रभाव से आपके व्यय ग्रहस्थ जीवन के सुख प्राप्ति से संबंधी हो सकते है। विदेश गमन, शयन सुख को भी यह रत्न प्रभावित कर रहा है। हीरा रत्न आपके मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को बाधित कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हो सकता है कि आपका धन-धान्य, आय एवं उन्नति आशातीत न हों। यह भी संभावित है कि आप अपने जीवन साथी का समय पर साथ न दे पाएं। दायित्वों के निर्वाह में आपसे कहीं कुछ त्रुटि हो सकती है। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ कमजोर हो सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीयेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा आपके व्यक्तित्व के तेज में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके कार्यों की निपुणता में न्यूनता देगा। यह रत्न साहस और पराक्रम दोनों का सहयोग आपको प्राप्त नहीं होने देगा। विषयों को सूक्ष्मता से समझने का गुण यह रत्न आपको दे सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको वात रोग दे सकता है। वैवाहिक जीवन के सुख भी रत्न प्रभाव से बाधित हो सकते है। इस रत्न को धारण करने के बाद आपकी जीवनशैली घूमने फिरने की अधिक हो सकती है। हीरा रत्न जीवन के विशेष विषयों में आपको परिवर्तन करना सुखद लग सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते है। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते है। अनजाने में आपसे पाप हो सकते है। आपके द्वारा किये गये कार्यो से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

दशानुसार रत्न विचार

बुध
(07/06/2010 - 07/06/2027)

बुध की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(07/06/2027 - 07/06/2034)

केतु की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(07/06/2034 - 07/06/2054)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(07/06/2054 - 06/06/2060)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(06/06/2060 - 07/06/2070)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती, गोमेद व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(07/06/2070 - 07/06/2077)

मंगल की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ

रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, लहसुनिया व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(07/06/2077 - 07/06/2095)

राहु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मीन लग्न की है। आपका व्यक्तित्व गुरु के समान है। आप थोड़े से जिद्दी, धार्मिक और संयमी स्वभाव के है। गुरु के समान आदर और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। बहुत जल्दी लोगों के बीच में अपनी जगह बना लेते है। आपके चहरे पर एक तेज होता हैं। आप अच्छे वक्ता, गुरु और सलाहकार साबित हो सकते हैं। साथ ही आप थोड़े से पारंपरिक भी हैं, अतः आसानी से अपनी जड़ों से दूर नहीं जा पाते। आपको आसानी से गुस्सा नहीं आता परन्तु जब आता है तो अत्यधिक आता है।

आपकी प्रकृति गंभीर है, और आप सभी बातें भूल सकते है। परन्तु अपनी परम्परा और सिद्धांतों को नहीं भूल सकते। धर्म का पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप महत्वकांशी है, आपको स्वतन्त्र रहना पसंद है, बड़ो की बातों पर अमल करते है। आत्मविश्वासी है, और अपने कार्यो में आपको दक्षता प्राप्त हैं। साथ ही आपने दृढ निश्चय का गुण होता है। इसी कारण कार्यो को समय पर पूरा करा लेते हैं। आपकी कार्यप्रणाली साही और सरल होती है परन्तु आप लोक अक्सर ज्ञान बाँटते हुए दिखाई देते हैं। आप गलती करने पर सजा भी देते हैं और कभी-कभी नम्र और कभी-कभी कठोर भी बन जाते हैं।

कुंडली में षष्ट भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता हैं। अष्टम भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती हैं। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते है। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके लग्न के लिए सूर्य षष्टेश, शुक्र अष्टमेश व तृतीयेश, मंगल द्वादशेश तथा नवमेश हैं। षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव- भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ट भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते है।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते है। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यो में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपति का नाश और माता -पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते है, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखे। जीवन साथी की भावनाओँ को आहात करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ

आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 6, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती तृतीय ढैया	02/03/1986-17/12/1987	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति है अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन

करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र

पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को अर्थोपार्जन करने में विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है। खर्चों की बहुलता रहती है। परिणामस्वरूप आर्थिक परेशानियाँ बनी रहती हैं और विद्या अध्ययन में विशेष रूप से सफलता हासिल नहीं होती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जीवन मानसिक रूप से अशान्त रहता है तथा जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय व्यतीत होता है। यहाँ तक कि कभी-कभी संबंध विच्छेद होने की सम्भावना भी बन जाती है। जातक अपने जीवन में अनेक स्त्रियों से संसर्ग कर अपमानित होता है। परिवारिक सदस्यों से विभेद रहता है और मित्रगण कदम-कदम पर धोखा देते हैं तथा सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव रहता है। जातक सदा परोपकार करने में तत्पर रहता है परन्तु अन्य लोग इसका नाजायज फायदा उठाते रहते हैं, जिससे जातक को केवल नुकसान ही मिलता है। जातक के पिता की मृत्यु अल्पायु में हो जाती है। सुख भोग का अभाव रहता है। भूत प्रेतों से परेशानियाँ बनी रहती हैं।

इस योग के कारण जातक को सन्तान सुख का अभाव रहता है। पुत्र होकर भी क्रूर एवं दुष्ट प्रवृत्ति का हो जाता है और मनमानी करने वाला होता है तथा आज्ञा का पालन प्रायः नहीं के बराबर ही करता है। जातक के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट होती रहती है और इस योग के प्रभाव से जातक मानसिक रूप से चिन्तित रहता है। अपने वृद्धावस्था को लेकर सोचता रहता है कि क्या होगा, किस तरह समय व्यतीत होगा तथा इस अवस्था में जाकर जातक को कष्ट ही मिलता है। लेकिन सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में इच्छित सफलता प्राप्त करता है और जीवन में सम्मान भी पाता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000(अट्ठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।

10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड्ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।
12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा महीने तक स्नान करें।
13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।
14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।
15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।

8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक शास्त्र

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने-संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतसंबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक दो होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश आप एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहेगी, लेकिन शारीरिक शक्ति आपकी बहुत अच्छी नहीं रहेगी। आपका बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा होगा एवं बुद्धि विवेक के कार्यों में आप दूसरों से बाजी मार ले जायेंगे। जिस प्रकार से आपके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता-बढ़ता रहता है, उसी तरह आप भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रहेंगे।

आपकी योजनाओं में बदलाव होता रहेगा एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति आपके अन्दर पाई जायेगी। धीरज एवं अध्यवसाय की आप में कमी रहेगी। इससे आपके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होंगे। आत्म विश्वास की मात्रा आप के अन्दर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोसा नहीं रख पायेंगे, जिससे कभी-कभी आपको निराशा का सामना करना पड़ेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे आप अपना लेंगे वैसे ही लाभ आपको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य आप एक लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे, तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगे।

आपको अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ेगा, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी-जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 2 है, जो आपका भाग्यांक भी है। इसका स्वामी चंद्र ग्रह है। मूलांक एवं भाग्यांक एक ही होने से आपके अंदर चंद्रमा के गुण-अवगुणों की मात्रा द्विगुणित हो जाएगी। इसके

प्रभाववश आपकी कल्पना शक्ति अत्यधिक उच्च कोटि की रहेगी एवं बुद्धि-चातुर्य काफी विकसित रहेगा।

आपकी सामाजिक स्थिति काफी अच्छी रहेगी एवं समयानुसार आपका भाग्योदय उच्च कोटि का होगा। आपका भाग्योदय आपके बुद्धि-चातुर्य से होगा। आप ऐसे ही रोजगार-व्यवसाय का चुनाव करेंगे, जिसमें शारीरिक श्रम की अपेक्षा बुद्धि का प्रयोग अधिक होता हो। आपके भाग्योदय में थोड़ी बहुत रुकावटें अवश्य आएंगी। इसका कारण आपकी चंचल बुद्धि एवं अस्थिर चित्त का होना रहेगा। आपको चाहिए आप जो भी निर्णय करें वह काफी सोच-विचार कर करें। आर्थिक दृष्टिकोण से आप धन-धान्य एवं संपत्ति से सुखी रहेंगे। रोजगार-व्यापार में आप व्यवहार कुशल एवं बुद्धिमान कहलाएंगे।

आपका भाग्योदय 20 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा। 29 वें वर्ष पर उन्नति प्राप्त होगी तथा 38 वें वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 2, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपका मूलांक और भाग्यांक एक ही होने से मूलांक-भाग्यांक के फलों में द्विगुणित वृद्धि होगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 2 एवं भाग्यांक 2 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। कर्क राशि चंद्रमा की स्वयं की राशि है। 13 मई से 14 जून तक सूर्य वृष राशि में होता है, जो कि चंद्रमा की उच्च राशि है। अतः यह समय मूलांक दो के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए कोई भी नया या शुभ कार्य करने हेतु सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार के दिन अच्छे सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन्ही वारों में आपके मूलांक की तारीख भी हो तो ऐसा दिन सभी कार्यों के लिये अच्छा रहेगा।

शुभ तारीखें

जब कभी आपको कोई महत्वपूर्ण कार्य करना हो, नया कार्य या व्यापार प्रारंभ करना हो, अथवा किसी को विशेष पत्र लिखना हो या किसी से विशेष कार्यवश मिलने जाना हो तो आप किसी भी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को ये सारे कार्य करें। यदि इन तारीखों में आपका अनुकूल वार भी रहता है तो ऐसा दिन आपके कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी मास की 5, 8, 14, 17, 23 एवं 26 तारीखें कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए ठीक नहीं रहेंगी। अतः इन तारीखों में सोच-समझ कर ही कोई शुभ कार्य करें।

मित्रता या साझेदारी

किसी से भी मित्रता करते समय यह देखना आपके हित में रहेगा कि यदि उसका जन्म अंग्रेजी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति आपके लिऐ हितकारी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपके लिऐ मूलांक 2, 7 एवं 9 प्रभावित महिलाएं अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। आपको चाहिए कि आप इन्हीं मूलांक वाली महिलाओं से मित्रता इत्यादि रखें, या ऐसी महिलाएं जिनका जन्म किसी भी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो तो ऐसी महिलाएं हमेशा आपके अनुकूल रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपको अपने वस्त्रों का चुनाव करते समय सफेद, काफूरी, हरा एवं अंगूरी रंगों का उपयोग अधिक मात्रा में करने पर वांछित लाभ प्राप्त होंगे। हो सके तो आप अपने कमरे के पर्दे, चादर, तकिया इत्यादि में इन रंगो का इस्तेमाल कर सकते हैं। इन रंगों का रुमाल तो हमेशा अपने पास रखना आपके लिए विशेष लाभप्रद रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उत्तर-पश्चिम में वायव्य कोण स्थान में रहना शुभ रहेगा। जिस क्षेत्र में आप रहते हों, यदि वह वायव्य कोण में स्थित होगा तो अधिक अनुकूल रहेगा। मकान के नंबर का योग यदि 2, 7, या 9 आता हो तो ऐसा भवन आपके लिए अधिक सुविधाजनक रहेगा।

शुभ वाहन नं

आपके वाहन के पंजीकरण हेतु अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना अच्छा रहेगा। आपका मूलांक 2 होने से आपके शुभ अंक 2,7,9 रहेंगे। यहां आपके वाहन इत्यादि के पंजीकरण क्रमांक के शुभ अंक भी रहेंगे, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5231=2 इत्यादि। यात्रा के वाहनों में भी इन अंकों का उपयोग करें, जिसके फलस्वरूप आपकी यात्रा सुखमय रहेगी। अगर आप होटल आदि में कमरा इत्यादि लेते हैं तो उसके लिए भी यही नंबर 2,7,9 इत्यादि लें, जैसे कमरा 101 = 2। तभी आपके लिए वह कमरा अच्छा साबित होगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको कमजोरी, क्षीणता, उद्वेग, मस्तक पीड़ा, छोटी-छोटी दुर्घटना, हृदय रोग, संवेदनशीलता, भावुकता, स्नायु दुर्बलता, कब्ज, आंत रोग, मूत्र रोग, गैस रोग इत्यादि होंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शिव उपासना पर बल देना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए रोजगार-व्यापार हेतु ये क्षेत्र अनुकूल रहेंगे, जैसे द्रव्य पदार्थ, तैलीय कार्य, समुद्र यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, पशु व्यवसाय, चीनी मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसपूर्ण पदार्थ, दूध, दही, घृत, कागज, जल, कृषि एवं चीनी के व्यवसाय एवं औषधि विक्रेता, भ्रमण कार्य, एजेंन्ट, प्रतिनिधित्व, संपादन, लेखन, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूप्रबंध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती, हार, मणि, माणिक्य, रत्न इत्यादि का क्रय विक्रय, पत्थर व भूगर्भ इत्यादि के कार्य।

व्रतोपवास

जिस दिन सोमवार को चित्रा नक्षत्र हो उस दिन से चंद्रमा का व्रत प्रारम्भ करें। विधान के अनुसार 54 सोमवार तक अथवा न्यूनतम सात सोमवार व्रत आवश्यक है। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करें एवं श्वेत वस्तुओं का दान करें तथा चंद्रमा के मंत्र का यथा शक्ति, मोती की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पांच रत्ती मोती आपके लिए प्रमुख रत्न है। यदि आप मोती धारण ना कर सकें तो मूनस्टोन, चंद्रमणि, दूधिया हकीक, सोमवार की सुबह दायें हाथ की कनिष्ठा अंगुलि में, चांदी की अंगूठी में जड़वा कर लाभ के चौघड़िया मुहूर्त्त में धारण करें।

अनुकूल देवता

आप चंद्रोपासना करें अथवा भगवान शिव की आराधना करें। भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र ओम् नमः शिवाय का नित्य जप करें। प्रति सोमवार को कम से कम इक्कीस या एक सौ आठ बेल पत्र भगवान शिव को अर्पित करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों से समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान शिव के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपको चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

चंद्र गायत्री मंत्र - अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप चंद्र का ध्यान करें, मन में चंद्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोमुकुटभूषणम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ चंद्र को अनुकूल बनाने हेतु चंद्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सो तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ श्राँ श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः।। जप संख्या 13000।।

वनस्पति धारण

आप सोमवार के दिन एक इंच लंबी खिरनी की जड़ ला कर, सफेद ऊन के धागे में लपेट कर, गले या दाहिने हाथ में बांधे, स्वर्ण या तांबे ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके प्रत्येक सोमवार को एक बाल्टी या बर्तन में पंच गव्य-चांदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ चंद्र का प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

चंद्र की शांति हेतु योग्य व्यक्ति के लिए चंद्र के पदार्थ, चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

चंद्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु चंद्र यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या लाल धागे में, सोमवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जाएंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पाएंगे। यह सूचना आपको भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पाएंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्जवल है।

लग्न फल

आपका जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में मीन लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर कन्या का नवमांश एवं मीन का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादिक ज्योतिषीय आकृति आपके जीवन को धन संपत्ति से युक्त आमोद-प्रमोद एवं हर्षोल्लास से परिपूर्ण आनंदमय जीवन बिताने के साधनों से युक्त करता है।

प्रायः हर दशा में ज्योतिषीय प्रभाव आपका पक्षधर है। यदि आप अपने हस्तगत कार्य व्यवसाय को समय पर सुव्यवस्थित ढंग एवं समर्पण की भावना से संपादित कर लिए तो आपका जीवन सफल होने की संभावना है, बर्शेते कि आप सकारात्मक ढंग से कार्यो का संपादन करें। फलस्वरूप यह आपके लिए उन्नति कारक होगा। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि आप वासनात्मक प्रवृति को बहुत महत्त्व देकर इन कार्यो से संबंधित रहते है। यदि आप इस प्रवृति हेतु सतर्कता नहीं बरतें तो यह वासना आपको मिट्टी पलीत कर देगा। अर्थात् आपका विनाश कर देगा। आप इनका उन्मूलन करें अन्यथा इस उत्तेजना के कारण आपके जीवन की ललिमा नष्ट हो जाएगी तथा इस प्रवृति के कारण मात्र आपका परिवार ही अस्त-व्यस्त नहीं हो जाएगा। बल्कि यह आपको अकर्मण्य बना कर आपकें कार्य कलाप से भी दिशा हीन बना देगा। परंतु यदि आप इस प्रवृत्ति को समाप्त कर दिए तो आप बहुत अच्छी प्रकार उन्नति कर सकेंगे। आप धन संचय कर सकेंगे। इस प्रकार आप मात्र अपने उपार्जन को ही नहीं बढ़ाएंगे, बल्कि आप धन संपत्ति भी सर्वथा अर्जित करेंगे। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप अपने प्रतिपक्षी को परास्त कर देंगे जो कि आपके कार्य-व्यवसाय को नष्ट करने का प्रयास करेगा।

आप मात्र एक सुखद एवं अभिमंत्रित भवन के स्वामी होंगे। बल्कि हर दशा में अपने मित्रों के अपना कर अपनी मित्र मंडली का विस्तार करेंगे। आप समाजिक क्लब के सदस्य होंगे। आप अपनी भद्रता एवं अतिथ्य सत्कार के कारण अपने मित्र मंडली में प्रख्यात भी होंगे। परंतु आपको कुछ समस्याओं से मुठ-भेड़ भी करना पड़ेगा। आप अन्य लोगों के लिए किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाने वाले बल्कि अतिशय विश्वास पात्र हैं। आप किसी के भी साथ सामंजस्य एवं सकारात्मक फल प्राप्ति की उत्कंठा रखते हैं। जब आप किसी भी मित्र के साथ प्रतिज्ञा करते हैं उसे बहुत अच्छी प्रकार निभाते हैं। परंतु क्या वे इस प्रकार पीछें भी लौट सकते है। नहीं। वास्तव में संयोगवश ऐसा कुछ घटित हो जाए उस परिस्थिति में जो आपसे संबंधित है। वे लोग आपकी आवश्यकता के समय अथवा जरूरत पड़ने पर अपने कार्य को त्याग कर आपके पक्ष में अपना योगदान करते हैं। अतएव आप उन पर अत्यंत भरोसा कर के अन्यों को उपेक्षित अथवा वहिष्कृत कर देते हैं।

यदि आप सतर्कता पूर्वक मर्यादित पथ पर चलते हैं तो आपके पारिवारिक सदस्य तथा सामान्य जन आपके गुणों एवं साहसिक प्रवृति तथा दानशीलता हेतु आपकी प्रशंसा करेंगे। आप धार्मिक प्रवृति के प्राणी हैं। आप तीर्थ स्थलों का परिदर्शन करेंगे एवं पौढ़ावस्था में आप भक्ति के प्रदर्शन में अभिरूचि रखेंगे तथा धर्म-दर्शन एवं पराविज्ञान में दक्ष हो जाएंगे। आप इस विषय में बहुत अधिक ज्ञानार्जन कर सकते हैं। यदि आप चयन करेंगे तो कोई छोटा धर्मोपदेशक भी बन सकते हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन गुरुवार, मंगलवार एवं रविवार का दिन उत्तम हैं। शेष साप्ताहिक तीन दिन यथा बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन सामान्य फलदायी है।

आपके लिए अंकों में उत्तम एवं विश्वसनीय अंक 1, 3, 4 एवं 9 अंक है। परंतु हर दशा में 8 अंक अनुकूल नहीं है।

आपके लिए रंगों में रंग पीला, लाल, गुलाबी एवं नारंगी रंग आपके लिए अनुकूल हैं। परंतु नीला रंग आपके लिए किसी भी दशा में अनुकूल नहीं है।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र,

सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आयुर्दाय, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता-पिता, रिपु, विवाह एवं व्यय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा- भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ रहते हैं। इनकी प्रवृति सरल एवं समानता की प्रतीक होती है तथा भेद भाव से ये दूर रहते हैं। सौम्यता का भाव भी इनके चेहरे से परिलक्षित होता है तथा विद्वता एवं बुद्धिमता के क्षेत्र में ये श्रेष्ठ होते हैं। नवीन विचारों का सृजन करने में ये चतुर होते हैं तथा लोग भी इनके विचारों से प्रभावित तथा सहमत रहते हैं जिससे समाज में ये आदरणीय प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध होते हैं। भौतिकता के प्रति इनका पूर्ण आकर्षण रहता है तथा भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मनन शीलता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है।

प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करना इनको सुखकर प्रतीत होता है। साथ ही प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुकता का प्रदर्शन करते हैं। ये अत्यंत ही व्यवहार कुशल होते हैं तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ कार्यों को सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलता अर्जित करते हैं फलतः इनके उन्नति मार्ग सर्वदा प्रशस्त रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ बलवान एवं बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। अपनी बुद्धिमता से आप शास्त्रीय विषयों का परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में अपना वर्चस्व स्थापित करेंगे। आप एक विचारशील पुरुष होंगे तथा ब्रहम आदि के विषय में भी चिन्तनशील रहेंगे तथा भौतिक सुखों का भी उपभोग करेंगे। अतः धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगे। आपका आचरण अच्छा होगा तथा धन संग्रह के प्रति आपकी प्रवृति रहेगी। सांसारिक कार्यों को करने में आप दक्ष होंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी जिससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी तथा सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। आपको घर से अन्यत्र सुख एवं उन्नति प्राप्त होगी। अतः आपको जन्म भूमि से इतर स्थान को अपना कार्य क्षेत्र में बनाना चाहिए।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना होगी तथा उनके नाम से आपको जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही परिवारिक सम्मान एवं उन्नति की वृद्धि में भी आपका प्रमुख योगदान रहेगा तथा अपने श्रेष्ठ कार्यों से सामाजिक सम्मान प्राप्त करेंगें। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पत्नी के प्रति आपके मन मे तीव्र आकर्षण होगा फलतः आपके अधिकांश कार्य उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न होंगे। इसके साथ ही पुत्र संतति का भी आपको उचित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समयानुसार धार्मिक कृत्यों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक एवं आत्मिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग

में आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रुचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। इसके प्रभाव से आप सतर्क, सक्रिय तथा बौद्धिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी उत्तम रहेगी एवं आसानी से किसी वस्तु को भूल नहीं पाएंगे। भाई बहिनों के सुख एवं सहयोग को प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही वे भी साहसी एवं परोपकारी होंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वे महत्वाकांक्षी भी होंगे तथा आपके पूर्ण विश्वास पात्र तथा आज्ञाकारी रहेंगे। पारिवारिक शान्ति एवं परस्पर सौहार्द के भाव को रखने के लिए समय समय पर आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे तनाव एवं मतभेदों में न्यूनता रहेगी।

आप नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में सभी लोग आपकी संगठन शक्ति से प्रभावित होंगे तथा आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा दार्शनिक स्वभाव ईमानदार तथा स्पष्टवादिता आपके प्रमुख गुण रहेंगे। अतः इनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा समाज में प्रभावशाली पद को अर्जित करेंगे। आधुनिक संचार सुविधाओं का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। जैसे टेलीफोन टेलीविजन वाहन या अन्य साधन आपको सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति आपका विशेष लगाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनसे मनोंरजन करके मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। जीवन में दूर समीप की यात्राओं से आप लाभ एवं ख्याति अर्जित करेंगे तथा यात्रा के मध्य आपके कई मित्र भी बनेंगे। ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों के अध्ययन में भी आपकी रूचि रहेगी इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग के मित्र, प्रतापी, आतिथ्य सत्कार करने वाले, दानी यशस्वी विद्धान तथा अच्छे विचारों से सर्वदा युक्त रहेंगे ।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शो से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यर्थाथवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप रक्त सम्बन्धियों से समय समय पर विरोध का सामना करेंगे साथ ही उनसे आपको अनुकूल सहयोग भी नहीं मिलेगा। आपके उत्कृष्ट कार्य कलापों से उनके मन में ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध के कारण भी आपको कार्य क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके शत्रु उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति होंगे जो समाज या सरकार के विभिन्न क्षेत्रों से रहेंगे तथा वे हमेशा आपके मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन आप अपनी बुद्धिमता, चतुराई शक्ति तथा अन्य गुप्त सूत्रों से उनका सामना तथा पराजित करने में सफल सिद्ध होंगे।

सेवक वर्ग की सेवा प्राप्त करने के लिए आप प्रायः उत्सुक रहेंगे तथा इनके बिना आपके कई कार्य पूर्ण भी नहीं होंगे। आपके नौकर अच्छे होंगे तथा आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करने में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे लेकिन वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे। साथ ही वे यदा कदा चोरी आदि करने के लिए भी तत्पर हो सकते हैं। अतः कीमती वस्तुओं को उनकी पहुँच से बाहर रखना चाहिए। आप अपने उच्च स्तर को बनाने के लिए अनावश्यक व्यय करेंगे यह व्यय आपकी आय से अधिक होगा। यद्यपि आप सोच समझकर व्यय करेंगे परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है लेकिन समय पर वापस न करने में आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः ऋण आदि लेने की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

मामा मामियों से आपको समय समय पर इच्छित सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपकी वे पूर्ण रूप से सहायता करते रहेंगे परन्तु कभी कभी वे सवर्थवश आपकी मदद करेंगे जिससे आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंचेगी। दीवानी या फौजदारी मुकद्दमों में आप सामान्यतया धन तथा समय की ही बर्बादी करेंगे। लेकिन यदि आप नियमानुसार इन कार्यो को करेंगे तो इनमें आपको इच्छित लाभ तथा विजय प्राप्त हो सकती है । साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के खान पान का उचित ध्यान रखना चाहिए तथा गर्म पदार्थो की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए ।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रियवक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यशाली एवं विविध कार्यो में दक्ष होता है तथा वह शिक्षित विद्वान प्रसिद्ध सांसारिक कार्यो में दक्ष एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने संभाषण हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी साथ ही वह स्वच्छता प्रिय होंगी एवं सफाई के प्रति विशेष सजग होंगी सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सडोलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर भी आकर्षक रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से आपका विवाह बंधु एवं संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति सम्मान आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को आप परस्पर सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे आपस में विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न होगा। इससे दाम्पत्यों संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह मिलेगा। साथ ही आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान देंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी भी सलाह लेंगे जिससे आपस में विश्वसनीयता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का हार्दिक सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी माता पिता के समान सेवा करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी जिससे परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के समीपस्थ संबंधी से साझेदारी की जाए तो इससे शुभ फल प्राप्त होंगे एवं परस्पर विश्वसनीयता भी बनी रहेगी ।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में विश्वास करेंगे। साथ ही आपकी पूर्वाभास तथा अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी जिससे आप सही रूप से भविष्यवाणियां करने में समर्थ हो सकेंगे। इस क्षेत्र में आपकी काफी रूचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करेंगे एवं इसमें शोधकार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपको धनार्जन भी होगा एवं समाज में आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। साथ ही इससे आपके मित्रों की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा कई आध्यात्मिक एवं पराविद्या वेता आपके मित्र होंगे ।

आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा इससे आपको काफी लाभ होगा। साथ ही जमीन जायदाद के कार्य से आपको समय समय पर लाभ भी होता रहेगा। आपके कार्य से लोग सामान्यतया प्रसन्न रहेंगे तथा आपको मुंह मांगा दाम देंगे। शादी से भी आपको उचित लाभ होगा तथा किसी प्रकार से जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसमें आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन आभूषण एवं अन्य आधुनिक उपकरण उपहार स्वरूप प्राप्त होंगे। इससे आप तथा आपकी पत्नी ससुराल वालों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। बीमे आदि से भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः न्यूनाधिक रूप से आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना के कोई विशेष अवसर नहीं आएंगे। यदि कोई ऐसी घटना घट भी गई भी तो उसका मामूली प्रभाव होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा उत्तम स्वास्थ से युक्त होकर आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से प्रारंभ में धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी लेकिन आयु के साथ साथ आप मन्दिर या तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक कार्य कलाप सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा को भी आरम्भ करेंगे। भाग्य आपके लिए प्रायः सहायक रहेगा। लम्बी यात्राओं के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र संबंधी शास्त्रों में भी आपकी रूचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक संबधित ग्रंथों का अध्ययन करके इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अपने निवास स्थान में पूजा स्थल का भी निर्माण करवायें। परोपकार संबंधी कार्यो तथा भगवान के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके साथ ही आप कई शुभ कार्य क्रमों को सम्पन्न करेंगे तथा हमेशा प्रसन्नचित रहेंगे।

युवावस्था में आप ध्यान, योगादिक्रियाओं में भी रूचि लेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनको सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे संबंधित ग्रंथों को पढ़ेंगे। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी जिससे आपको पूर्वाभास या भविष्य संबंधी जानकारियां हो सकती है। आप अपने जीवन में निश्चय ही कोई धार्मिक एवं पुण्य संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगे जैसे मंदिर अस्पताल या तालाब आदि का निर्माण। साथ ही अन्यत्र भी दानादि कार्य करते रहेंगे। प्रारंभिक अवस्था में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न कर सकते है । ये यात्राएं शिक्षा संबंधी भी हो सकते है या व्यापारिक एवं धार्मिक कार्य संबंधी भी लेकिन इनसे आपको सम्मान लाभ एवं ख्याति अवश्य प्राप्त होगी तथा समाज में अपने सत्कर्मों के लिए जाने जाएंगे। वृद्धावस्था में पौत्रों से आपको सौभाग्य, सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्मों के पुण्य के प्रभाव से आपका यह जीवन सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है धनु राशि अग्नितत्व राशि है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्जवल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजैंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने,आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेगे।

जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारभिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधो में भी मधुरता होगी तथाा वैचारिक एवं सैद्धांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिकता का भाव भी होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप किसी भी कार्य को सोच समझकर तथा व्यापारिक दृष्टि से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मानसिक शक्ति की भी आप में प्रबलता रहेगी। प्रबन्ध एवं संगठन शक्ति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा एक पराक्रमी परिश्रमी तथा योग्य व्यक्ति होंगे अतः जीवन में अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप एक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी पुरूष भी होंगे तथा प्रसिद्ध धन-ऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे । जीवन में उन्नति या लाभार्जन का आप कोई भी अवसर नहीं छोड़ेगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी तथा आय स्रोतों में नित्य वृद्धि होगी जिससे प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में आप किसी भी प्रकार का खतरा नहीं उठाएंगे। लकड़ी या लोहे से संबंधित व्यापार या कार्य से आप विशिष्ट लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से जीवन में विशिष्ट लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा वे आपका पुत्रवत पालन करेंगी तथा समय समय पर मार्ग दर्शन भी करती रहेंगी। आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं होगा परन्तु मित्रवर्ग के मध्य आदरणीय विश्वसनीय तथा प्रतिष्ठा से युक्त रहेंगे। समाज में आपका स्तर उच्च रहेगा तथा सभी सामाजिक जनों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनकी सेवा तथा भलाई करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। अतः अपने क्षेत्र या समाज में आपको अच्छी ख्याति प्राप्त होगी लेकिन यदा कदा बाएं कान संबंधी परेशानी से आप कष्ट की अनुभूति कर सकते है परन्तु आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अच्छी व्यापारिक क्षमता रहेगी तथा धन एवं शक्ति से हमेशा युक्त रहेंगे। वृद्धावस्था में आप अपने बच्चो या किसी अन्य संबंधी पर आश्रित नहीं रहेंगे क्योंकि पहले से ही इस समय के लिए पूर्ण धन सुरक्षित रखेंगे। अन्य जनों के प्रति आपके मन में सहानुभूति रहेगी तथा यत्नपूर्वक उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से सहायता करते रहेंगे।

आपको मध्यमवस्था में पूर्ण धन मान एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा धन का आप बुद्धिमता एवं सावधानी पूर्वक उपयोग करेंगे। इस प्रकार आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। परिवार के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधा रहन सहन एवं पठन पाठन का स्तर बढ़ाने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगे तथा ऐसे कार्यो पर आपका प्रचुर मात्रा में व्यय होगा। सांसारिक सुख संसाधनों तथा भौतिक उपकरणों के प्रति भी आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर भी आप प्रचुर मात्रा में श्रवयय करेंगे। साथ ही आवास संबंधी साज सज्जा पर भी उपयुक्त व्यय होगा। जिससे आर्थिक स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त दान या धार्मिक कार्य कलापों पर भी समय समय पर आपका व्यय होता रहेगा।

यात्राओं के प्रति भी आपकी रूचि बनी रहेगी तथा समय समय पर व्यवसाय या कार्य संबंधी याात्राएं होगी जिससे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारिक तथा भ्रमण संबधी आपकी जीवन में विदेश यात्रा की भी संभावना रहेगी।

नक्षत्र फल

नक्षत्र, राशि एवं पाया का संबंध चंद्र से है एवं ये आपके स्वभाव, व्यवहार, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के निधारण में महती भूमिका अदा करते हैं।

नक्षत्रफल आपके स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के संबंध में सटीक फलादेश बताता है। वैदिक अंक ज्योतिष में व्यक्तित्व के बारे में पता करने के लिए जन्म नक्षत्र की सहायता मुख्य रूप से ली जाती है। भारतीय महर्षियों का मानना रहा है कि नक्षत्र में ही हमारे कर्म के फल संचित रहते हैं। नक्षत्र, राशि एवं पाया चंद्र से संबंधित हैं तथा ये हमारे व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, योग्यता आदि का चित्रण करते हैं।

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, नाड़ी अन्त्य, योनि व्याघ्र, गण राक्षस तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ते" या "तै" से प्रारम्भ होगा।

आप हमेशा अपनी स्त्री के वश में रहेंगे तथा अधिकांश ग्रहस्थ संबंधी कार्यों को उसी के निर्देश तथा सलाह से सम्पन्न करेंगे। उसका आपके ऊपर इतना प्रभाव होगा कि आप उसकी आज्ञा के बिना स्वतंत्र रूप से कुछ करने में अपने आपको असमर्थ सा अनुभव करेंगे। आपका स्वभाव भी अभिमानी होगा तथा आप अपनी इस प्रवृति का समय समय अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे तथा आपका कोई भी दुश्मन आपके समक्ष नही टिकेगा। साथ ही आप उग्र स्वभाव के भी होंगे तथा अकारण ही छोटी छोटी बातों में उत्तेजित होते रहेंगे। अतः इससे कई बार आप अतिरिक्त परेशानी का सामना करेंगे।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक कोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

कभी कभी आप अन्य जनों के विरूद्ध अकारण ही अपने मन में द्वेष भावना को रखने वाले होंगे। यदि कोई अन्य आदमी सफलता प्राप्त करता हैं या कोई विशेष उपलब्धि उसे प्राप्त होती हैं तो उसके प्रति आपके मन में व्यर्थ ही ईर्ष्या तथा द्वेष की भावना उत्पन्न हो जाएगी। दूसरों की चीजों को देख कर आपके मन लोभ की भावना उत्पन्न होगी जिससे आप मानसिक रूप से हमेशा आन्दोलित रहेंगे। आपका शरीर तजे युक्त तथा आकर्षक रहेगा तथा बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगे एवं इसी वाक्यटुता के आधार पर कई महत्वपूर्ण सफलताएं भी अजित करेंगे।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आप प्रारम्भ से ही धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति रहेंगे तथा देवताओं के हवनकार्यादि धार्मिक कृत्यो को करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप का मित्रवर्ग भी सीमित रहेगा।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आप अर्न्तमन में दया के भाव की भी अल्पता कभी कभी दृष्गिोचर होगी। साथ ही समाज में अन्य जनों से भी आपके प्रेमपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोऽतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीडित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से देखने में सुन्दर रहेंगे। आपकी आखें बड़ी तथा नाक ऊंची होगी। समाज में अन्य जनों से आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे तथा विविध प्रकार के वाहन साधनो से भी सुसम्पन्न रहेंगे। वाहन एवं भूमि आदि जायदाद को आप शक्ति शाली होंगे तथा इनसे पूर्ण रूपेण धनार्जन करके धनैश्वर्य से सर्वथा युक्त रहेंगे एवं आनन्दपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे तथा आपका समाज में पूर्ण प्रभाव रहेगा जिससे लोग आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। पत्नी से आप हमेशा पराजित से रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को उसी की भावना एवं सलाह से सदा सम्पन्न करेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में आप दक्षता प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियमानुसार इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। धन धान्यादि को संग्रह करने की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगे तथा बन्धु वर्ग के कल्याण कार्यों को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।

सारावली

आप समाज में देव, ब्राहमण तथा भद्रजनों की सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा शुद्धता से रहकर अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शरीर भी सुगन्धित रहेगा। आपको यात्रा तथा भ्रमणादि का विशेष शौक रहेगा अतः इसी में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगे। क्रय विक्रय के कार्य में आप अत्यन्त चतुराई का प्रदर्शन करेंगे। आप समाज में देववाचक शब्द के द्वितीय नाम को धारण करके समाज में ख्याति प्राप्त कर सकेंगे। आप अपने समीपी संबंधियों तथा बन्धुओं का प्रयत्न पूर्वक भलाई तथा सहयोग करेंगे। परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपको समाज में अपेक्षित भी होना पड़ेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य की पूर्ण प्रधानता रहेंगी अतः अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। न्याय के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेंगी तथा स्वयं भी हमेशा निष्पक्ष भाव से अपने भावों को स्पष्ट करेंगे। आपकी इस निष्पक्षता तथा न्याय के प्रति श्रद्धा को देखकर अन्य लोग अपने विवादों का समाधान करने के लिए आपको मध्यस्थ या पंच बनाकर आपका फैसला स्वीकार करेंगे। आपकी सन्तति भी अल्प मात्रा में ही रहेंगी तथा भाग्योदय भी काफी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद न बङा अपितु मध्यम रहेगा। सरकार के उच्च अधिकारी तथा पदाधिकारी वर्ग को प्रसन्न करने में आप चतुर होंगे तथा इन लोगों से पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। कभी कभी आप अत्याधिक बोलेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता होगी क्यो कि लोग आपसे ऐसी अपेक्षा नही करेंगे। साथ ज्योतिष शास्त्र का भी आपको न्यूनाधिक ज्ञान रहेगा। भाइयों एवं सेवक जनों के प्रति आप पूर्ण रूप से अनुरक्त रहेंगे।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप अनुचित अवसर पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको मानसिक तथा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ सकेगा तथा दुःखनानुभूति भी करनी

पड़ेगी। आप मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका प्रदर्शन आप जीवन में समयानुसार करती रहेंगी। आपकी आखें हमेशा चंचल रहेगी तथा धनागमन भी चंचलता से ही होगा अर्थात् कभी अत्याधिक तथा कभी अत्यल्प। इससे आपकी आर्थिक स्थिति हमेशा विषम ही बनी रहेगी। आप घर में बलवान तथा बाहर निर्बलता का अहसास करेंगे। मित्रो के मध्य आप प्रिय रहेंगे तथा विदेश में भी निवास कर सकेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अपने जीवन काल में विविध प्रकार के वाहनों तथा ऐश्वर्य वैभव से आप सुसम्पन्न रहकर इनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति दानशील रहेंगी तथा दीन दुःखियों की यथा शक्ति आप सहयोग तथा सहायता करते रहेंगे। स्त्री के आप प्रिय रहेंगे तथा उससे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में बोलने वाले होंगे। आपका मन में भी करूणा के भाव की परिलक्षित होगा। लेकिन साहस का आप में अभाव नही रहेगा। अपने साहसी स्वभाव के कारण अधिकांश कार्यों को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए स्वयं उत्सुक रहेंगे। आपकी छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोध प्रदर्शन करने की आदत रहेगी। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा शारीरिक बल का अभाव नही होगा परन्तु अन्य जनों से आपका कलह चलता रहेगा फलतः अधिकांश लोग आपसे वैमनस्य का भाव रखेंगे। अतः अन्य जनों से विनम्रता पूर्वक व्यवहार करें।

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। आपकी आकृति भी सुन्दर होगी परन्तु वाणी कभी कभी अत्यन्त ही कटु होगी जो श्रोता को बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगेगी। अतः मधुर शब्दों का वार्तालाप में प्रयोग करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रता प्रिय रहेगी। आप किसी भी कार्य को अपनी इच्छानुसार करना पसन्द करेंगे तथा बाहरी किसी भी हस्तक्षेप को पसन्द नही करेंगे। धन धान्य का आप यत्नपूर्वक अर्जन करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे। गुणों को ग्रहण करने की प्रवृति भी आपके मन में हमेशा विद्यमान रहेगी। आप अपने कार्यक्षेत्र में एक पूर्ण प्रशिक्षित विशेषज्ञ के रूप में कार्य करेंगे। अतः सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। धन वैभव तथा ऐश्वर्य का आपके पास अभाव नही रहेगा तथा इससे पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न होकर जीवन व्यतीत करेंगे। लेकिन आप स्वयं ही अपनी प्रशंसा अपने मुख से करेंगे अतः इससे कभी कभी आपकी सामाजिक अवमान होगी।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार

की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शुक्ल योग, शतभिषा नक्षत्र तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सर्वथा वजित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा नही चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, चावल, श्वेत चन्दन आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फल भी कम ही होंगे। साथ ही शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

लाल किताब

लाल किताब को इसके सहज, सस्ते एवं विश्वसनीय उपायों के कारण ज्योतिष का वंडर बुक कहा जाता है।

लाल किताब के ज्ञान को व्यावहारिक माना जाता है क्योंकि यह परंपरागत ज्योतिष के ज्ञान से अलग है। वैदिक ज्योतिष की भांति लाल किताब में भी नौ ग्रहों को ही प्रधानता दी गई है। साथ ही 12 भावों की ग्रह स्थिति के अनुसार फलादेश किया जाता है। फिर भी वैदिक ज्योतिष और लाल किताब में कुछ मूलभूत अंतर है। वैदिक ज्योतिष में भाव स्थिर होते हैं किंतु राशियां स्थिर नहीं होतीं किंतु लाल किताब में भाव एवं राशियां दोनों ही स्थिर होते हैं। लाल किताब कुंडली एवं वर्षफल भी उपायों के संदर्भ में विशद सूचना प्रदान करते हैं जिसे बिल्कुल अलग तरह का, विश्वसनीय, सहज एवं सस्ता माना जाता है।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती

होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी

धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधू बनना चाहो तो साधू न बन कर जागीरदार बनेंगे। आपको बड़े-बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगे। नौकरी-व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद रहेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगे। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिलेगा या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधवा स्त्री से संबंध होंगे, अमानत में खयानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाले होंगे। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों, लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी-व्यापार में नुकसान उठाएंगे। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधवा स्त्री से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खयानत न करें।

उपाय :

1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा आठवें घर में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी औलाद पर अच्छा असर पड़ेगा। आपको पुत्र सुख निश्चय प्राप्त होगा। कृषि कार्य तथा आपकी पत्नी से विशेष मदद की आशा है। बहुत सी मुश्किलों को आप आसान कर सकते हैं, आपके जीवन के 34 साल तक समय साधारण रहेगा। विवाह के बाद आपका भाग्य चमक सकता है या 34 वर्ष के बाद भाग्य चमकेगा। आप ईर्ष्यालु, रोगी, पिता या माता दोनों में से किसी एक के सुख से वंचित रहेंगे। धन कमाने में माहिर होंगे। ननिहाल-ससुराल का सुख मिलेगा। आप माता-पिता की सेवा करेंगे। आपको बुजुर्गों की संपत्ति मिलेगी।

यदि आपने दिल में छल-कपट रखा, सट्टा-जुआ आदि खेला, बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध बन्द किया, ननिहाल/ससुराल में झगड़ा किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी सोच निराशाजनक या निराशात्मक भी हो सकती है। मन की शक्ति कमजोर या क्षीण होगी। आपके जन्म समय में माता को बहुत कष्ट हुआ होगा या माता का आप्रेशन हो, ऐसी संभावना है। आप कर्म-धर्म हीन हो जाएंगे, बाधाएं बढ़ेंगी। घर से बेघर होना पड़ सकता है। चरित्रहीन औरतों की संगति से आप बर्बाद हो सकते हैं। परिवार में दमे या मिरगी की बीमारी होने का भय है, पितृदोष से पुत्र का सुख नहीं मिल पाएगा। आप यदि जौहरी का काम करेंगे तो बुरा असर होगा। अकारण लोगों से शत्रुता हो सकती है। झूठ-जूठ आपकी आयु को कम कर सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. रात्रि के समय दूध न पीयें।
2. छल कपट न करें।

उपाय :

1. मीठा भोजन या केसर-दाल चना या गुड़-गेहूं धर्मस्थान में देवें।
2. स्वर्गवासी बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध करें या अमावस्या के दिन दूध-खीर दान करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में नौवें खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से आप बड़े ही भाग्यशाली हैं। आपको पैतृक संपत्ति का लाभ मिलेगा। आपकी 13-14 वर्ष की आयु में आपके पिता को बहुत बड़ा लाभ होगा। 28वें वर्ष की आयु में आप पूर्ण भाग्यशाली होंगे। आप एक योग्य प्रशासक होंगे। आपको धन कमाने के बहुत अच्छे अवसर मिलेंगे या अच्छी नौकरी या अच्छे व्यवसाय से धन इकट्ठा होगा। आपको भाई के साथ रहना शुभ होगा। आपको भाई की पत्नी से लाभ होगा। बड़े भाई के साथ व्यवसाय करने से लाभ होगा। आपको होटल, मिठाई आदि के व्यवसाय से बहुत लाभ हो सकता है। आपको पैसे के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। माता की सेहत अच्छी रहेगी और उसका सुख भी प्राप्त होगा। आपको पैतृक संपत्ति मिलेगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सत्ता पक्ष से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको धर्म-कर्म करते रहने से अच्छा फल मिलेगा। धर्म करने से तथा घर में उत्सव मनाने से भाग्य में वृद्धि होगी।

यदि आपने पिता से झगड़ा किया या पिता का विरोध किया, धर्म के खिलाफ काम किया, समाज विरोधी काम किया, भाई और भाई की पत्नी से झगड़ा किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप कभी-कभी नास्तिकवाद की वकालत करेंगे। आप पर कोई बड़ा कलंक भी लग सकता है। आपके धर्म के विरुद्ध आचरण करने से बदनामी हो सकती है। अगर आप परदेश में रहेंगे तो दुःखी रहेंगे। आपकी कितनी भी ताकत हो, चाहे आपके पास बॉस का दर्जा हो आपको अपने से छोटे लोगों से मांग कर खाना

पड़ेगा अर्थात् शेर को गीदड़ से मांग कर खाना पड़ेगा, ऐसी कहावत आप पर चरितार्थ होगी। सभा समाज में आपको अपनी गलतियों द्वारा तिरस्कृत होना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परदेश में रिहाइश न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. भाई की पत्नी की सेवा करें।
2. लाल रंग का रुमाल पास रखें।

बुध

आपकी जन्म कुंडली के पहले खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपको ज्योतिष विद्या से लगाव रहेगा और आप पूर्णरूपेण इस विषय के ज्ञाता भी होंगे। आपका संबंध व्यवसाय, व्यापार से रहेगा। शिल्पकला, दस्तकारी से भी लगाव रहेगा। आपकी बुद्धि भी तेज होगी। आप द्विस्वभावात्मक प्राणी हैं। आप पर दूसरों का असर तेजी से पड़ता है। दो शत्रुओं के मध्य रह कर भी सुरक्षित रहेंगे। फलस्वरूप आप अच्छे कार्य एवं अच्छी बुद्धि से प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं। आप सामर्थ्य और शक्तिशाली व्यक्ति के पक्षधर हो कर उसे शक्ति प्रदान करते हैं। भयातुर धीरे-धीरे चलने वाले, मधुरभाषी, आकर्षक व्यक्तित्व के, अनेक रूपों वाले हैं। आप बातचीत करना पसंद करते हैं। आप कल्पना जगत के प्राणी हैं। हर व्यक्ति को अपना बना लेने की कला विद्यमान है। आपकी ऊंची बातें भाग्य बनाने में सहायक हैं। आपके मुंह से निकली बुरी बात का असर पड़ता है। आप के अंदर आन्तरिक शक्ति है एवं काम कला में प्रवीण हैं। आप दूसरों की परवाह नही करते हैं, स्वार्थपरायण, अपनी प्रशंसा चाहने वाले हैं।

यदि आपने नेकी का रास्ता छोड़ बदी का रास्ता अपनाया, अण्डे खाये, राग गाने का शौक रखा, शराब पी और मांस-मछली खायी, अधर्म के काम किये या जादू-टोना वशीकरण आदि विद्या में रुचि रखी तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपकी कुछ आदतें बुरी हैं। धीरे-धीरे सोच-समझ कर बोलने की आदत से बुद्धिमानी का प्रतीक बनेंगे। आप चलते-चलते या काम करते-करते बातें करना पसंद करते हैं। अकारण कंजूसी बरतना प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है। संतान सुख में बाधा की आशंका है। चमड़ी का रोग या पेट में खराबी रहेगी। जादू-टोना विद्या में रुचि रखने से धन-परिवार की हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अंडा या अंडे से बनी चीजें न खावें।

2. शराब-मछली का सेवन न करें।

उपाय :
1. धर्म-कर्म करें।
2. घर आये मेहमानों की सेवा जरुर करें।

गुरु

आपकी कुंडली के बारहवें खाने में वृहस्पति पड़ा है। जिसकी वजह से आप उत्तम ज्ञानी होंगे। आप दूसरों का भला करेंगे इससे आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपका अधिक समय पूजा-पाठ में व्यतीत होगा और पूजा-पाठ से भी आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आपको धन से बहुत लगाव नहीं रहेगा आप त्यागी पुरुष होंगे। अपार धन आपके पास रहेगा मगर आप धन के पीछे नहीं भागेंगे। आपमें सेवा भावना रहेगी। आप ध्यान-समाधि की आदत डालें तो आपके घर सोने की वर्षा होगी। आप हृदय से वैरागी और ज्ञानी होंगे। आपका साधू जैसा स्वभाव होगा। आपका धन शुभ कर्म में खर्च होगा। आप खर्च के बोझ से दुःखी नहीं रहेंगे। बुरा कर्म आप नहीं करेंगे, यदि बुरे काम करने की प्रवृत्ति हुई तो बहुत नुकसान होगा। यदा-कदा औलाद के विषय में चिंता होगी। आप धन-दौलत के संबंध में राजा जनक की तरह त्यागी होंगे। गृहस्थ में हर प्रकार का सुख प्राप्त होगा। आपका परिवार बढ़ेगा, खुशहाल रहेगा। खुद भी निश्चिंत रहेंगे। आप किसी को आर्शीवाद दें तो उसको आपका आर्शीवाद फलेगा। आपका किसी को दुर्वचन नहीं लगेगा। दलाली का काम लाभकारी होगा।

यदि आपने जनता विरोधी कार्य किये, झूठी गवाही दी या किसी से धोखा फरेब किया, धन के लिये किसी के आगे हाथ फैलाने की आदत रखी तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आप दूसरों को सता कर स्वयं कष्ट और मुसीबत में पड़ जाएंगे। आप अधिक न बोला करें यह आपके लिए अच्छा नहीं है। आध्यात्म का मार्ग नुकसानदेह रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. ऐसे काम न करें जिससे आपका विरोध हो।
2. किसी के साथ धोखा-फरेब न करें।

उपाय :
1. गुरु-पिता, साधू की सेवा करें।
2. पीपल को जल से सींचें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी ज्योतिष, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी। आप अपने परिवार का पोषण करेंगे। राज्य पक्ष से अच्छा लाभ मिलेगा। आप हर प्रकार से सुखी रहेंगे। स्त्री के माध्यम से जो भी कार्य संपन्न होते हैं वह आपके लिए अच्छा

होगा। आपके काम के सुनिश्चित परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आड़े समय में मदद्गार होगी। आपके जीवन में तरक्की की बागडोर आपकी पत्नी के हाथ में होगी। आप औरत की इज्जत करेंगे इसका अच्छा फल मिलेगा। विवाह के बाद काफी धन मिलेगा। स्त्री का पूरा सुख मिलेगा। आप सदैव ही दूसरों की सेवा हेतु तत्पर रहेंगे। आप जवानी में अपना समय ऐशो आराम से बिताएंगे। आपके मन में वहम समाया हुआ रहेगा। आप चित्रकला प्रिय अथवा गायन प्रिय होंगे। आप धर्माचरण करके शुभ प्रभाव को अपनाएंगे। आपको खेती-बाड़ी का लाभ भी मिलेगा। आप बेरहम होंगे फिर भी आपका मान-सम्मान बरकरार रहेगा। आपके पास बहुत जायदाद होगी।

यदि आपने पत्नी से अच्छे संबंध न रखे या पत्नी की सेहत खराब के समय देखभाल न की, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप बूढ़े होने पर दूसरे लोगों को अपने जीवन में भुगती बातों को सुना कर समय बर्बाद करेंगे। पत्नी बीमार रहा करेगी तो आपका भाग्य अच्छा नहीं रहेगा। कन्या संतान का आपके जीवन पर बुरा प्रभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. पत्नी के स्वास्थ्य का विघेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. गाय दान करें।
2. देसी घी का दीपक जलावें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि नौवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप लोगों पर परोपकार करेंगे तथा इसके अच्छे लाभ भी आपको मिलेंगे। आप बड़े परिवार के सदस्य होंगे। आप भाई एवं मित्रों से सहयोग प्राप्त कर धनवान बनेंगे। आपको चलते-फिरते कामों से अधिक लाभ मिलेगा। आपको संतान का सुख होगा। परंतु संतान के सुख प्राप्ति में विलंब हो सकता है। आपकी पत्नी धनी परिवार से होगी। आपके पास प्रचुर मात्रा में धन रहेगा। आप धन के विषय में लापरवाह रहेंगे। आप उदार प्रवृत्ति के, जागीरदार, सदा सुखी होंगे। माता-पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप विद्वान होंगे। आप पर कभी भी कर्ज का बोझ नहीं पड़ेगा। आपका भाग्य अपने माता-पिता के भाग्य से अच्छा होगा। आपकी पत्नी भाग्यवान और अमीर खानदान की होगी। आप पैसे के प्रति बहुत मोह नहीं करेंगे। तीर्थ यात्रा करेंगे भाग्योन्नति होगी उससे अधिक शुभ फल प्राप्त होते रहेंगे। आप धार्मिक विचार वाले होंगे।

यदि आपने दूसरों के माल पर बुरी नजर रखी, जुआ आदि खेला, बुरे काम किये, लोहा/मशीनरी आदि के कार्य किये, घर में शीशम का पेड़ हो, जब आपके नाम 3 मकान बन जायें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर

से आप ब्याज का धंधा करें तो नुकसान होगा। आपके दिल में दूसरों से बदला लेने की भावना रहती है। अग्निकाण्ड की शंका है। आपको सांस या दमे की बीमारी हो सकती है। संतान सुख में विघ्न या पुत्र-पौत्र संतान की चिंता रहेगी। मंदे कामों से बदनामी भी हो सकती है। आंखों की दृष्टि खराब हो ऐसी आशंका है। अमीरों से धन लूट कर गरीबों में बांटना, ऐसी आपकी सोच रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न करें।
2. घर की छत पर ईंधन-चौगाठ आदि न रखें।

उपाय :

1. माथे पर केसर का तिलक करें।
2. घर के अंत में अंधेरा कमरा बनायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपको पूरी मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप राजशाही जीवन बिताएंगे। आप दीर्घजीवी होकर ऐश की जिंदगी बिताएंगे। युवावस्था में किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। आपकी स्त्री रूपवान एवं सुशील होगी। आप उस्तादों के भी उस्ताद होंगे। गृहस्थी अच्छी चलेगी। आपको अधिक धन प्राप्त होगा। माता के साथ मधुर संबंध, ससुराल पक्ष का सुख अच्छा हो सकता है। चोरी से सावधान रहें। पैतृक संपत्ति नहीं के बराबर प्राप्त होगी मगर अपनी कमाई द्वारा अधिक संपत्ति बना लेंगे। परिवार के लोग सुखी रहेंगे। आपके धन कोष में बहुत वृद्धि होगी। किस्मत का असर शुभ और अशुभ दोनों हालातों में ऊपर-नीचे होता रहेगा।

यदि आपने घर में मंदिर रखा, सरसों का कार्य किया, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया या जुआ आदि खेला, ससुराल या साले का विरोध किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप उदर रोग अर्थात् आंत रोग के मरीज होंगे। धर्मस्थान में चोरी आपके हाथों हो सकती है। आपका जीवन निर्वाह धर्मस्थान से प्राप्त अन्न से होगा। आप दान की हुई वस्तु लेने में तनिक भी नहीं हिचकेंगे या मुफ्त की वस्तुएं प्राप्त होती रहेंगी। आर्थिक एवं पारिवारिक सुख में कमी आ सकती है। आपकी कमाई का कुछ भाग खराब हो सकता है। आपको पुलिस का भय रहेगा। सजा सुन कर या सजा सुनने से पहले फरार हो जायेंगे, कैदी कभी न होंगे, ऐसी आशंका है। फौजदारी मुकद्दमें में हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सट्टा, जुआ आदि न खेलें।

2. धर्मस्थान में रिहाईश न करें/न जायें।

उपाय :

1. चांदी की ठोस गोली गले में धारण करें।
2. केसर या हल्दी का तिलक करें या शुद्ध सोना पहनें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु आठवें खाने मे पड़ा है। इसकी वजह से पत्नी का स्वास्थ्य अगर खराब रहता हो तो चारित्रिक सुधार के पश्चात् पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा हो जाएगा। आपके जीवन के 34 वर्ष आयु से पहले या 34 वर्ष आयु के बाद संतान पैदा होगी। आपकी कई संताने होंगी। पुत्र से सुख मिलेगा और पुत्र को संसार में यश-मान मिलेगा। जीवन में उत्थान होगा।

यदि आपने शराब-कबाब का सेवन किया, घर की छत पर रिहाईश हो, कुत्ता पाला या घर की छत पर कुत्ता बांधा, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से आपको संतान के बारे में चिंता बनी रहेगी। आप स्त्री से द्वेष करेंगे। आपका दगाबाजी का स्वभाव भी रहेगा। आप बवासीर रोग से ग्रसित रहेंगे। आप किसी भी व्यक्ति के सामने अपना दुःखड़ा रोयें तो आपकी और भी हानि होगी। संतानोत्तपत्ति में अवरोध उत्पन्न हो सकता है। आपके मकान की छत गिर जाए तो अशुभ समझें। उस वक्त रोटी के भी लाले पड़ सकते हैं। संतान एवं धन के संबंध में मंदा असर लग रहा है। आपके जन्म के पूर्व बड़े भाई की मृत्यु हो गई हो ऐसा लगता है। गृहस्थ जीवन में भी दरार पड़ सकती है। वैवाहिक जीवन 26वें वर्ष तक सुखी नहीं रहेगा। 48 वर्ष तक संतान से दुःखी या निःसंतान होने की आशंका है। आपके बुरे चरित्र का बुरा प्रभाव आपकी पत्नी के जीवन पर पड़ेगा। यदि दो विवाह हुए तो संतान 34 वर्ष से पहले और 34 वर्ष के बाद भी पैदा होगी। आपकी औलाद पर बुरा असर नहीं पड़ेगा। आपको मूत्र विकार की आशंका है। आपको अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाएगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर की छत पर कुत्ता न पालें।
2. जुआ आदि न खेलें।

उपाय :

1. काले-सफेद कंबल धर्मस्थान में देवें (संतान की लंबी आयु के लिये)।
2. काले-सफेद कंबल के टुकड़े में, साथ बैठे ग्रह की चीज बांध कर शमशान में दबायें (संतान सुख के लिये)।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश

वार्षिक फलादेश गोचर पर आधारित हैं जिसमें शनि, राहु एवं बृहस्पति के गोचर से आपकी जन्मकुंडली का कोई अंश ऊर्जावान होता है जिसके प्रभाव से आपके जीवन में आने वाले वर्ष के घटनाक्रम की जानकारी प्राप्त होती है।

वार्षिक फलादेश से उस वर्ष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों जैसे स्वास्थ्य, परिवार, संपत्ति, धन, आजीविका, व्यवसाय, शिखा, यात्रा एवं स्थानांरण आदि का विवरण विस्तृत रूप में उपाय सहित दिया गया है। वार्षिक फलादेश मुख्य ग्रहों के गोचर पर आधारित है।

इस वर्ष शनि धनु राशि में दसवें भाव में 26 जनवरी को प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में राहु सिंह राशि में छठे भाव में और गुरु कन्या राशि में सप्तम भाव में रहेंगे। 09 सितंबर को राहु कर्क में पाचवें भाव में और 12 सितंबर को गुरु तुला राशि में अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल इस वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 21 मार्च से 25 मार्च तक शुक्र अस्त रहेंगे और 14 दिसंबर के बाद फिर से अस्त हो जायेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अनुकूल रहेगा अतः आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। सप्तमस्थ गुरु व्यापार में उन्नति का प्रबल योग बना रहे हैं। जिससे व्यापारिक व्यक्तियों को मनोवांछित लाभ की प्राप्ति होगी। नौकरी पेशा करने वाले व्यक्तियों का स्थानांतरण होगा। यह परिवर्तन उनके अनुकूल स्थान पर होगा। 12 सितंबर के बाद समय थोड़ा प्रतिकूल होगा उस समय यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। अतः आप अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें नहीं तो परेशानी और बढ़ सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध आर्थिक स्थिति के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। धनागम में रूकावट की स्थिति बनी रहेगी जिससे इच्छित धन की प्राप्ति नहीं कर पाएंगे। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनके इलाज में भी धन व्यय हो सकता है। निवेश के मामले में सावधान रहना जरूरी होगा। जोखिम भरे कामों में धन निवेश न करें। 12 सितंबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक मामलों के लिए अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धीरे-धीरे आर्थिक स्थिति को मजबूत करेगी। यदि इस समय कोई नया व्यापार करेंगे तो इसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आपके अंदर परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपको धनार्जन में सहायता मिलेगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। भाई बहनों का भी सहयोग प्राप्त होगा। अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होने के प्रबल योग बन रहा है। आपके परिवार में नये सदस्य का बढ़ोत्तरी होने की संभावना बन रही है। चतुर्थ एवं दशम स्थान शनि से पीड़ित होने के कारण माता-पिता के सुख में कमी हो सकती है या उनसे दूर जाकर रहना पड़ सकता है। इस समय आपको किसी पर विश्वास नहीं करना चाहिए नहीं तो आपके इष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं। जिससे उनके साथ आपका मानसिक मतभेद हो सकता हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा रहेगा। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढेगी जिससे वो

अपने लक्ष्य प्राप्ति मे सफल रहेंगे। इनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी जिससे आपका भी मान सम्मान बढेगा। इन सब के बावजुद भी आपकी चिंताएं बनी रहेगी। 9 सितम्बर के बाद राहु का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आपको संतान संबंधित चिंताएं आ सकती हैं। संतान की उन्नति मे बाधा उत्पन्न होगी। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है। नवविवाहित गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात की संभावनाएं हैं। इसलिए यह समय गर्भाधान के लिए शुभ नहीं है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि के प्रभाव से पूरा वर्ष आपकी सेहत के लिए उत्तम होगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसम जनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जायेगी। यदि पहले से कोई लंबी बीमारी भुगत रहे हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकता है। 12 सितंबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए अनुकूल नहीं होने के कारण पेट संबंधीत परेशानी उत्पन्न होने की उम्मीद है। इसलिए उस समय आपको अपने सेहत के प्रति विशेष ध्यान देने की जरूरत है। यदि आप अपने खानपान पर ध्यान देंगे तो स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर के लिए बहुत उत्तम है। प्रतियोगी परीक्षार्थि परीक्षा में सफल होंगे। किसी भी प्रतियोगिता में आप इच्छित सफलता प्राप्त करेंगे। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं निरंतर प्रयास करें। ऐसा करने से निश्चित तौर पर सफलता आपकी कदम चूमेगी। तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने कार्य क्षेत्र मे विशेष उपलब्धि प्राप्त करेंगे एवं अपनी संस्था में सम्मान प्राप्त करेंगे। 9 सितम्बर के बाद समय थोड़ा प्रभावित होगा। उस समय आप का भाग्य साथ नहीं देगा। शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान उत्पन्न होंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यक्तियों का व्यवसाय से संबंधित विदेश यात्राएं होती रहेंगी। नौकरी करने वालों का स्थानांतरण होगा। धार्मिक व्यक्ति धार्मिक यात्रा कर पुन्यार्जन करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है। यात्रा करते समय सावधानी बरतना बहुत जरूरी है नहीं तो समान चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में अध्यात्म के प्रति आपकी रुचि होगी जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि करते रहेंगे। विशेशतः शिव जी की पूजा के प्रति आपका ध्यान ज्यादा रहेगा। 9 सितम्बर के बाद राहु का गोचर पंचम स्थान में होगा। उसके बाद धार्मिक कार्यो में व्यवधान आ सकते हैं। आप का मन एकाग्र नहीं रहेगा जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान आदि किया कम ही कर पाएंगे।

- प्रत्येक दिन अष्टगंध या केशर का तिलक करें।
- बेशन की लड्डू भगवान को भोग लगाकर गरीब लोगों में वितरण करें।

• महीने के प्रथम शनिवार के दिन लोहे का तांबा दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2017 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके उच्चाधिकारी भी आपसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे जिससे आप पदोन्नति या विशेष लाभ भी प्राप्त कर सकते है। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनके परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में इस मास सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। अतः मन से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता एवं श्रेष्ठता को मन से स्वीकार करेंगे तथा आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे। आपका यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा एवं अन्य स्त्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस माह में आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं।साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को अपनी बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप समस्त भौतिक सुख अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक समय को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

फरवरी 2017 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ फल दायक रहेगा। इस समय महिला वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर सम्पन्न होंगे। इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण शान्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में आपके मन में उत्सुकता उत्पन्न होगी। आपके मित्र तथा बन्धु जनों से इस समय मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा सहायता प्राप्त होगी। इस समय आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज में भी आप सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके रूके हुए शुभ कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं सुख साधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे एवं समाज तथा बन्धुवर्ग से पूर्ण सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

मार्च 2017 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आपका व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों से आपका मेल मिलाप रहेगा। साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यंत परिश्रम करने पर भी सफलता अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। धर्म के प्रति भी आपमें श्रद्धा की भावना नहीं रहेगी एवं धन हानि के योग भी बनते रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे एवं उनसे किसी भी प्रकार का सुख या सहयोग नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही शत्रुओं से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके संकल्प भी इस समय अपूर्ण ही रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः इस मास में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति सतर्क रहें तथा अपने कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

अप्रैल 2017 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्नचित रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही आपके आय स्त्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे वांछित लाभ अर्जित होगा। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके चिर प्रतीक्षत शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके सांसारिक कार्य भी इस समय सफल होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करेंगे तथा इनसे पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी अर्जित करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही उत्तम फल दायक रहेगा।

मई 2017 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस समय आपके यश में भी अभिवृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय प्राप्त होगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में सफल हो

सकेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न के प्रति भी अधिक रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रुवर्ग इस मास में आपका निर्बल रहेगा फलतः वे आपसे पराजित रहेंगे। स्त्री से भी आप सुख की प्राप्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही इस समय आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवहेलना होगी तथा बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक हानि प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर मध्यम रहेगा।

जून 2017 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य शुभ रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में भी सफल रहेंगे।साथ ही समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक इनका पूजन तथा आदर करते रहेंगे।साथ ही दूसरे लोगों की भलाई करने में भी आप तत्पर रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपका उचित सहयोग एवं मित्रता रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सुख एवं सहयोग आपको प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी आप यदाकदा प्राप्त करेंगे।अतः आप ठंड या वातरोग से पीड़ित हो सकते है तथा आपके द्वारा कोई ऐसा कार्य भी सम्पन्न होगा जिसके लिए आपको पछताना पड़ेगा जिससे समाज में सम्मान में भी कमी आएगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

जुलाई 2017 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। आपका शत्रुपक्ष इस समय प्रबल रहेगा अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता आएगी या कोई अन्य कार्य छूट सकता या बन्द हो सकता है। साथ ही कार्यक्षेत्र में किसी प्रकार के परिवर्तन होने की भी संभावना रहेगी। समाज में अन्य जनों से आपके संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा परस्पर विवाद एवं वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे समाजिक मान सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि के योग भी बनते है तथा शरीर में किसी प्रकार का रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता से समय को

व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनसे आपको कोई कष्ट नहीं होगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या कीमती द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते है। इससे आप मानसिक प्रसन्नता की प्राप्ति कर सकेंगे।

अगस्त 2017 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सफल होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्यार्जन करने में समर्थ होंगे तथा पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास में ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप सफल भी होंगे। आपके प्रभुत्व में इस समय वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपकी योग्यता को स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा कहीं से शुभ समाचार भी मिलेगा जिससे आपको प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस समय समाज से आपको पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही इस समय आप रक्त विकार से भी पीड़ित हो सकते है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यकलापों को करने में सतर्कता का अनुपालन करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

सितम्बर 2017 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा परन्तु अल्पमात्रा में शुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे फलतः आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनकी ओर से चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का पालन करें तथा उनकी उपेक्षा न करें अन्यथा किसी प्रकार से दण्ड भी प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में रहेगा। अतः आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके अतिरिक्त आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा तथा समाज में सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके संबधों में मधुरता नहीं रहेगी तथा कुछ न कुछ विवाद चलता रहेगा। आपकी इच्छाएं भी इस मास में अपूर्ण रहेंगी। अतः बुद्धिमता एवं सावधानी से अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ समय समय पर शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप

स्त्री से पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे साथ ही अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धनार्जन भी करेंगे। इस प्रकार आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे तथा समाज में भी न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

अक्तूबर 2017 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार की कष्टानुभूति हो सकती है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी इस मास में बलवान रहेगा जिससे आप इनकी ओर से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे तथा इनके द्वारा आपके लिए समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इस समय आप में उत्साह के भाव की न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक होगा जिससे आप आर्थिक रूप से भी परेशान रहेंगे।साथ ही लोभ के भाव की आप में अधिकता दृष्टिगोचर होगी।बन्धु एवं मित्रों से आपके विशेष अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा तथा इस समय मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी परस्पर विवाद होता रहेगा। अतः संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं लाभ अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही अधिकाशं कार्यो को अपनी बुद्धि बल से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप सामान्य धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे।

नवम्बर 2017 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए अशुभ फल अधिक मात्रा में प्रदान करेगा तथा शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे। इस समय शत्रु पक्ष से आप चिंतित एवं भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे।साथ ही इस मास में आपके घर में चोरी आदि भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करने में विघ्न बाधाएं आती रहेंगी। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति उपेक्षा का भाव रखेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वास्थ्य खराब रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता भी विद्यमान रहेगी तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते है। इस समय दूर समीप की कोई यात्रा भी कर सकते है। साथ ही सांसारिक कार्यो से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी व्ययाधिक्य की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा एवं अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म का भी आप अनुपालन करेंगे एवं समाज में यथोचित सम्मान भी प्राप्त होगा।

दिसम्बर 2017 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे साथ ही समाज में आपके यश में भी वृद्धि होगी। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

इस वर्ष शनि धनु राशि में दसवें भाव में और राहु कर्क राशि में पांचवें भाव में रहेंगे। गुरू तुला राशि में आठवें भाव में रहेंगे और 11 अक्तूबर के बाद वृश्चिक राशि में नौवें भाव में गोचर करेंगे। मंगल वक्री होकर 02 मई से 06 नवम्बर तक मकर राशि में ग्यारहवें भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ से लेकर 04 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे। उसके बाद फिर 16 अक्तूबर से 30 अक्तूबर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टि से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप कोई नया कार्य भी कर सकते हैं। दशम स्थान का शनि व्यापार में स्थिरता व सफलता प्रदान करेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर प्रतिष्ठा व सम्मान प्राप्त करेंगे। वर्ष भर सट्टा व शेयर मार्केट आदि के कार्यों से दूर ही रहें। नौकरी में स्थायित्व आएगा।आलस्य का त्याग करके अपने कार्य को सुनियोजित ढ़ंग से संपादित करें तथा अपने वरिष्ठ अधिकारियों व सहकर्मियों को सम्मान दें। 11 अक्तूबर के बाद समय और बेहतर होगा तथा कार्य क्षेत्र संबंधी रुकावटों का धीरे धीरे निदान होने लगेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। सट्टा कार्यों, शेयर मार्केट आदि में धन का निवेश न करें अन्यथा आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है। परिवार में मांगलिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है। इस वर्ष आप अपने माता-पिता की सलाह लेकर भूमि, भवन अथवा वाहन पर धन का व्यय करेंगे या फिर नया वाहन या घर खरीदेंगे। निवेश के मामले में सतर्कता बरतें नहीं तो पैसा फंसने की सम्भावना है। आपको अपनी जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर पूरी तरह से अंकुश लगाकर रखना होगा अर्थात् सट्टेबाजी जैसी आदतों को सुधारना होगा। इससे धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरू की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग आपको प्राप्त होगा जिससे आपको प्रसन्नता प्राप्त होगी। पंचम स्थान का राहु आपके संतान को शारीरिक कष्ट दे सकता है। अतः उनके स्वास्थ पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गर्भपात आदि होने की संभावना है इसलिए आप सावधानी बरतें। 11 अक्तूबर के बाद आपको समाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगा।

संतान

इसवर्ष आप संतान के मामले में अत्यधिक चिंतित रहेंगे। नवविवाहित गर्भवती महिलाओं के लिए गर्भपात के योग बनेंगे इसलिए सावधानी बरतें। पंचम का राहु संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी हो सकती हैं। अतः उनके

स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इनकी शिक्षा भी प्रभावित होगी परंतु11 अक्तूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए शुभ नहीं है। अतः इस वर्ष स्वास्थ्य से सम्बन्धित कुछ परेशानियां आ सकती हैं। पेट से सम्बन्धित पेरशानी उत्पन्न हो सकती है। आपको अपने खान-पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव हो सकता है। सुबह उठकर व्यायाम के साथ साथ योगाभ्यास करना भी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा। 11 अक्तूबर के बाद आप का स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेगा। यदि आप प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको अत्यधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। आप केवल अपने अध्ययन की ओर ही मन को लगाने का प्रयास करें। उच्च शिक्षा के अभिलाषी जातक अपनी रूचि अनुसार कार्य क्षेत्रों में सफलता अपेक्षाकृत कम ही प्राप्त कर पायेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान पर शनि व गुरु की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से सम्बन्धित विदेश यात्रा होगी। नौकरीकरने वालों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ भाव पर गुरु व शनि का संयुक्त गोचरीय प्रभाव रहने से यह स्थानान्तरण उनके लिए अच्छा रहेगा। 11 अक्तूबर के बाद तीर्थयात्रा के योग प्रखर होंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष कुछ मानसिक द्वंद्वों के कारण आपका पूजा पाठ, ईश्वर भक्ति आदि में विशेष रूझान नहीं हो पाएगा। परंतु 11 अक्तूबर के बाद धर्म के प्रति आपका रूझान बढ़ेगा और आपकी धार्मिक अनुष्ठान में आनेवाली बाधाओं का निराकरण होगा।

- बृहस्पतिवार का व्रत करें तथा मास मदिरा का सेवन न करें।
- बृहस्पतिवार के दिन बेसन के लड्डू मन्दिर के सामने भिक्षुओं को खिलाएं।
- 12 केले अपने सिर से सात बार वार कर पीपल के वृक्ष के नीचे रख दें या गरीबों में बांट दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2018 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज से आप यथोचित आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान मिलेगा एवं उनसे आप वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे तथा आपसे वे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे इच्छित सहयोग की आपको प्राप्ति होगी। साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। सन्तति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे आप वांछित सुख भी प्राप्त करेंगे। साथ ही बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्ति आपके पूर्व संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे जिससे मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा धर्मानुपालन में भी आप तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं।

फरवरी 2018 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल दायक रहेगा परन्तु न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इस समय आप स्त्रीवर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर पूर्ण होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा तथा मन में भी शान्ति रहेगी। अध्ययन के प्रति भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस मास में आप को मनोवांछित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पितरोगों से शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधान रहें तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

मार्च 2018 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ अधिक तथा शुभ अल्प मात्रा में रहेगा। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति प्राप्त होगी जिससे आप कष्ट प्राप्त

करेंगे।साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी जिससे मन में अशान्ति का भाव विद्यमान रहेगा। इस समय शरीर में दुर्बलता रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य कठिन परिश्रम करने के बाद भी सफल नहीं होंगे। इस मास में धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको धन हानि होती रहेगी। इस समय मित्रों एवं बन्धुओं से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव रहेगा। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुपक्ष से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को प्रारम्भ करेंगे उसी में असफलता मिलेगी। अतः संयम पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से वांछित सहयोग अर्जित करेंगें तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि को भी प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर व्यतीत होगा।

अप्रैल 2018 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभफल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।साथ ही इस मास आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। इस समय आपके लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति अत्यंत ही सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे एवं कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी काफी समय से आप प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इस समय सांसारिक कार्यो में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ आप समय समय पर अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

मई 2018 के लिए फलादेश

इस माह में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सक्षम रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप का यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप यथोचित सम्मान अर्जित करेंगे एवं उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग का आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उनसे प्रचुर मात्रा में लाभ

अर्जित करेंगे।साथ ही इस मास में मिष्ठान्न के प्रति आपके मन में विशेष रूचि रहेगी तथा आप प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न ही रहेंगे। इस मास में आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा आप लाभ तथा धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु शुभ फलों के मध्य यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातजनित रोगों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए उद्यत होगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी। एवं बाद में इसके लिए आप पछताएंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किंचित धन हानि प्राप्त करेंगे अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

जून 2018 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे ।साथ ही समाज में सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी कार्य करने में तत्पर रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस मास में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उन्हें इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने संकल्पों तथा मानसिक विचारों को मूर्त रूप देने में भी आप सफल सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी अर्जित करेंगे। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फल दायक रहेगा।

जुलाई 2018 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे अतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।साथ ही आपके व्यापार या नौकरी आदि के क्षेत्र में शिथिलता रहेगी तथा कई अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय आपका कोई कार्य परिवर्तन हो सकता है या छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों से भी आपका परस्पर विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे आपके सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी दुर्घटना आदि से रूधिर विकार भी हो सकता है अतः इस मास में आप सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान रखें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

अगस्त 2018 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। इस मास में आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आपके प्रभुत्व में इस मास में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको प्रसन्नता होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित लाभ अर्जित करेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह समय आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तथा सुख प्रदान करने वाला होगा जिससे आप मानसिक रूप से पूर्ण शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

सितम्बर 2018 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी इस महीने में प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे।अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको पूर्ण सहयोग करना चाहिए तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा होने पर वे आपको दंडित कर सकते हैं।साथ ही इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे एवं धन का व्यय भी अधिक रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही समाज से भी आप उपेक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय सफल नहीं होगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आपको यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः

आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम एवं बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। इस प्रकार आप सामान्य धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे।

अक्तूबर 2018 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अल्प मात्रा में घटित होंगे। इस समय स्त्री तथा स्त्रीपक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे या पत्नी को किसी प्रकार के कष्ट होने की संभावना रहेगी। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी कमजोर रहेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा बैचेन रहेंगे। शारीरिक अस्वस्थता के साथ साथ आपके मन में लोलुपता के भाव की भी वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा। ऐसे समय में मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे। इसके अलावा समाज में अन्य लोगों के साथ वाद विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता का भाव रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभफल भी घटित होंगे।अतः आप महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय परिश्रम पूर्वक धनार्जन एवं लाभ प्राप्त करने में भी आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

नवम्बर 2018 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शत्रुपक्ष प्रबल रहेगा फलतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में भी न्यूनता आएगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में भी कई प्रकार से व्यवधान आएंगे तथा उनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी दूर समीप की भी कोई यात्रा हो सकती है। आपके सांसारिक कार्य भी इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन अधिक मात्रा में व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः इस मास को सावधानी तथा संयम पूर्वक व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतःआप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रमपूर्वक सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी नवीन द्रव्य या वस्त्र की भी प्राप्ति करने में भी आप सफल रहेंगे। इस प्रकार मध्यम रूप से आप अपने

समय को इस मास में व्यतीत करेंगे।

दिसम्बर 2018 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य शाली रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वग! आपसे पूर्ण प्रसतथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न होगा। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा इनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे।साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धन एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगे एवं धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे जिससे समाज में आपके सम्मान में अभिवृद्धि होगी।

इस वर्ष शनि धनु राशि में दशम भाव में रहेंगे। 23 मार्च को राहु मिथुन राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को गुरु धनु राशि में दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 23 अप्रैल को वृश्चिक राशि में नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 05 नवम्बर को धनु राशि में दशम भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष स्थिरता, सन्तुलन तथा स्थायित्व लेकर आ रहा है। एक व्यवसायी के रूप में आपकी विश्वसनीयता बढ़ेगी। आप अपने भाग्य एवं कर्म में उन्नति करेंगे।

नौकरी वालों को सम्मान, उन्नति व स्थानान्तरण होगा। जमीन-जायदाद के मामलों में सावधानी से कार्य करें नहीं तो हानि उठानी पड़ सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। व्यवसायिक जीवन की स्थिरता आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेगी। धनागम का योग बना रहेगा परंतु अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों में मांगलिक कार्यों में धन का खर्च भी होगा।

इस वर्ष अचानक सम्पत्ति जैसे भवन, भूमि, वाहन इत्यादि प्राप्ति के योग हैं। वर्षारम्भ में आप नये कार्यालय के भवन निर्माण हेतु योजना बनाएंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। परिवार में बड़े सदस्यों का सहयोग आपको प्राप्त होगा और परिवार के प्रति आप का भी आकर्षण बढ़ेगा।

संतान का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको समाजिक पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मां के स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहना होगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में आप संतान के मामले में अधिक चिंतित रहेंगे परंतु 23 मार्च के बाद संतान की तरक्की के योग बनने पर आपको शांति व सुकून की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे।

संतान के विवाह योग्य होने की स्थिति में विवाह के लिए भी श्रेष्ठ समय है। द्वितीय संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। स्वास्थ्य में छोटी मोटी समस्याएं रहेंगी परंतु कार्य क्षमता बनी रहेगी। मानसिक तनाव से बचें व व्यवहारिक होकर अपनी समस्याओं का निराकरण करें।

मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आप योग, ध्यान आदि क्रियाओं में रुचि लेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

गुरु का गोचर अनुकूल होने से भाग्य साथ देगा, अधिकारियों से सहायता प्राप्त होगी, नौकरी करने वाले के लिए समय सामान्य है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के योग हैं।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। तीर्थ यात्राएं भी होंगी।

जन्म भूमि से दूर जाना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान करेंगे जैसे अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि संपन्न करेंगे। जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी, और आप मानसिक रूप से संतुष्ठ रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल, रोली एवं लाल पुष्प डालकर)
- गरीब लोगों को भोजन कराएं या तला हुआ वस्तु भिक्षुओं के मध्य वितरित करें।
- राहु के मन्त्र का पाठ करे। राहु मन्त्र (ओम् भ्रां भ्रीं भ्रौं स राहवे नमः)

इस वर्ष शनि 24 जनवरी को मकर राशि में एकादश भाव में प्रवेश रहेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में राहु मिथुन में चतुर्थ भाव में होंगे और 19 सितम्बर के बाद वृष राशि में तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 30 मार्च को गुरु मकर राशि में एकादश भाव में प्रवेश करेंगे एवं वक्री होकर 30 जून को धनु राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 20 नवम्बर को मकर राशि में एकादश भाव में आजाएंगे। 31 मई से 8 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा। कार्य में सफलता प्राप्ति होगी और आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आप अपने व्यापार का विस्तार करने में सफल होंगे।

आप अपने शत्रुओं तथा प्रतिद्वन्दियों का हनन करने में सफल होंगे। वर्षारम्भ में दशम स्थान का गुरु, नौकरी करने वालों की पदोन्नति करा सकते हैं। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अपेक्षाकृत कम लाभ प्राप्त होगा। जो व्यक्ति अपना काम करते हैं उनको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। सट्टा व शेयर मार्केट से लाभ के योग मार्च से जून के मध्य बनेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष विशेष लाभ दायक रहेगा। आय स्थान का शनि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे। फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे उसमें भी आप धन व्यय करेंगे।

उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपने आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष वाहन के क्रय, भवन निर्माण कार्य या घर में विवाह आदि पर धन का व्यय होगा। निवेश के लिए भी यह समय अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में दूसरे भाव पर गुरु की दृष्टि से परिवार में शांतिपूर्ण वातावरण रहेगा। आपको पारिवारिक माहौल से सहारा मिलेगा। 30 जून के बाद परिवार में नये सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। यह बढोत्तरी विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकता है। परिवार के विरोधी दूर होंगे एवं परिवार के लोगों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा हो जायेगा।

19 सितम्बर को राहु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय आप परोपकारी व जन कल्याण तथा सेवा कार्यों में संलग्न रहेंगे। ऐसा करने से आपके मान-सम्मान व पुण्य की वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप के बच्चों की शिक्षा व उन्नति का मार्ग खुला हुआ है।

30 मार्च से जून पर्यंत पंचम स्थान पर शनि एवं गुरू के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के सुंदर योग बन रहे हैं। यह समय गर्भाधान के लिए उपयुक्त मुहूर्त है। यदि आपकी प्रथम संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह वर्ष अच्छा रहेगा। कभी-कभी मौसम जनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

आप स्वास्थ्य लाभ व आरोग्यता के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम आदि सीखने में रुचि लेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए अच्छा रहेगा, षष्ट स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अच्छा योग बन रहा है। आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। 30 मार्च से जून पर्यन्त पंचम स्थान पर शनि एवं गुरू की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थीगण अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा के लिए मनोनुकूल संस्थान मे प्रवेश मिल जाएगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष अधिक यात्राएं नहीं होंगी परन्तु व्यावसायिक जीवन में विस्तार व उन्नति के उद्देश्य से की जाने वाली सभी यात्राएं लाभ व आनन्दकारी रहेंगी।

नौकरी करने वालो का स्थानान्तरण होगा। 19 सितम्बर के बाद अधिक यात्राओं के योग बनेंगे व परिवार के साथ किसी पर्यटन स्थल की यात्रा अवश्य होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। आपका मन एकाग्र रहेगा जिससे योग ध्यान इत्यादि क्रिया करते रहेंगे। आप पुण्य के कार्यों से अपनी कीर्ति का विस्तार करेंगे।

- अपने कार्य स्थल पर व्यापार वृद्धि यन्त्र व घर पर गायत्री यन्त्र स्थापित करें एवं नित्य पूजन करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनि वार के दिन नीली वस्तु का दान करें।

इस वर्ष शनि मकर राशि में एकादश भाव में और राहु वृष राशि में तृतीय भाव में रहेंगे। 6 अप्रैल को गुरू कुम्भ राशि में द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 सितम्बर को मकर राशि में एकादश भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर फिर से 20 नवम्बर को कुम्भ राशि में द्वादश भाव में आजाएंगे। मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 17 फरवरी से 19 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष पूर्ण फलदायक रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरू की दृष्टि व्यापार में उन्नति के योग बना रही है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्यों में सफलता की मात्रा और बढ जाएगा। आप अपने व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। व्यापार में आपके बाईयो का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक गुरू ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय बाहरी सम्बन्धों से लाभ के योग हैं। इस अवधि में स्थानान्तरण के योग हैं। सितम्बर के बाद और अधिक अनुकूल हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। एकादश स्थान में गुरू एवं शनि की युति प्रभाव से धनागम में निरंतरता बना रहेगा। जिससे आप इच्छित बचत करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे।

6 अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस सयम धन का अनावश्यक व्यय होगा।आपपरिवार में मांगलिक कार्य पर धन का व्यय करेंगे। 14 सितम्बर के बाद आपके रूके हुए पैसे मिल सकते हैं और अकस्मात् धन लाभ भी हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। परन्तु आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर के मध्य आपका पारिवारिक माहौल थोड़ा प्रभावित हो सकता है। परन्तु सितम्बर के बाद बहुत अच्छा हो जाएगा।

तृतीय स्थान का राहु आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

आपके बच्चे की शिक्षा में सुधार होगा। यदि आपकी दूसरी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो जाएगा। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक समय थोड़ा प्रतिकूल होगा परन्तु सितम्बर के बाद फिर सेअनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्यबर्धक रहेगा।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पानएवं दिनचर्या भी सही रखेंगे। मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक द्वादश स्थान स्थित गुरु आपके स्वास्थ्य को थोड़ा प्रभावित कर सकते हैं। परन्तु सितम्बर के बाद फिर से अनुकूल हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षण संस्थान में प्रवेश पाना सम्भव है।

जिन जातको की नौकरी अभी नही लगी है उन लोगो को 14 सितम्बर के बाद नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान का गुरू आप को विदेश यात्रा करा सकते है। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग भी हैं।

तृतीय स्थान का राहु छोटी यात्रा कराता रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपका मन तन्त्र-मन्त्र आदि क्रियाओं की ओर आकर्षित होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें और वृहस्पतिवार का व्रत रखें।

• विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें एवं अपने घर में लड्डू गोपाल की मुर्ति स्थापित करें।

इस वर्ष 13 अप्रैल को गुरु मीन राशि में प्रथम भाव में और 17 मार्च को राहु मेष राशि में द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 12 जुलाई को मकर राशि में एकादश में आजाएंगे। 30 सितम्बर से 21 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। इस समय के अन्तराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वालों का अस्थायी रूप से स्थानान्तरण हो सकता है।

13 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपको अच्छा लाभ होगा। लग्न स्थान स्थित गुरु से आप नये-नये विचारों के बल पर व्यापारिक उन्नति प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। केवल वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के चलते धन का व्यय़ अधिक होगा परन्तु 13 अप्रैल के समय अच्छा हो रहा है। एकादशस्थ शनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। जिससे आपके पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। आपके बड़े भाई या मित्रों से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। निवेश के लिए यह समय विशेष अनुकूल है। यदि इस आपने निवेश किया तो आपको इच्छित बचत हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। जिसके कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा परन्तु परिवार में फिर कुछ तनाव की स्थिति रह सकती है अतः धैर्य से काम लें। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं। 13 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान में गुरु का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय अधिक कष्ट कारक हो सकता है।

13 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान के गुरु के प्रभाव से मन में अच्छे विचार आएंगे। आप शाकाहारी भोजन, सुचारु दिनचर्या, योग व ध्यान आदि क्रियाओं के महत्व को समझते हुए इन्हें अपने जीवन में अपनाकर मन की शुद्धि व शारीरिक आरोग्यता प्राप्त करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा, षष्ट स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप सफलता प्राप्त रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे ।

वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, आपके कार्यों में लाभ प्राप्त होगा। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अनुकूल हो रहा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छा योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आप विदेश यात्रा करेंगे।

13 अप्रैल के बाद लम्बी व छोटी यात्रा के योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान व पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू-सन्तों, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें तथा दुर्गा कवच का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरु मेष राशि में द्वितीय भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में द्वादश भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। सप्तम भाव पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे।आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है।

अप्रैल के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु आप अपने विवेक से उसे भी अनुकूल बना लेंगे। फिर भी आपको किसी पर विश्वास किये बिना अपना कार्य करते रहना चाहिए। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का प्रारम्भसामान्य रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम तो होगा परन्तु बचत नहीं कर पाएंगे। द्वितीय स्थान का राहु आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव की संभावना बनाए रखेगा। 22 अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु शनि एवं राहु के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको रत्न आभूशण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी।

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना बहुत आवश्यक हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 22 अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान के गुरु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनाएंगे। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा।

इस वर्ष परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। यह वृद्धि विवाह या जन्म से हो सकती है। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। अष्टम स्थान का केतु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका सम्बन्ध खराब करा सकता है अतः वाणी पर नियंत्रण लाभप्रद रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। गर्भाधान के लिए उपयुक्त समय है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।22 अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यहवर्ष अनुकूल नहीं रहेगा परन्तु वर्षारम्भ में लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपको अधिक परेशानी नहीं होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां बढ़ सकती हैं।

लग्न का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य चिन्ताजनक बना रहेगा। सिर या वायु संबंधित समस्या हो सकती है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना बहुत जरूरी होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य ही रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद छठे स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगितापरीक्षार्थियों को कुछ रुकावटों व संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त होगी। रोजगार प्राप्ति के लिए अधिक शुभ अवसर नहीं हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

22 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान पर गुरू एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समुद्र यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योकि राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। जिसके प्रभाव से आपकी पूजा-पाठ मेंरूचि बढ़ेगी। ईश्वर केप्रति आप का अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 22 अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो रहा है।

- शनिवार के दिन लोहे का तवा दान करें एवं शनि मन्त्र का जप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं एवं नित्यप्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले के धारण करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में द्वादश भाव में और राहु मीन राशि में लग्न में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में द्वितीय भाव में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में तृतीय भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वालों को अपने कार्यस्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा।

अप्रैल के बाद कार्य व्यवसाय के लिए समय अनुकूल हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए शुभ है। जो व्यक्ति साझेदारी में कार्य कर रहे हैं उनको लाभ प्राप्त होगा। आपको साझेदार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कार्य व्यवसाय में आपको जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी।

अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का योग बन रही है। अप्रैल के बाद धार्मिक व सामाजिक कार्यों में भी आप धन व्यय करेंगे, जिससे आपको आत्मिक प्रसन्नता का अनुभव होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना होने के कारण परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

अप्रैल के बाद भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपका पराक्रम बना रहेगा। सामाजिक गतिविधियों में भाग लेंगे। समाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अप्रैल के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय बहुत शुभ है।

गर्भाधान हेतु समय शुभ है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई रोग है तो सावधानी बरतें। संतुलित खान-पान के साथ साथ दिनचर्या भी अनुशासित रखें।

सुबह सुबह व्यायाम व योगाभ्यास करें। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इन सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। षष्ठ स्थान पर शनि एवं गुरू के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अप्रैल के बाद तृतीय स्थान पर गुरू ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि इस वर्ष राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। परन्तु लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप आलसी हो सकते है, जिससे दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित हो सकता है।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने गले में दुर्गा बीसा यन्त्र कवच धारण करें।

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि लग्न स्थान में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि चतुर्थ भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि पंचम सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि चतुर्थ भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

14 मई के बाद दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आप अपने कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा है। उनको इच्छित लाभ प्राप्त हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे।

14 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर चतुर्थ स्थान में होगा। उस समय आपको भुमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण पैतृक संपत्ति, गढ़ा हुआ धन या ससुराल पक्ष से धन प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

14 मई से चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे आपके परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता व पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय शुभ है। यदि वे विवाह योग्य हैं तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं है। लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। 29 मार्च के बाद आपका स्वास्थ्य अचानक प्रभावित हो सकता है। लग्न स्थान पर एक साथ राहु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप समय पर खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है।

मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है, उस समय स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों का निवारण होना शुरु होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी कुछ और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी।

14 मई के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादश स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा करते रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें एवं दुर्गा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

इस वर्ष मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहींरहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकते हैं। जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा परन्तु दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले जातकोंका पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जूनके बाद आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते है। यदिआप शेयर बजार से जुड़े हैं तो आप को लाभप्राप्त होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

द्वादश स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे, जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

02 जून के बाद एकादश पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। उस समय छोटे मोटे कर्जो से मुक्ति मिल सकती है। 31 अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो इसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा जिससे सभी लोगों के अंदर साहनुभूति की भावना बनी रहेगी। आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा परन्तु आपकेजीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। भाईयोंका सहयोग प्राप्त होगा। समाज मेंपद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 31 अक्टूबर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनो पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा।गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा समय है। आपके बच्चेआसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। पहले बच्चे का विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो शरीर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों के लिए 02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। जो लोग नौकरी की तालाश में है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे।

छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जूनबाद लम्बी यात्रा के भी योग बन रहे हैं। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 02 जूनके बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी और आप अपनी अध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए मन्त्र पाठ यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं और हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष एकादश भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य से अच्छा रहेगा। कार्य, व्यापार में सफलता तो मिलेगी परन्तु इसके लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। लग्नस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगा। जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके व्यापार पर भी पड़ सकता है। गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु आलस्य के कारण उसका भी लाभ नहीं ले पाएंगे।

जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव सेआप के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। साझेदारी में व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग नहीं मिलेगा, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धन लाभ होता रहेगा परन्तु लग्नस्थ शनि के प्रभाव से बीमारी में भी आप का पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाइयों का

सहयोग प्राप्त हो सकता है।

जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए ये समय ज्यादा खराब है। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो जाएगा।

जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में अनुकूल बनी रहेगी। आपके अंदर सकारात्मक उर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

जून के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु पेट संबंधित रोग दे सकता है अतः उस समय अधिक तला व मसालेदार भोजन न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया है। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है।

26 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा परन्तु पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होगी। आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप व दान पुण्य आदि क्रियाओं के प्रति आपकी विशेष रूचि बनी रहेगी।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरण करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बढ़िया रहेगा। इस अवधि में आपके आत्मविश्सास में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको किसी पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह फिर से अनुकूल हो रहा है। किसी के साथ मिलकर कोई कार्य कर सकते हैं जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। आपको कार्यों में पत्नी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने सफल रहेंगे। एकादश के राहु अचानक धन लाभ करायेंगे। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिल सकते हैं। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार के सदस्यों पर भी आपका अधिक खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ परिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर-परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हाने की सम्भावना है। परिवार में विवाह आदि शुभ कार्य होने से खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम

भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

24 जुलाई के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। यदि आप बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है परन्तु फरवरी के बाद मौसामजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते है। उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें। नहीं तो शरीरिक परेशानी बढ़ सकती है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें। मानसिक रूप से दृढ़ रहें।

गुरु ग्रह का गोचर 24 जुलाई को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 28 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं भी होंगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। आपकी अपने घर से दूर की यात्रा हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि आएगी एवं आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान के शनि कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। मार्च के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपको इष्ट मित्रों का सहयोग मिलने के कारण कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में कठिनाईयों के बावजूद भी विस्तार की संभावनाएं बन रही हैं। साझेदारी के लिए उपयुक्त समय है।

अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप कोई नया कार्य शुरु करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। बड़े अधिकारियों का भी सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। सन्तान या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे।

मार्च के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। 08 अगस्त के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

29 मार्च से आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल व परिश्रम से आगे बढ़ेंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता बनी रहेगी। दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान रहे सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी शुरु हो जाएगी। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें। मार्च के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

08 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होंगी। मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। 25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आपकी जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की मदद करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को बेसन के लड्डू दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपने सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। शनि का गोचरीय प्रभाव आपके व्यावसायिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लेकर आएगा। आपका कठिन परिश्रम, कर्तव्यपरायणता एवं ईमानदारी आपके वरिष्ठ अधिकारियों को प्रभावित करेगी। आपके काम करने का तरीका भी आपको दूसरों से अलग बनाता है।

मई से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। इस दौर में गलत फहमियों के कारण आप व्याकुल होंगे और चिड़चिड़ा महसूस करेंगे। अथक प्रयास करने के बाद भी परिणाम आपके अनुसार नहीं होंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालांकि 23 सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपकी मेहनत आपके अधिकारियों की नजर में आएगी और वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। यह साल जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप निवेश करना शुरू कर सकते हैं। इस समय आप नयी सौदेबाजी भी कर सकते हैं।

मई से गुरु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। 23 सितम्बर के बाद आप जो योजना बनाएंगे, कार्य वैसे ही संपन्न होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं साथ ही परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे, परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद समय आपके लिए बहुत अच्छा हो रहा है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

मई से गुरु का गोचर ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब कर सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं नही तो उन लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

17 अप्रैल के बाद पांचवे भाव पर शनि की दृष्टि के कारण संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती है। उनके अध्ययन कार्य में एकाग्रता नही रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित समस्याए भी बनी रहेगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। 1 मई के बाद अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है।

23 सितम्बर से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरू हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगी। विद्यार्थियों को वर्ष के प्रारम्भ में योग्यतानुसार सफलता मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष अड़चनें नहीं आएंगी।

अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। अप्रैल के बाद आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित होंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। जल्दी-जल्दी यात्रा की संभावना बन रही है।

आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे। कुछ समय के लिए प्रवास भी कर सकते हैं। मई के बाद देश विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवम स्थान में राहु गुरु की युति धार्मिक कार्यों में व्यवधान डाल सकती है। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा जिससे आप पूजा, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। भले ही इस वर्ष कुछ ऐसे महीने भी होंगे जब आपको मामूली परेशानी का सामना करना होगा। लेकिन आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस साल की शुरुआत से ही आप अपनी काबिलियत को साबित कर सकने में कामयाब होंगे। राहु के गोचर के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा किन्तु आप अपनी लगन और कार्यकुशलता से सब मुश्किलों का हल सकारात्मक रूप से निकाल लेंगे।

15 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

यह साल आर्थिक रूप से अच्छा रहेगा। व्यावसायिक स्तर पर जोखिम उठाने में कोई नुकसान नहीं होगा। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो 18 फरवरी के बाद लोन मिल जाएगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे। परन्तु बहुत सोच विचार कर उसमें निवेश करना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर जमीन-जायदाद के लिए अच्छा नहीं होगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख-सुबिधा पर अधिक खर्च करेंगे।

15 अक्टूबर के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत शुभ है। पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 18

फरवरी के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

14 जून के बाद चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। 15 अक्टूबर के बाद समय फिर से बढ़िया हो जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंग। 8 अगस्त के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी।

यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। जीवन के प्रति आपके सक्रिय और अति उत्साहित रवैये के सहारे आप पूरे साल एकदम स्वस्थ रहेंगे। सुबह-शाम टहलना, नियमित व्यायाम व अभ्यास आपके लिए मुश्किल नहीं होगा। अभ्यास से आपके भीतर की ऊर्जा का प्रवाह होगा और दूसरें कार्यों में पूरी तरह से ध्यान केन्द्रित करने में सहज महसूस करेंगे।

8 अगस्त के बाद मामूली से संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। चिंता करने से जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आपका ही प्रदर्शन कमजोर साबित होगा। 15 अक्टूबर के बाद आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में आपके सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। 14 जून के बाद विद्य र्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी।

आपको प्रतियोगिता परीक्षाओं एवं अपने करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। इस समय किया गया परिश्रम आने वाले समय में आपको लाभ देने वाला होगा। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होती रहेंगी। 18 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। इस परिवर्तन से आप संतुष्ट रहेंगे।

व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी और ये यात्राएं आप के

लिए अनुकूल या उन्नति कारक भी सिद्ध हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

18 फरवरी के बाद घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। गरीबों को दान देना, साधू संन्यासियों की सेवा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 1 जून के बाद आप योग, ध्यान, एवं साधना अधिक करेंगे जिससे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान का प्राप्त कर आप अलौकिक आनन्द की अनुभूति करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं तृतीय भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुदशम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। जो कार्य आप करना चाहते हो उसे पूरा करके ही आगे बढ़ते हो। यही बात आपको सफल बनाएगी। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

12 अगस्त के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। आपको अनेक लाभकारी अवसर मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैंउनके लिए यह समय बहुत अच्छा रहेगा। 23 अक्तूबर से आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा।

धन संपत्ति

पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आप पहले कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए समय बहुत उत्तम है। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से धोखा मिल सकता है। अतः आर्थिक मामलों में किसी पर ज्यादा विश्वास करना आपके लिए अच्छा नहीं होगा।

12 अगस्त के बाद समय और भी उत्तम हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय का नया साधन मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

घरेलू वातावरण के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी अच्छा रहेगा। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।5 मार्च से सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। समाज में भी आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

12 अगस्त के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत शुभ है। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा परन्तु अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी संपन्न होते रहेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे की शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आप अपने बच्चों पर जो आशा रखते हैं वे उससे बढ़कर ही करेंगे। 5 मार्च के बाद आपकीसंतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

12 अगस्त के बाद बच्चों के साथ प्रेम व मधुर संबंधों में वृद्धि होगी परन्तु आपकी प्रथम संतान का स्वाथ्य प्रभवित हो सकता है अतः उसके खान-पान एवं दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपके दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण हीएकदम दुरुस्त रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। अष्टमस्थ राहु के कारण आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान होंगे परन्तु जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

मई के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती हैपरन्तु 12 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर समस्त मानसिकपरेशानियों को दूर कर शारीरिक आरोग्यता व स्फुर्तिप्रदान करेगा। आप अपने दैनिक कार्यों में ऊर्जावान बने रहेंगे। 23 अक्तूबर के बाद आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 5 मार्च के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नयेस्रोतों का सृजन करेंगे।

मई के बाद शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुप्त विद्या या तन्त्र-मन्त्र के लिए भी आपका आकर्षणबढ़ेगा।विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोईविशेष यात्रा के योग नहींहै। मार्च के बाद आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होंगीपरन्तु मई के बाद आपकीविदेश यात्रा के योग बन रह हैं। सप्तम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी।यात्राओं से अच्छा लाभ मिलेगा।

अष्टमस्थ राहु के कारण समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा का योग बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा परन्तु मई के बाद आप अच्छे कर्म अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का जप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- प्रत्येक दिन दुर्गासप्तसती का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र का पूजन करें।

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं अष्टम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं एकादश में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए लाभकारी रहेगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लिए लालायित रहते हैं, वह काबिलेगौर है। 18 मार्च से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है, जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

शनि एवं राहु ग्रह भी प्रतिकूल होने से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगी। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी। बेरोजगार जातको को अधिक अड़चनों के बावजूद सफलता कम ही प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। परन्तु 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन-देन के मामले में आप सावधान रहें। किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। अतः उस पर अंकुश लगाएं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें और शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों से दूर रहें।

आपको पत्नी और मित्रों का अच्छा सहयोग मिलने के कारण आप फिर से धन संचय की ओर बढ़ेंगे। परन्तु पारिवारिक विषमता के कारण आर्थिक उन्नति नहीं कर पाएंगे। इस समय के अंतराल में कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें, नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

18 मार्च से सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के चलते आपके दाम्पत्य जीवन में

खुशहाली आएगी। पारिवारिक प्रतिकूलता भी काफी हद तक ठीक होगी। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा।

संतान

वर्ष के प्रथम तीन माह आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेंगे। उसके बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके बच्चों का समय प्रभावित हो रहा है। ऐसे में अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियां साबधानी बरतें। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के अवसर हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 18 मार्च से द्वादश स्थान पर गुरु के गोचरीय प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। संतुलित आहार के साथ-साथ आप नियमित व्यायाम भी करते रहें, जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा। यही आपकी शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाए रखेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण आपके अंदर आलस्य की भावना उत्पन्न होगी। जो कि आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। 18 मार्च से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहे तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है। 18 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी।

आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिय स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में आपकी पत्नी या परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य

खराब हो सकता है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे। कोई भी अच्छे काम को लेकर मानसिक द्वंदता बनी रहेगी। आलस्य व लापरवाही के कारण आपकी दैनिक पूजा भी प्रभावित हो सकती है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। जिससे आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। विश्वासपात्र लोगों के साथ बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्ति अपने कार्य से संतुष्ट नही रहेंगे। 28 मार्च से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि के कारण आप अपने व्यवसाय में अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदारों से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, जिससे आपके पुराने चले आ रहे ऋण से मुक्ति मिल सकती है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसर में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में लॉटरी, सट्टा व शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। धन संचय करने में आपके जीवनसाथी का मुख्य सहयोग होगा। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो स्वीकृती मिल जाएगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी। क्योंकि अष्टम स्थान का राहु पैतृक सम्पत्ति के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान के शनि पारिवारिक वातावरण में विषमता की स्थिति उत्पन्न करेंगे। माता पिता के लिए समय शुभ नहीं है।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके जीवनसाथी को बीमार कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते है। 28 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से घरेलू परेशानियां दूर होंगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में जीवनसाथी के साथ मधुरता बढ़ेगी। भाई बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। इस समय के अंतराल में किसी से मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। द्वादश स्थान का गुरु आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो वह गलत संगत में पड़ सकते हैं। जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है। परन्तु 28 मार्च से आपके बच्चों के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसके विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध संतान के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगा। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। आपके बच्चे कुछ ऐसे कार्य करेंगे, जिससे समाज में आपकी ख्याति और बढ़ेगी। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गैस, अपच व पेट संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। परन्तु 28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

12 अगस्त के बाद अष्टम स्थान में राहु ग्रह का गोचर अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। वाहन चलाते समय व यात्रा करते समय सावधान रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 28 मार्च से व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने

वाले विद्यार्थियों के लिए समय शुभ है।

छोटे दुकानदान, व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय काफी शुभ है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अष्टम स्थान का राहु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकता है। परन्तु आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति एकाग्र कर परिश्रम करते रहें तो अन्त में सफलता अवश्य मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के अच्छे योग बन रहे हैं। 28 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण यह तबादला घर से दूर भी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, दान देना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा आदि करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है। आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं और ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- राहु ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि पंचम भाव में और सिंह राशि का राहु छठे भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी रहने वाला है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रहों का गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आयी किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में कुछ परेशानी आ सकती है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं समाधान निकाल लेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। आपको अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा। वरिष्ठ अधिकारी आपसे खुश रहेंगे और उन सब का भरपूर सहयोग मिलेगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए समय बहुत ही अनुकूल है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ रहेगा। सारे बन्द आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके परिवार वालों का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर धन व्यय करा सकती है। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। 6 अप्रैल के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी। यह वृद्धि परिवार में किसी के विवाह या संतान जन्म से होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

आपके छोटे भाई-बहनों के लिए समय सामान्य रहेगा। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। आपकी बच्चों के प्रति प्रेम व लगाव में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपके दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी प्रथम संतान के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे उनकी शिक्षा दीक्षा में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले है। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम व सुबह-सुबह टहलना आदि।

व्यापारिक व्यस्तता के कारण अपनी सेहत पर ध्यान नही देंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। 6 अप्रैल के बाद ज्योतिष व गुप्त विद्याओं के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ सकती है।

जो व्यक्ति नये व्यापार से अपना करियर बनाना चाहते हैं। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है। जिसमें आपको अच्छा उन्नति मिलेगी।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके विदेश यात्रा के योग बना रही है। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी। कार्य व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगीं

6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। समुद्री मार्ग से यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न करेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने मे आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 15 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा। साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे।

27 अगस्त के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। 9 सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी करा सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। पैतृक सम्पत्ति या ससुराल पक्ष से धन लाभ होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

15 अप्रैल के बाद आपको भाईयों से लाभ मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। धार्मिक कार्य या सामाजिक कार्यों में भी धन व्यय होगा, जिससे आपको आत्मिक संतुष्टि प्राप्त होगी। 9 सितम्बर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 15 अप्रैल के बाद आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए आप कोई संस्था का संचालन भी कर सकते हैं, जिससे समाज में आपका एक अलग व्यक्तित्व होगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। लग्न स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़े सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

15 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही उत्तम हो रहा है। उसके साथ संबंधों में मधुरता आएगी। घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल बना रहेगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। आप अपने आपको पूर्ण रूप से स्वस्थ्य महसूस करेंगे। फिर भी आपको अपने खान-पान पर संयम रखना चहिए। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क जाना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको अपने खान-पान के साथ साथ दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने लक्ष्य में सफल होंगे। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें अच्छी सफलता मिलेगा। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

अप्रैल के बाद उच्च शिक्षाभिलाषी जातकों को मनोनुकूल शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको अगस्त के बाद अवश्य नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। परन्तु अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको विशेष लाभ

प्राप्त होगा।

9 सितम्बर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। परन्तु पंचमस्थ शनि के कारण आपके पूजा पाठ में किंचित व्यवधान आ सकता है। 15 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आप विशेष रुचि लेंगे। गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी।

- शनिवार के दिन सुबह-सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं एवं ऊँ ह्रीं लक्ष्म्यै नम मन्त्र का पाठ करें।

दशा विश्लेषण

दशा विश्लेषण घटना के समय निर्धारण में दशा स्वामी की भूमिका के विषय में बताता है। कुंडली में दशा स्वामी की स्थिति के अनुसार फलादेश से अवगत कराता है। साथ ही दशाकाल में किस से सतर्क रहें व क्या उपाय करें इसका ज्ञान कराता है।

अच्छे या बुरे दशा के प्रभाव स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समय-समय पर खट्टा-मीठा अनुभव होता रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की जन्मकुंडली में शुभ एवं अशुभ योग होते हैं। यदि अच्छे ग्रह की दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। दूसरी ओर यदि बुरे ग्रह की दशा चलती है तो आपके समक्ष समस्याएं, बाधा, कष्ट, पीड़ा आदि उपस्थित होते हैं।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(07/06/2010 - 07/06/2027)

बुध की महादशा 07/06/2010 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 07/06/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यना मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- बुध - सूर्य
(31/08/2016 - 07/07/2017)

आपके लिए बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 31/08/2016 को प्रारंभ होकर 07/07/2017 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप अध्यात्म और दर्शन में रुचि लेंगे। स्पर्धी आपको परेशान करने की कोशिश करेंगे मगर आप विजयी रहेंगे। कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। शत्रु परास्त होंगे; उत्तम स्वास्थ्य, धन, उच्च पद, प्रसन्नता, सफलता और लाभ का संकेत है। मुकदमे में जीत होगी। मातहत सहयोग करेंगे; कार्यालय में सुविधाएं उत्तम होंगी।

आपके जीवनसाथी को धन, उच्चपद, विरोधियों पर विजय का संकेत है। आपके पिता के लिए अचल संपत्ति, सरकार से लाभ और सब सुखों का योग है। माता को अध्यात्म में रुचि होगी, भाग्य साथ देगा, यात्रा होगी।

आपके भाई-बहनों की साख अच्छी होगी, कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, धनलाभ, उत्तम शिक्षा और खुशी का संकेत है। आपकी संतान के वातावरण में परिवर्तन हो सकता है, शिक्षा पूर्ण होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक प्रयास से सफल हो सकते हैं। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारियों को लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(07/07/2017 - 06/12/2018)

आपकी बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 07/07/2017 को प्रारंभ होकर 06/12/2018 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। आप की अंतर्ज्ञान शक्ति प्रबल है। पराविद्या आदि में रुचि हो सकती है। आपकी माता सौभाग्यशाली रहेंगी। साझेदारों से लाभ हो सकता है। धनागम उत्तम होगा। आपकी मधुरवाणी से सब प्रभावित होंगे, लोकप्रियता और समाज में सफलता प्राप्त होंगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा।

आपके जीवनसाथी को सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, धनार्जन होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे; यात्राएं होंगी। माता को निवेश से लाभ होगा, कला में रुचि होगी।

आपके भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मातहतों से संबंध उत्तम होंगे, मामापक्ष से

लाभ होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, सफल और प्रसिद्ध बनेंगे। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी ; भविष्य के लिए नींव मजबूत होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो लघु यात्राएं होंगी; संचार साधनों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को धन का लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। श्वसनतंत्र के रोग और गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरव मंदिर में दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(06/12/2018 - 04/12/2019)

आपके लिए बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 06/12/2018 को प्रारंभ होकर 04/12/2019 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

आपकी महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होंगी। सौभाग्यशाली रहेंगे। ज्ञान-विज्ञान के कार्यों में रुचि होगी। लंबी यात्रा हो सकती है। विविध गतिविधियों में सक्रिय रहेंगे। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्तम रहेंगे। स्पर्धियों पर विजय होगी। धन के संचय में कुछ कठिनाई हो सकती है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। जायदाद से आय में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के आत्मविश्वास, ऊर्जा और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। माता के लिए स्पर्धा में सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, सफलता और उच्चपद का संकेत है।

आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा; व्यापार में लाभ, धन, सफलता, निवेश से लाभ का योग है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, तकनीकी विषयों में सफल हो सकते हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, उच्च पद मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल की साख से लाभ होगा, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी स्पर्धा में सफल रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, लाल दाल और लाल चंदन दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(04/12/2019 - 22/06/2022)

आपके लिए बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/12/2019 को प्रारंभ होकर 22/06/2022 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। भौतिक सुख-साधन उपलब्ध होंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों से संपर्क होगा, उनसे सहायता मिलेगी। समृद्धि का वातावरण रहेगा। कटु वचन बोलने से बचें। साझेदार के माध्यम से धनागम हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है, यात्रा संभव है। अचानक, अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदार के माध्यम से या यात्राओं से लाभ हो सकता है। आपके पिता स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे, सम्मान बढ़ेगा, धनागम होगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विदेश में निवास, अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा और माता से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, प्रसिद्ध बनेंगे और परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे, प्रसिद्ध होंगे, धन का लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, आय में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(22/06/2022 - 27/09/2024)

आपके लिए बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 22/06/2022 को प्रारंभ होकर 27/09/2024 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आपकी यात्राएं हो सकती हैं। खर्चे बढ़ सकते हैं। अध्ययन और आध्यात्मिक प्रगति के लिए समय अनुकूल रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। सहकर्मी और मातहत सहयोग करेंगे। साझेदार से लाभ होगा। अचानक धनलाभ हो सकता है। घर में सुख-शांति का वातावरण रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा। आपके पिता अचल संपत्ति

क्रय कर सकते हैं। माता की यात्राएं हो सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, प्रसिद्धि, धन का संचय, उत्तम पारिवारिक जीवन, सुख-सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, यात्राएं हो सकती हैं, परिश्रम अधिक करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक कार्यों में लाभ होगा; सहकर्मी सहयोग करेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को मार्केटिंग अच्छी करना लाभप्रद होगा। व्यापारियों को सहकर्मियों से लाभ होगा, कार्यालय उत्तम होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आंख या कान की कोई व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - शनि
(27/09/2024 - 07/06/2027)

आपके लिए बुध की महादशा 07/06/2010 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 27/09/2024 को प्रारंभ होकर 07/06/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। धनार्जन उत्तम होगा। समाज में सफलता मिलेगी। वांछित प्रोन्नति और तबादला संभव है। छोटे भाई-बहनों से खुशियां मिलेंगी। प्रभाव में वृद्धि होगी, खुशियां बढ़ेंगी, कार्यों में सफलता मिलेगी। लेखन, विज्ञान और संचार माध्यम से संबंधित कार्यों के लिए समय शुभ है। प्रभावशाली व्यक्तियों से लाभप्रद मित्रता होगी। स्पर्धियों पर विजय होगी, मातहत सहयोग करेंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी की प्रोन्नति हो सकती है; उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। माता के कार्यालय में प्रसन्नता व्याप्त रहेगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदार या जीवनसाथी से लाभ, यात्रा, धनार्जन, प्रभावशाली मित्र, उत्तम शिक्षा और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भूतकाल में किये कार्य से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारी मार्केटिंग में दक्षता से धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द की दाल, तेल और काले वस्त्र दान में दें।

महादशा :- केतु
(07/06/2027 - 07/06/2034)

केतु की महादशा 07/06/2027 को आरम्भ और 07/06/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु अष्टम भाव में है जहाँ से उसकी दृष्टि द्वितीय भाव पर है। उसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रह थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध की दशा में आपको अप्रत्याशित धन, सभी प्रकार का लाभ, जीवन में परिवर्तन तथा मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या, अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ और हानि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपको कुछ समस्या हो सकती है। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी, आँख की पीड़ा, चर्मरोग, गठिया, जननांग से संबंधित बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको कुछ अप्रत्याशित आय हो सकती है। आपको विरासती सम्पत्ति, बोनस, ग्रैच्यूइटी और सेवा-निवृत्ति से लाभ मिल सकता है। व्यापार-व्यवसाय में अच्छा लाभ हो सकता है। सट्टे और लेन-देन में साधारण लाभ होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, वायु सैनिक के कार्य, दवा, बौद्धिक कार्य, अनुसन्धान-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। किताब, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, रत्न, समाचार पत्र, पत्रिका आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी कठिनाइ उत्पन्न करेंगे। आपका मामूली परिवर्तन संभव है। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार हो सकता है और आपके लक्ष्य की पूर्ति होगी।

वाहन, यात्रा जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। आपकी एक सुन्दर गाड़ी होगी। सम्पत्ति का लेन-देन लाभदायक सिद्ध होगा। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप शोध कार्यों में अच्छा करेंगे। आपको अपन स्तर बनाये रखने तथा परीक्षा और प्रतियोगिताओं में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा, लेखन, मीडिया, लेखा कार्य आदि में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा में अच्छा करेंगे और आपको उन पर गर्व होगा। आपके जीवनसाथी को यश, ख्याति और पहचान

मिलेगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि और समृद्धि तथा सफलता मिलेगी जबकि आपके पिता को सभी प्रकार का लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ होगा और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़ों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्रा और उच्च शिक्षा होगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा, व्यवसाय में वृद्धि और वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। शुक्र के कारण खर्च, लम्बी यात्रा और साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्मान की प्राप्ति और जीवन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में यात्रा, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और आय तथा समृद्धि अच्छी होगी। राहु कुछ बाधा उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सम्पत्ति मिलेगी जबकि शनि के कारण कुद परिवर्तन, यात्रा और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में लाभ, मामूली स्वास्थ्य समस्या और परिवर्तन होगा।

अंर्तदशा :- केतु - केतु
(07/06/2027 - 03/11/2027)

आपके लिए केतु महादशा 07/06/2027 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 07/06/2027 को प्रारंभ होकर 03/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपके जीवन में अचानक कोई घटना घट सकती है। विरासत द्वारा धन मिल सकता है। विदेश जा सकते हैं। धन संचित होगा। शिक्षा उत्तम होगी। रिश्तेदारों से उत्तम संबंध रहेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे। कटुवचन बोलने से बचें। खानपान में भी संयम आवश्यक है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश द्वारा लाभ होगा, वे कर्मठ होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए संकल्प, लक्ष्यप्राप्ति, सफलता, धनलाभ, सम्मान और धन का संकेत है।

आपकी संतान को ज्ञानार्जन द्वारा लाभ होगाः शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, सुविधा संपन्न होंगे, सफलता प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। परामर्शदाता सफल होंगे, धनार्जन उत्तम होगा। व्यापारियों को साझेदारी द्वारा लाभ होगा।

अंर्तदशा :- केतु - शुक्र
(03/11/2027 - 02/01/2029)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आप भोग-विलास की सामग्री क्रय कर सकते हैं। द्वादश भाव में स्थित शुक्र भाग्यशाली समझा जाता है। अध्यात्म और दया-धर्म में रुचि होगी। शत्रुओं की संख्या में कमी आएगी, या उन पर विजय होगी। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। दिया धन वापस आ जाएगा। किराये आदि से आमदनी बढ़ सकती है। मुकदमे में जीत होगी। स्पर्धा में सफल होंगे।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। आपके पिता का पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। माता धनी बनेंगी, उनकी यात्राएं होंगी, अध्यात्म में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, विभिन्न माध्यमों से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है। उनका धनार्जन उत्तम होगा, परिश्रम अधिक करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, विरासत या साझेदार के माध्यम से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों के माध्यम से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को स्वयं के प्रयास से लाभ होगा। व्यापारियों को सहकर्मियों और कर्मचारियों

का सहयोग मिलेगा।

नेत्रों का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- केतु - सूर्य
(02/01/2029 - 10/05/2029)

आपके लिए केतु महादशा 07/06/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 02/01/2029 को प्रारंभ होकर 10/05/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपको कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी मगर मार्ग में बाधाएं आ सकती हैं। पराविद्या में रुचि हो सकती है। अध्यात्म में समय लगाएंगे। स्पर्धी और शत्रु परेशान कर सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। धनार्जन उत्तम रहेगा; उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। कार्यालय का वातावरण उत्तम होगा; अधीनस्थ कर्मचारी सहयोग करेंगे। आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता भाग्यशाली और धनी बनेंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, धन, कार्यों की पूर्णता और शिक्षा में सफलता का संकेत है। आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, सफलता के मार्ग में बाधाएं हो सकती हैं। अगर वे कार्यरत हैं तो विरासत या बीमे से लाभ हो सकता है; कार्यक्षेत्र में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को प्रचार और मार्केटिंग में सुधार से लाभ होगा। व्यापारियों को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य मंत्र का जाप करें।

ॐ घृणि सूर्याय नमः

अंर्तदशा :- केतु - चन्द्र
(10/05/2029 - 09/12/2029)

आपके लिए केतु महादशा 07/06/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 10/05/2029 से प्रारंभ होकर 09/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। जीवनसाथी के धन से धनार्जन हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आप धनी बनेंगे, सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। मधुर वाणी के कारण लोकप्रिय बनेंगे। परिवार सुखी होगा। राजनीति या समाज सेवा में भाग ले

सकते हैं। आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे उन्हें सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को संतान से सुख मिलेगा; निवेश से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए कार्यों में बाधा, स्पर्धा में वृद्धि, बहुत मित्र, धन और संतान से प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, नींव सुदृढ़ बनेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय करना उनके लिए लाभकारी हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं को विरोध का सामना करना पड़ सकता है। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्याम रखना श्रेयस्कर रहेगा। श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

अंर्तदशा :- केतु - मंगल
(09/12/2029 - 07/05/2030)

आपके लिए केतु की महादशा 07/06/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 09/12/2029 को प्रारंभ होकर 07/05/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चकोटि का बौद्धिक कार्य कर सकते हैं, दूसरों पर आपका बहुत प्रभाव होगा विविध गतिविधियों में सक्रिय रहेंगे। भाग्य साथ देगा, धनी बनेंगे। यात्राएं हो सकती हैं, अचल संपत्ति के मालिक बन सकते हैं। कला में रुचि होगी, साहसी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं होंगी, साहस में वृद्धि होगी, उत्साही रहेंगे, कार्य पूर्ण होंगे। आपके पिता विश्वासी और उत्साही होंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, बाधाएं पार करेंगी, मुकदमे में जीत होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, विवाह, यात्रा, व्यापार में लाभ का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, सफलता मिलेगी, तकनीकी विषयों में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ऊँ अं अंगारकाय नमः

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(07/05/2030 - 26/05/2031)

आपके लिए केतु महादशा 07/06/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 07/05/2030 को प्रारंभ होकर 26/05/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सुख-साधन उपलब्ध होंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। वे आपके लिए लाभकारी रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अचानक धनागम हो सकता है। कार्यक्षेत्र में अप्रत्याशित परिवर्तन द्वारा धन आ सकता है। विदेश से भी लाभ हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। पिता धनी बनेंगे, उनके सम्मान में वृद्धि होगी। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए अधिक खर्च, कार्यों में असफलता, अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा, प्रसन्नता और माता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान प्रसिद्ध होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो परिश्रम करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को आर्थिक प्रगति के अवसर मिलेंगे। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन आ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। दांतों की देखभाल करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(26/05/2031 - 01/05/2032)

आपके लिए केतु महादशा 07/06/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 26/05/2031 को प्रारंभ होकर 01/05/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म में रुचि होगी। ज्ञानार्जन के लिए उत्तम समय है। वसीयत, उपहार, विरासत आदि से अचानक धनागम हो सकता है। घरेलू सुख उत्तम रहेगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं या उससे लाभ होगा। माता से उत्तम संबंध रहेंगे। मित्रों से आनंद मिलेगा।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, संबंधियों से लाभ होगा, कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं या उससे लाभ होगा, उनके अच्छे मित्र होंगे, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। माता भाग्यशाली रहेंगी, धनी बनेंगी, तीर्थयात्राएं होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, कार्यों में सफलता का संकेत है। बड़े भाई-बहन धनी बनेंगे, सुख-साधन संपन्न होंगे, शिक्षा में सफल होंगे।

आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी, अचानक लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को संचार माध्यम से लाभ होगा। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

नेत्र और कानों का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(01/05/2032 - 10/06/2033)

आपके लिए केतु महादशा 07/06/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 01/05/2032 को प्रारंभ होकर 10/06/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और धनी बनेंगे। धनार्जन उत्तम होगा, यात्राएं होंगी। उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी। छोटे भाई-बहन सुखकारी होंगे। आपका खेती से कोई संबंध हो सकता है। निवेश से लाभ होगा। शत्रुओं पर विजय होगी; अधीनस्थ कर्मचारी सहयोग करेंगे। मामा पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के सब काम बन जाएंगे। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, उनका कार्यालय उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, आय में वृद्धि और प्रभावशाली मित्रों का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे और निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख बढ़ेगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- केतु - बुध
(10/06/2033 - 07/06/2034)

आपके लिए केतु महादशा 07/06/2027 को प्रांरभ हुई। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा की अवधि 11 मास 27 दिन होगी जो आपके लिए 10/06/2033 को प्रारंभ होकर 07/06/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, बुद्धि, लेखन और तर्कशक्ति का कारक है।

इस अवधि में आपका ज्ञानार्जन उत्तम होगा। कला में रुचि हो सकती है। लोग आपके ज्ञान और विवेक से प्रभावित होंगे। विवाह हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा। जीवनसाथी से तालमेल उत्तम रहेगा। लेखन या वाद-विवाद में भाग ले सकते हैं। विदेश जा सकते हैं।

महादशा :- शुक्र
(07/06/2034 - 07/06/2054)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 07/06/2034 को आरम्भ और 07/06/2054 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होगें। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यक गतिविधियां जारी रखेंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(07/06/2034 - 06/10/2037)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/06/2034 को प्रारंभ होकर 07/06/2054 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 07/06/2034 को प्रारंभ होकर 06/10/2037 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 6ठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी विषय-वासना में रुचि होगी, विपरीत लिंग के व्यक्तियों की ओर आकर्षित हो सकते हैं। चरित्रहीन लोगों के संपर्क में भी रह सकते हैं। धन कमाने के लिए अच्छे-बुरे सब साधनों का इस्तेमाल कर सकते हैं। परिवार से दूरस्थ स्थान पर जा सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ के द्वारा ज्योतिषीय घटनाओं का ग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है तथा ग्राफ के रूप में ही फलादेश दिया गया है।

जीवन में आने वाले समय का उतार-चढ़ाव का एस्ट्रोग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है जिसे समझना सहज और आसान होता है। यह एक खास समय में आपकी उन्नति अथवा अवनति की मात्रा को दर्शाता है। इस एस्ट्रोग्राफ पर सरसरी दृष्टिपात कर आप पता कर सकते हैं कि आनेवाला कौन सा समय आपके लिए उपयुक्त है अथवा नहीं।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2017

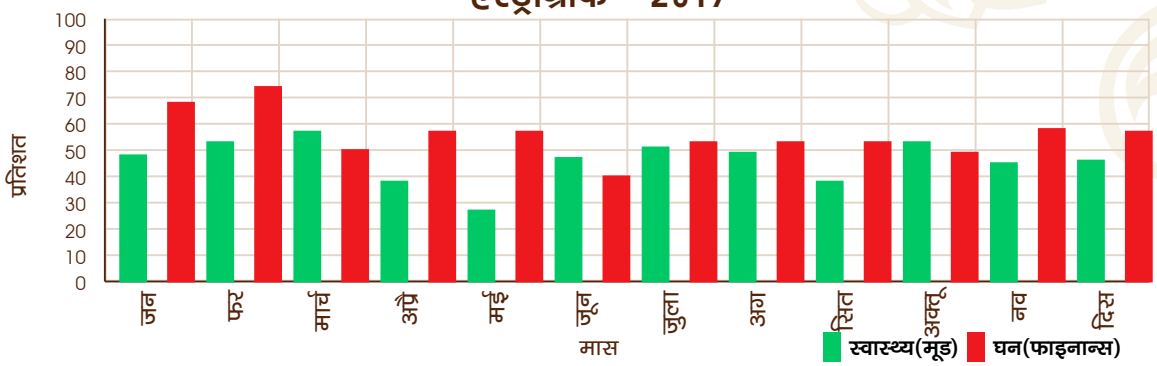

एस्ट्रोग्राफ - 2018

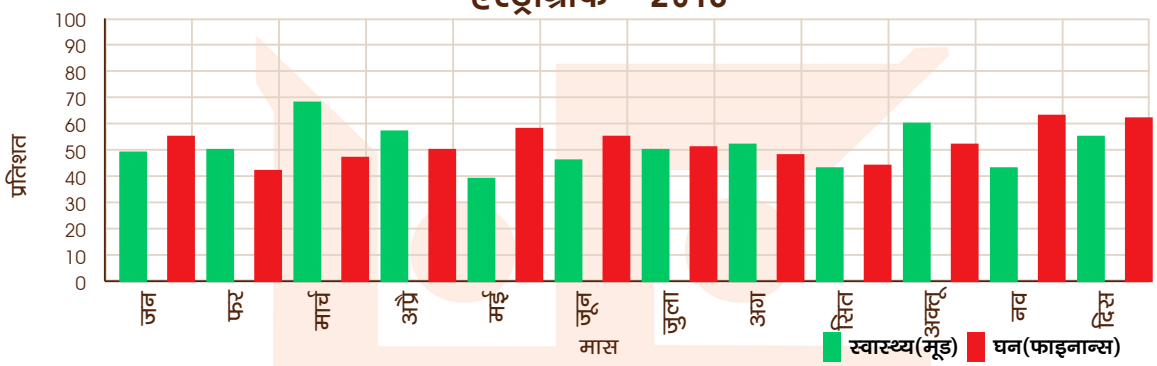

एस्ट्रोग्राफ - 2019

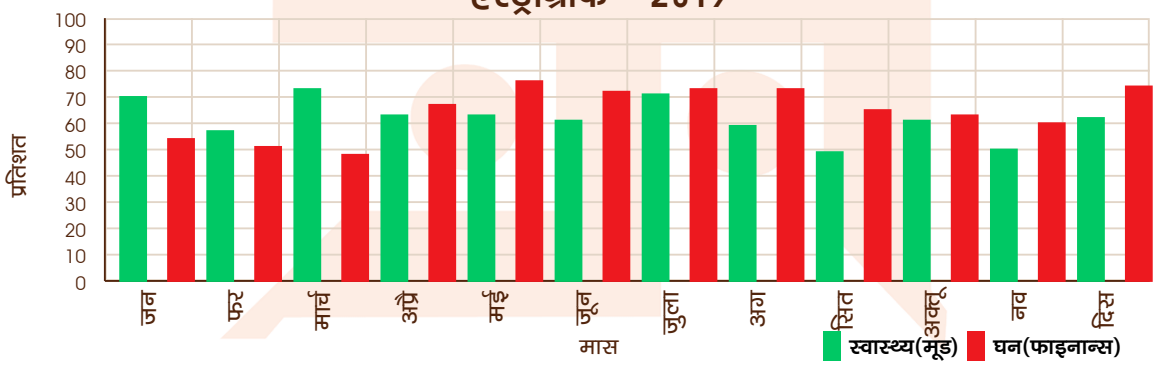

एस्ट्रोग्राफ - 2020

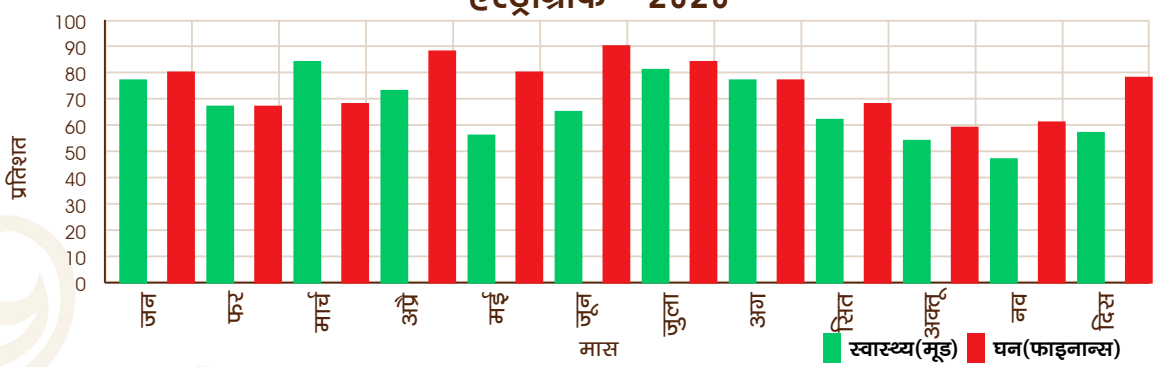

एस्ट्रोग्राफ - 2021

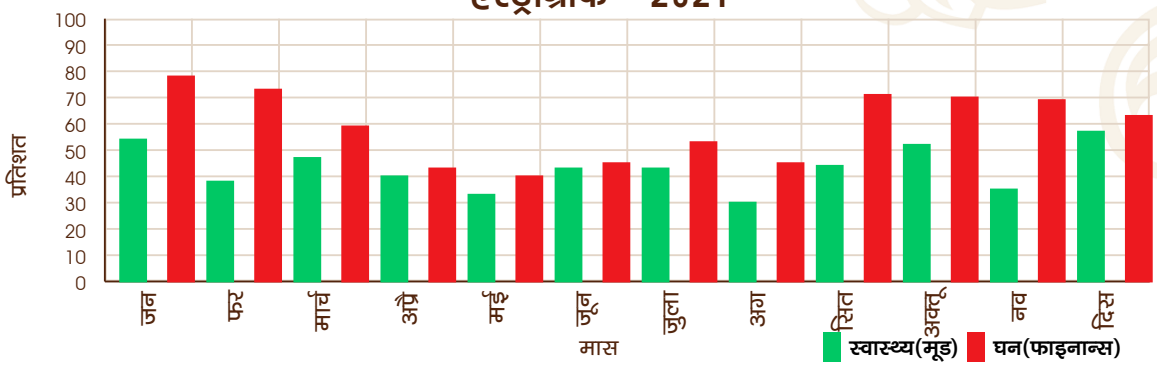

एस्ट्रोग्राफ - 2022

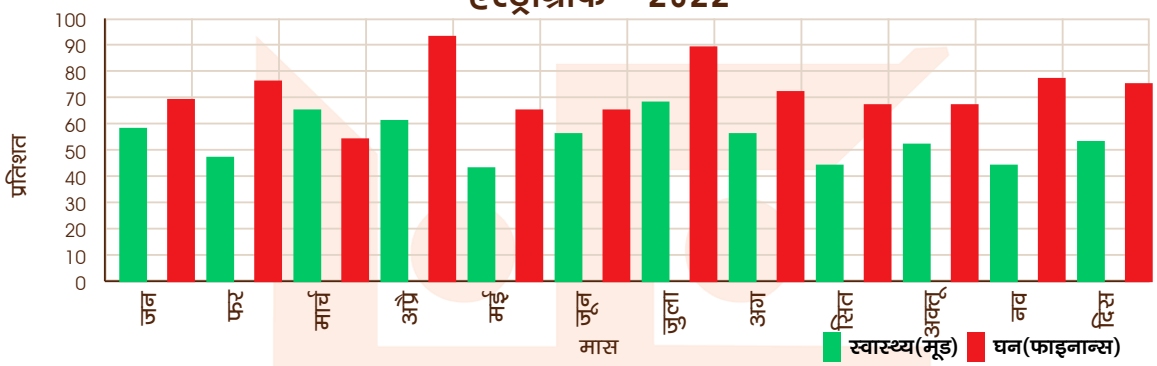

एस्ट्रोग्राफ - 2023

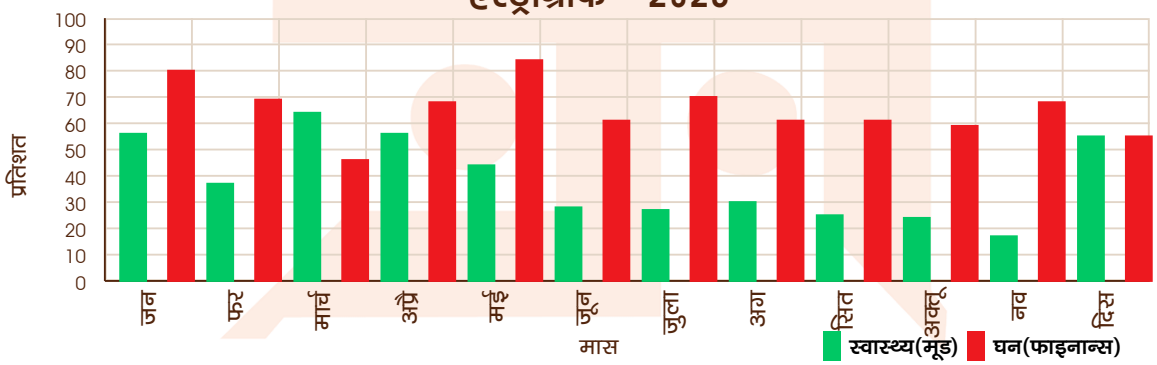

एस्ट्रोग्राफ - 2024

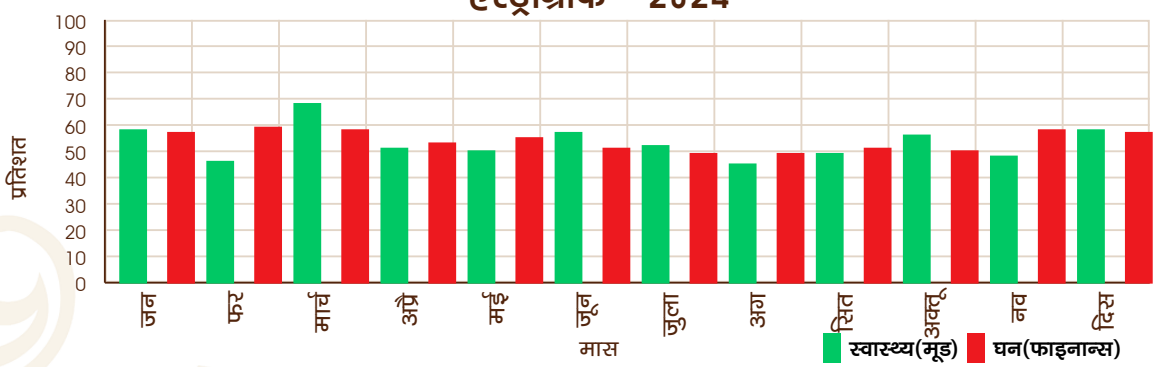

एस्ट्रोग्राफ - 2025

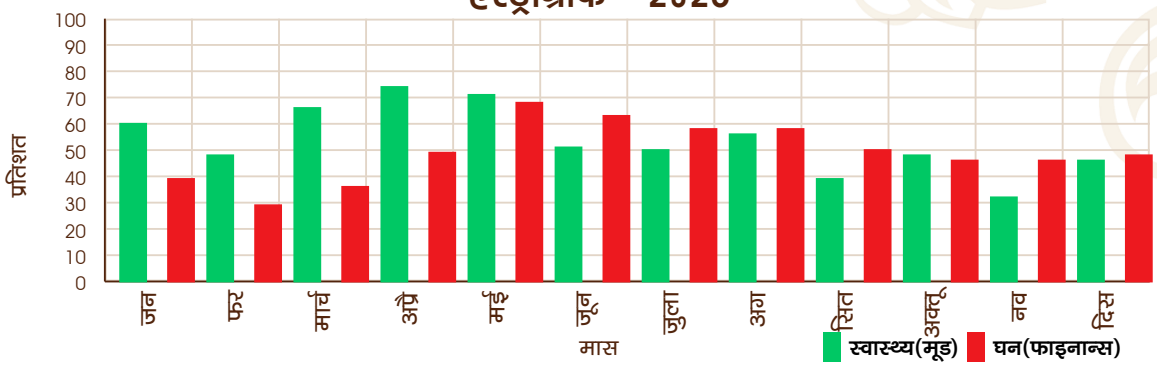

एस्ट्रोग्राफ - 2026

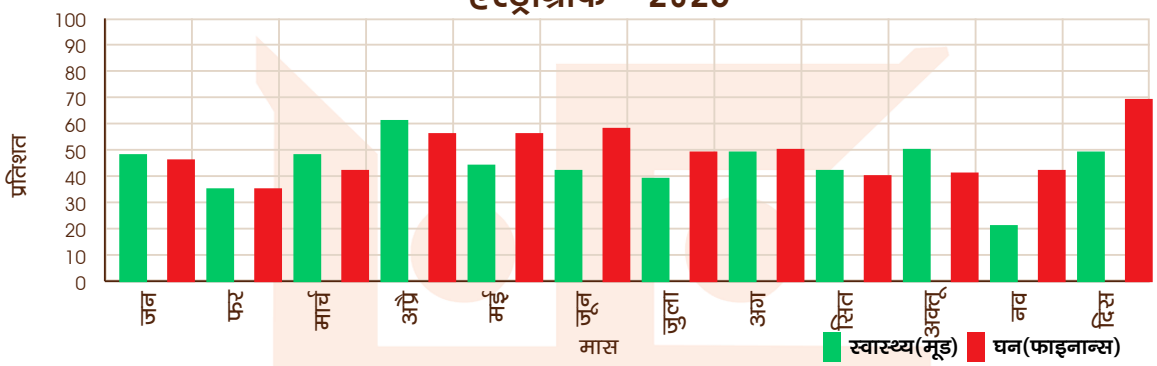

एस्ट्रोग्राफ - 2027

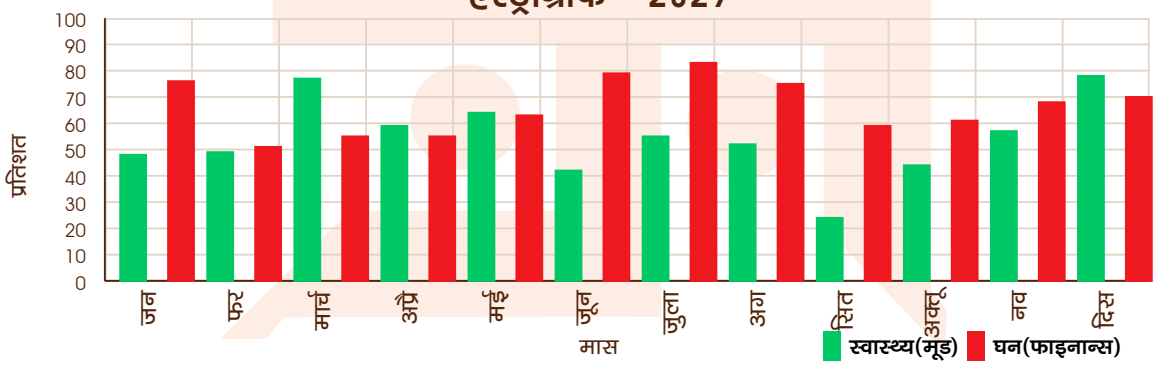

एस्ट्रोग्राफ - 2028

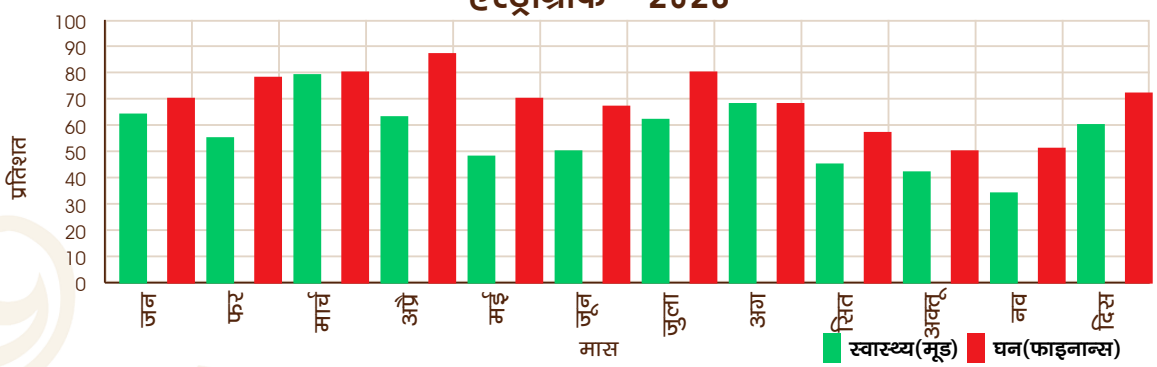

एस्ट्रोग्राफ - 2029

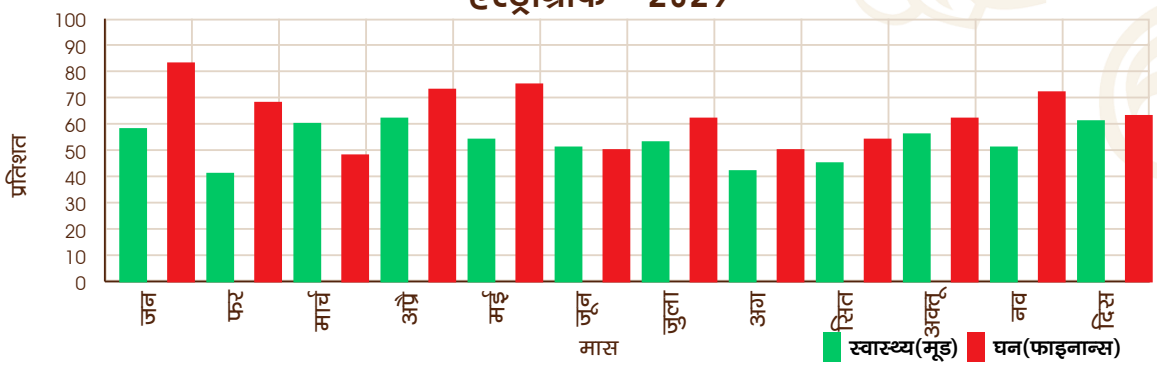

एस्ट्रोग्राफ - 2030

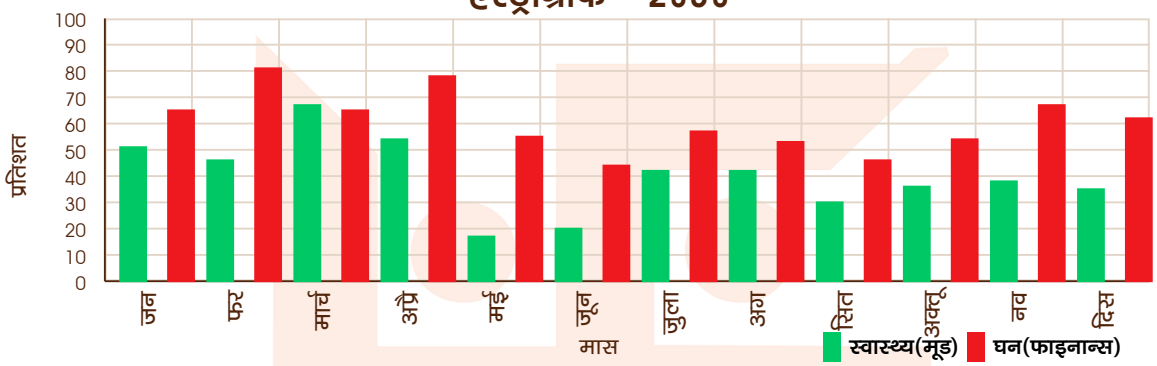

एस्ट्रोग्राफ - 2031

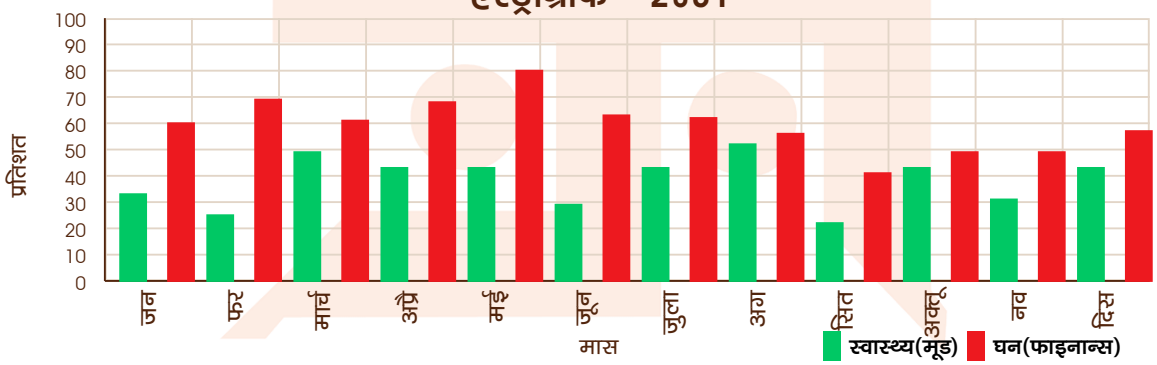

एस्ट्रोग्राफ - 2032

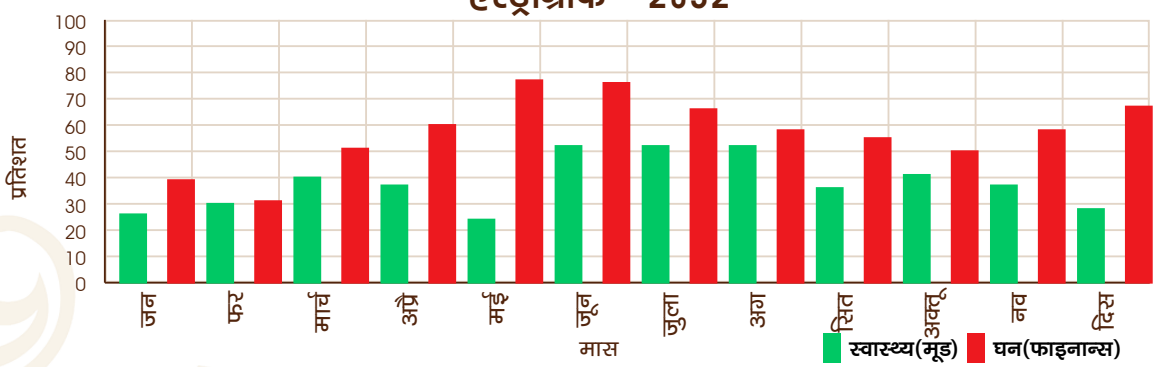

एस्ट्रोग्राफ - 2033

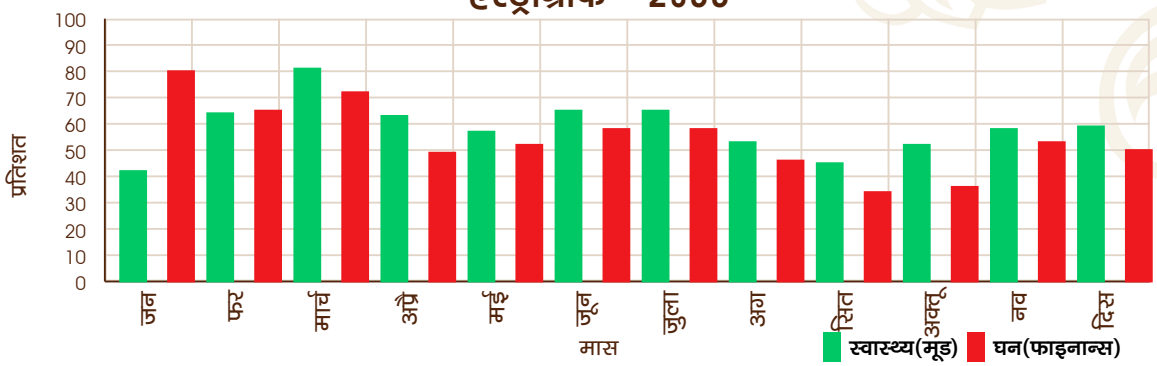

एस्ट्रोग्राफ - 2034

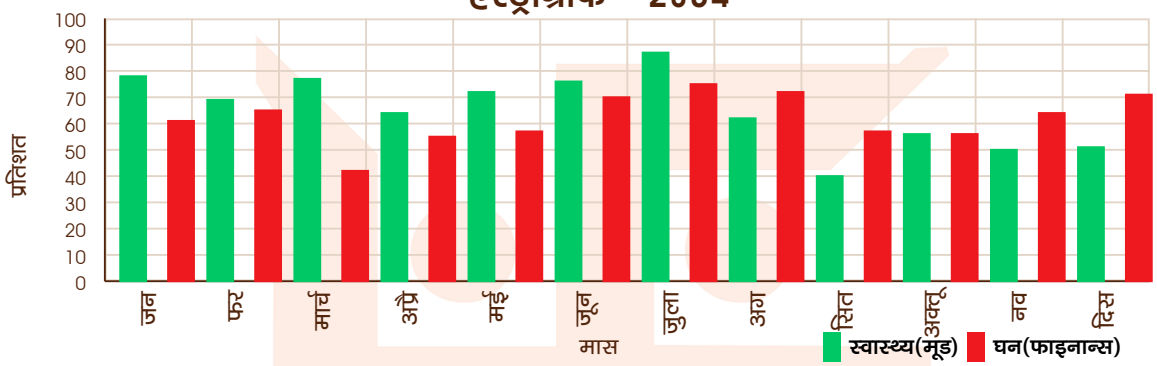

एस्ट्रोग्राफ - 2035

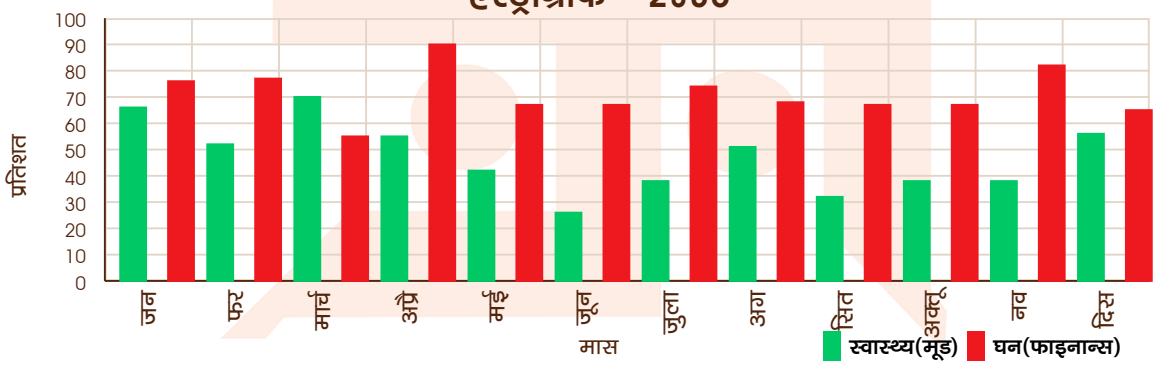

एस्ट्रोग्राफ - 2036

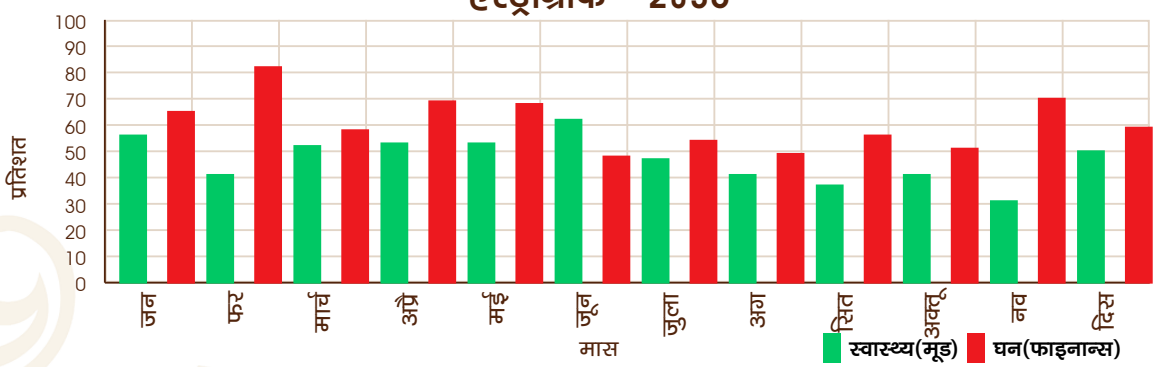

योग

जन्मकुंडली में मौजूद शुभ अथवा अशुभ योग किसी भी व्यक्ति के भाग्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

जन्मकुंडली में योग का निर्माण उस परिस्थिति में होता है जब किसी ग्रह, राशि अथवा भाव का संबंध किसी अन्य ग्रह, राशि अथवा भाव से खास रूप में स्थिति, दृष्टि अथवा युति के रूप में बनता है। इन योगों के शुभत्व अथवा अशुभत्व के कारण विभिन्न प्रकार की शुभाशुभ घटनाएं हमारे जीवन में घटित होती हैं। प्रत्येक कुंडली में योग का बनना 9 ग्रहों, 12 भावों, 12 राशियों एवं 27 नक्षत्रों के कारण अवश्यंभावी होता है। इन योगों का प्रभाव हर कुंडली में अलग-अलग उनकी उपलब्धता के अनुसार होता है। दुर्लभ योगों का जीवन में विशेष प्रभाव होता है।

योग

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,राहु — योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्यातारव्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

धेनु योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सान्नपान्नविभवोऽखिलविद्यापुष्कलोऽधिककुटुम्बविभूतिः।
हेमरत्नधनधान्यसमृद्धो राजराज इवराजति धेनौ।।
।। फलदीपिका।। अ.6/श्लोक 44, 46।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों या दूसरे भाव को शुभ ग्रह देखते हों और दूसरे भाव का स्वामी उदित होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होता हुआ सुस्थान में बैठा हो तो धेनु योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुवर्ण, धन, धान्य और रत्न से समृद्ध, राजराज के समान होंगे। यहां पर राजराज के दो अर्थ हैं। 1. राजओं का राजा, 2. कुबेर के समान भाव यह है कि आप धनवान होंगे। आप विद्या, कुटुम्ब, उत्तम भोजन आदि से युक्त होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-45।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

भवन नाश योग

गेहेशसंयुक्तनवांशनाथे नाशस्थिते स्यादपि गेहनाशः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में हो और वह ग्रह द्वादश भावस्थ हो तो भवन नष्ट हो जाता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भवन का नाश हो ऐसा प्रतीत होता है।

कपट एवं निष्कपट योग

भानुना क्षीणचन्द्रेण सहिते हृदये यदा ।
कपटी क्षणमात्रं तु निष्कापट्यं तदूर्ध्वतः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-142 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ सूर्य या क्षीण चंद्रमा से युक्त हो तो क्षण मात्र तो कपटी होता है, तदुपरान्त निष्कपटी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप क्षणमात्र तो कपटी स्वभाव के होंगे, पश्चात् निष्कपटी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,केतु,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.- 3/श्लो.-113।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-3/श्लो.-116।।

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,मंगल योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

निरोग योग

लग्नेशषष्ठाधिपती निर्व्याधिकौ जीवसमन्वितौ चेत्।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-5/श्लो.-10।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश और लग्नेश गुरु से युक्त हों तो जातक निरोग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निरोग, स्वस्थ्य और प्रसन्न रहेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शनि,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,मंगल,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 302-7 ।।

यदि जन्मकुण्डली में लग्नेश द्वादश भाव में और द्वितीयेश पाप ग्रह के साथ कहीं भी हो तथा सप्तम भाव में पाप ग्रह स्थित हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,मंगल,गुरु योग की संभावना : 192 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका दो विवाह संभाव्य है।

देश विदेश यात्रा योग

व्ययेशे पापसंयुक्ते व्यये पापसमन्विते ।
पापग्रहेण संदृष्टे देशाद्देशान्तरं गतः ।।
।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-246

यदि जन्मकुंडली में व्ययेश पाप ग्रह से युक्त हो और व्यय भाव में पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि व्यय भाव पर हो तो जातक देश विदेश में जाने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप देश विदेश में भ्रमण करने वाले होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

उभयचारिक योग

''व्ययधनयुतखेटै दिनेशादुभयचारिकयोगः।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्म काल सूर्य से द्वादश और द्वितीय भाव में ग्रह स्थित हो तो "उभयचारिक" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,राहु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "उभयचारिक" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप सहनशील, स्थिर बुद्धिवाले, समृद्धिशाली, बलशाली, एकहरा शरीरवाले, मध्यमकद के सीधी दृष्टिवाले, धन-धान्य एवं लक्ष्मी से युक्त होंगे।